Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल, रायपुर के पाठ्यक्रमानुसार)

'संस्कृत–सुषमा'

सामान्य संस्कृतस्य

द्वादश – कक्षायै

(कक्षा–12, संस्कृत सामान्य)

2018–19

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर

मूल्य रू. /–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संस्कृत–सामान्य पाठ्यपुस्तक निर्माण – समिति

1. श्री जी. एस. मिश्र – से. नि. प्राचार्य
   संयोजक, स्टेट बैंक के पीछे, केशकाल
2. श्री राजमूर्ति पाण्डेय – से. नि. व्याख्याता
   दूधाधारी मठ के पास प्रो. कालोनी, रायपुर
3. श्री (डॉ.) उमाशंकर तिवारी – प्राचार्य
   शा. उ. मा. विद्यालय नेवरा, रायपुर
4. श्रीमती दीप्ति देवीकर – प्राचार्य
   शा. क. उ. मा. विद्यालय शान्ति नगर रायपुर
5. श्रीमती (डॉ.) कल्पना द्विवेदी – प्राचार्य
   शा. कन्या उ. मा. विद्यालय दुर्ग
6. श्री ईश्वर प्रसाद तिवारी – प्राचार्य
   सरस्वती शिशु मंदिर कंगोली, जगदलपुर
7. श्री (डॉ.) बाल कृष्ण तिवारी – व्याख्याता
   नगर निगम उ. मा. वि. टिकरापारा, रायपुर

आवरण पृष्ठ

रेखराज चौरागड़े

फोटो ग्राफ

हेमन्त जोशी, भिलाई

सौजन्य

संस्कृति विभाग, रायपुर

प्रकाशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् छत्तीसगढ़, रायपुर

मुद्रक

छत्तीसगढ़ पाठ्यपुस्तक निगम, रायपुर

मुद्रणालय

....

मुद्रित पुस्तकों की संख्या – ....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्राक्कथन

छत्तीसगढ़ शासन की शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत संस्कृत (सामान्य) की महत्ता को ध्यान में रखकर छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा नवीं कक्षा से बारहवीं तक सामान्य संस्कृत के आदर्श पाठ्यक्रम का निर्माण किया गया है। प्रतिपाद्य विषयानुसार छात्रों की अभिरुचि तथा गुणात्मक अभिवृद्धि के लिए गद्य–पद्य–नाटक–वार्तालाप, व्याकरण तथा भाषा अवबोध आदि विभिन्न ग्रंथों से संकलित करके एवं पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के सदस्यों द्वारा रचित पाठों का समावेश किया गया है। छात्र जगत के भाषायी संस्कृत ज्ञान को जीवनोपयोगी बनाने के निमित्त सरल व बोधगम्य पाठों को स्थान दिया गया है। पुस्तक लेखन का मुख्य उद्देश्य है कि छात्रों में मूल्यों का अंकुरण तथा पल्लवन किया जा सके ।

पुस्तक निर्माण में विषय विशेषज्ञों, संस्कृताध्यापकों आदि के प्रशंसनीय साहाय्य के प्रति हम कृतज्ञ हैं । इस दिशा में अनुभवी तथा विद्वान् शिक्षकों के सत्परामर्श का हार्दिक स्वागत करेंगे ।

अध्यक्ष

छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल

रायपुर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संस्कृत सामान्य

कोड क्रमांक –053

कक्षा बारहवीं

समय 3.00 घंटे **पुर्णाक 100**

क्रं.	विषय सामग्री	अंक	कालखंड
01	संधि, समास, प्रत्यय	06	20
02	शब्दरूप	03	05
03	धातुरूप	03	05
04	कारक	06	10
05	संस्कृत साहित्य का इतिहास	06	05
06	छन्द	04	05
07	अलङ्कारः	04	05
08	अपठित गद्यांश	05	10
09	पत्र लेखन	05	10
10	निबन्ध	08	15
11	पाठ्यपुस्तक	50	90
	योग	**100**	**180**
	पाठ्यपुस्तक	50	90
	व्याकरण	50	90

इकाईवार विषय सामग्री

1.	संधि –	2	20
	1 स्वरसन्धि		
	2 व्यंजन संन्धि		
	3 विसर्ग सन्धि		
	समास –	2	
	तत्पुरूष ,कर्मधारय, द्वन्द्व, बहुब्रीहि एवं अव्ययीभाव समास,		
	प्रत्यय– कृत् (कृदन्त प्रत्यय), तध्दित प्रत्यय , स्त्री प्रत्यय	2	
2.	शब्दरूप –अजन्त ,हलन्त सर्वनाम एवं संख्यावाची	3	10
	धातुरूप –भू, पठ्, अस, कृ, शक् पा (पिव्) गम्, खाद्, रम्, पच्, अस्, प्रच्छ, (पृच्छ), पत्, नश्, चुर, (परस्मैपदी) पांचों लकारों में ।		

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3.	सेव्, लभ्, वृध्, वृत्, रुच्,जन्, (आत्मनेपदी) पांचों लकारों में ।	3	
4	कारको का ज्ञान एवं उपयोग।		10
	नियमो के अनुसार।		
	हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद।	3	
	संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद।	3	
5.	संस्कृत साहित्य का इतिहास—चारों वेद एवं प्रमुख उपनिषदों, रामायण महाभारत, गीता का सामान्य परिचयात्मक ज्ञान।	6	5
6	छन्द—छन्द की परिभाषा, प्रकार—अनुष्टुप्, एवं इन्द्रवज्रा छन्द की परिभाषा एवं उदाहरण।	4	5
7	अलङ्कार—अलङ्कार की परिभाषा, अनुप्रास, उपमा, यमक, रूपक अलङ्कार की परिभाषा एवं उदाहरण।	4	5
8	अपठित गद्यांश—राष्ट्रीय, मानवीय एवं नैतिक मूल्य पर आधारित	5	10
	1 संस्कृत में प्रश्नोत्तर, एकपद में एवं एक वाक्य में		
	2 उपयुक्त शीर्षक		
	3 विशेषण – विशेष्य की अन्विति,		
	4 विलोम शब्द (रेखांकित शब्दो का)		
9	पत्र लेखन –		
	1 प्राचार्य को प्रार्थना पत्र	5	10
	2 भाई, पिता या मित्र को पत्र		
	3 जन्मदिन व दीपावली आदि पर्वों पर बधाई पत्र		
10	निबंध—	8	15
	1 विद्यार्थी के दैनिक जीवन से संबंधित		
	2 संस्कृत भाषा एवं मानव मूल्य		
	3 वार्षिकोत्सव, पुस्तकालय, महापुरूष		
	4 महत्वपूर्ण संस्कृत ग्रन्थ,		
	5 पर्यावरण,		
	6 सामाजिक चेतना,		
	पाठ्यपुस्तक—(परिवर्तित नवीन)	50	90
	1 पाठ्यपुस्तक—गद्यांश, पद्यांश एवं प्रश्नोत्तर		
	2 रिक्त स्थानों की पूर्ति		
	3 सूक्तियां, 4. नीतिश्लोक		
	5 उचित संबंध स्थापन		
	योग	**100**	**180**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अनुक्रमणिका

पाठ्यपुस्तक

			पृष्ठ
प्रथमः पाठः	–	वन्दना	1–2
		संकलित, श्री ईश्वर प्रसाद तिवारी	
द्वितीयः पाठः	–	युगाचार्यः विवेकानंदः	3–5
		संकलित, श्री राजमूर्ति पाण्डेयः	
तृतीयः पाठः	–	किं किमुपादेयम्	6–8
		संकलित, डॉ. कल्पना द्विवेदी	
चतुर्थः पाठः	–	भारतस्य महिमा डॉ. रमाकान्त शुक्ला	9–12
		संकलित, डॉ. बाल कृष्ण तिवारी	
पञ्चमः पाठः	–	अस्माकं राज्यम्	13–15
		रचयिता, डॉं. कल्पना द्विवेदी	
षष्ठः पाठः	–	कण्वोपदेशः अभिज्ञान शाकुन्तलम्	16–18
		संकलित, डॉ. कल्पना द्विवेदी	
सप्तमः पाठः	–	रघूणामन्वयः	19–22
		रघुवंशः, संकलित, श्री राजमूर्ति पाण्डेय	
अष्टमः पाठः	–	वैदिक धर्मः	23–25
		संस्कृतश्रीः, संकलित, श्री राजमूर्ति पाण्डेय	
नवमः पाठः	–	सुपात्रायदानम्	26–28
		विश्वभाषा, संकलित, डॉ. उमाशंकर तिवारी	
दशमः पाठः	–	तिरूक्कुरलसूक्तिसौरभम्	29–34
		तिरूवल्लुवरः, संकलित, श्री ईश्वर प्रसाद तिवारी	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एकादशः पाठः	–	कालोऽहम्	35–41
		संकलित श्री ईश्वर प्रसाद तिवारी	
द्वादशः पाठः	–	आज्ञागुरूणांह्यविचारणीया	42–50
		पञ्चतंत्र, श्री ईश्वर प्रसाद तिवारी	
त्रयोदशः पाठः	–	प्राचीनं जलविज्ञान्	51–54
		संकलित, श्री राजमूर्ति पाण्डेय	
चतुर्दशः पाठः	–	सरस्वती श्रुतिमहती महीयताम्	55–59
		सारस्वतदर्शनम्, संकलित, डॉ. बालकृष्ण तिवारी	
पञ्चदशः पाठः	–	दण्डिनः पद–लालित्यम्	60–61
		लेखकः, श्री राजमूर्ति पाण्डेय	
षोडशः पाठः	–	विदुरनीतिः	62–64
		विदुरनीतिः, संकलित, श्रीमती दीप्ति देवीकर	
सप्तदशः पाठः	–	साधुवृतिं समाचरेत्	65–70
		संकलित, श्री ईश्वर प्रसाद तिवारी	
अष्रादश पाठः	–	संस्कृतसाहित्येऽवदानंतेरापंथस्य	71–75
		लेखकः, श्री गिरिजाशंकर मिश्र	
एकोनविंशतिः पाठः	–	सुभाषितानि	76–79
		मञ्जुलमञ्जूषा संकलित, डॉ. उमाशंकर तिवारी	

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

व्याकरणम्

				संकलन कर्ता	पृष्ठ
1.	प्रथमोऽध्यायः	–	संधि।	श्री राजमूर्ति पाण्डेय	80–84
2.	द्वितीयोऽध्यायः	–	समासः।	–,,–	85–87
3.	तृतीयोऽध्यायः	–	प्रत्ययानि।	–,,–	88–99
4.	चतुर्थोऽध्यायः	–	शब्दरूपाणि।	–,,–	100–115
5.	पंचमोऽध्यायः	–	धातुरूपाणि।	–,,–	116–132
6.	षष्ठोऽध्यायः	–	कारकप्रकरणम्।	–,,–	133–139
7.	सप्तमोऽयायः	–	अपठिताः।	–,,–	140–141
8.	अष्टोऽध्यायः	–	पत्रलेखनम्।	–,,–	142–143
9.	नवमोऽध्यायः	–	निबन्धाः।	–,,–	144–149
10.	दशमोऽध्यायः	–	छन्दालङ्काराः।	डॉ. कल्पना द्विवेदी	150–155
11.	एकादशोऽध्यायः	–	संस्कृतसाहित्यस्येतिहासः।	–,,–	156–164

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रथमः पाठः

वन्दना

मधुमन्मे निष्क्रमणं मधुमन्मे परायणम्।
वाचा वदामि मधुमद भू यास मधुसंदृशः।।1।। (अथर्ववेद 1/34/3)

अर्थ– हे प्रभों। मेरा जाना मधुरता से युक्त हो। मेरा आना भी मधुरता से युक्त हो। मैं मधुर वाणी बोलूँ और मैं मधुर दर्शनवाला बन जाऊँ।

स्वस्ति मात्र उत पित्रे नो अस्तु
स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरूषेभ्यः।
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु
ज्योगेव दृशेम सूर्यम्।। 2।। (अथर्ववेद 1/31/4)

अर्थ –हे प्रभो। हमारे माता–पिता का कल्याण हो। हमारी गौओं का, सम्पूर्ण संसार का और सभी मनुष्यों का कल्याण हों। समस्त विश्व सुदृढ़ एवं शुभ ज्ञान से युक्त हो तथा हम चिरन्तन काल तक सूर्य के दर्शन करते रहें।

अग्ने व्रतपते व्रतं चरिष्यामि
तच्छकेयं तन्मे राध्यताम्।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

। ।

इदमहमनृतात् सत्यमुपैमि।। 3।। (शुक्लयजुर्वेद 1/5)

अर्थ – हे व्रतपते।(व्रत के रक्षक) अग्नि देवता। मैं सत्यव्रत का आचरण करूँगा। आपकी कृपा से मैं इस व्रत पालन में समर्थ हो सकूँ। मेरा यह व्रत सिद्व हो। मैं असत्य को त्याग कर सत्य की शरण में आ रहा हूँ।

। ।

वात आ वातु भेषजं

। ।

शंभु मयो भु नो ह्रदे।

।

प्र ण आयूँषि तारिषत्।। 4।। (ऋग्वेद 10/186/1)

अर्थ – हे वायुदेव। आप हमारे लिये औषधियुक्त (रोगनिवारक) तथा हमारे ह्रदय के लिए सुखदायक वायु को प्रवाहित कीजिए और हमारी आयु को बढ़ाइये।

। ।

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु

। ।

शं नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु।

। ।

शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु

। ।

शं नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः।। 5।। (ऋग्वेद 7/35/8)

अर्थ – हे प्रभो। विराट दृष्टि वाला सूर्य हमारे लिए सुख–शान्ति हेतु उदित हो। चारो–दिशायें हमारे लिए सुख–शान्तिदायिनी हों। अटल पर्वत हमारे लिए सुख–शान्तिदायक हों। नदियाँ तथा समस्त जल हम सब के लिए सुखप्रद हों।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

द्वितीयः पाठः

युगाचार्यः विवेकानन्दः

(विवेकानन्द संस्कृत गोष्ठीस्मारिकाञ्जलिः)

काशी–हिन्दुविश्वविद्यालस्य कुलपतयः जस्टिस् श्री एन. एच. भगवतीमहोदया इत्येतेषां भाषणस्य सारः।

अत्र समुपस्थिता गीर्वाण–वाणी–निपुणा विद्वांसः सज्जनाः सुनार्यश्च !

विषयः– वेदान्तधर्मप्रतिष्ठाता युगाचार्य–विवेकानन्दः।

परममान्यस्य श्रीमतो विवेकानन्दस्वामिनः चतुरधिकशततमजन्म–महोत्सवं समुपलक्ष्यकश्चन स्मारकाख्यः निबन्धः प्रकाशयितुमिष्ट इति महतः सन्तोषस्य विषयः। चिरन्तनकालादारभ्य उपनिषदादिभिः प्रतिपादितो वेदान्तधर्मः जगतीतलवर्तिनां सर्वेषां मानवानां हृदयंगमया शैल्या विवेकानन्दस्वामिना सर्वत्र प्रचारितो वेदान्तधर्मः निखिले प्रपंचे एकैकोऽपि जनसमुदाय एकैकं राष्ट्रं प्रत्येकं मतं च मनुष्येऽव्यक्ततया वर्तमानस्य सर्वशक्तिमत्तत्वस्य अभ्युपगममाधारीकुर्यात्। जीवनस्य परमार्थ–निष्ठतां परममुद्देश्यमनुसृत्य सर्वेषां मानवानां हितानि संपादनीयानि इति वेदान्तधर्मसारः। 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' 'एको देवः सर्वभूतेषु गूढ़ः' इत्यादि–वेदवाक्यानि वेदान्तधर्म–मूलभूतानि शिकागोनगरे प्रवृत्तायां सर्वमतस्य प्रतिनिधि सभायां भाषणारम्भे 'अमेरिका–निवासिनी भ्रातरो भगिन्यश्च' इति संबोधन–मात्रेणैव अध्यात्मैक्यं वेदान्तसारसर्वस्वं सूचयन् सर्वेषां सभ्यानां मनांसि श्री विवेकान्दस्वामी विद्युद्वेगेनावर्जयामासेति प्रसिद्धम्। वेदान्तधर्मस्य स्फुटावगमाय पुराणादिषु बहूनां महात्मनां चरितानि वर्णितानि परमार्थनिष्ठादूराणां शैवशाक्तादीनां मतानाम् अन्यथाभावा–यथार्थरूप–प्रसारेण कलुषीकृते वेदान्तधर्मे श्रीशंकराचार्यः प्रादुर्भूय वेदान्तधर्ममेव पुनः प्रचारयामास। ततः सहस्राधिकसंवत्सरानन्तरं समवतीर्णं विवेकानन्दस्वामी तमेव धर्मं पुनरूज्जीवयामास। यत् हिन्दूनां ब्रह्म, यो जरथुस्रमतानुवर्तिनामहुरमभदः बौद्धानां बुद्धः, यहूदीनां जिहोवा, कैस्तानां स्वर्गस्थः पिता, स एकः भवतां शक्ति ददातु। एकैकोऽपि इतरमतस्य तत्वांशं संगृह्णातु। स्वयं पृथक्त्वं रक्षन् वृद्धिनियमानुसारं वर्धताम्। पवित्रता, शुद्धिः, जितेन्द्रियता च नैकस्य मतस्य साधारणं स्वम्। एकैकस्मिन्नपि मते परमोच्चगुणभरिताः पुमांसः स्त्रियश्च संजाताः। मतानि न परस्परमुपरोधं कुर्युः, सहायकरणमनुपरोधस्य परिवर्धनमविनाशकसामरस्यं, शान्तिः, अवैमत्यं च सर्वधर्मीयध्वजेषु अंकितानि भवेयुः इति सुस्वरमुद्घोषितं विवेकानन्दस्वामिना।

धर्मस्तावन्न शब्दमात्रम् संप्रदायविशेषो वा, अपि तु तत्वसाक्षात्कारफलः मार्गविशेषः। 'आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः' इति श्रुतिरपि तत्व साक्षात्कारमेव परमोद्देश्यं वदति। कर्मयोगः, भक्तियोगः राजयोगः ज्ञानयोग इति चत्वारि यथा योगसाधनानि । न केनापि कर्म त्यक्तुं शक्यम्, अतः परमोद्देश्यानुगुणं कर्म कर्तव्यम्। अविश्रान्तं कर्म कुरू। अहंतां ममतां च त्यज। यदि कर्मफलमभिलषसि शिक्षामप्यङ्गीकुरु। यदि शिक्षाया दूरीकारमिच्छसि तर्हि फलाभिलाषं त्यज। एवं ततः परं न साधनम्। इदमेव कर्ममार्गसर्वस्वम्।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आत्मनि प्रेम सर्वस्य प्राणिनः सहजः स्वभावः, तेनैव प्रेम्णा सर्वप्राणिषु भगवद्दर्शनं भक्तियोगः। यदि सर्वत्र भगवद्दृष्टिः न शक्यते कर्तुं तर्हि यदि भवतोऽत्यन्तमिष्टं तत्र भगवन्तं पश्य। तत्र दृष्टिः यदि दृढ़ा ततोऽन्यत्रापि तां कुरुं, एवं क्रमेण सर्वत्र – भगवदृष्टिं कर्तु शक्नोषि। अशक्तैः भगवति परमं प्रेम न लभ्यते। अतः कायेन मनसा शीलेन च बलवद्भिः भाव्यम्। प्रेमैव लोके सर्वेषां संयोजकं चालकञ्च, यदन्तरेण प्रपञ्चो विशकलितो भवेत्। निरुपाधिकं परमं प्रेमैव भगवतः स्वरूपम्। भगवता पतञ्जलिना योगसूत्रेषु राजयोगः स्पष्टीकृतः। यमनियमाद्यष्टांगयुक्तोऽयं न सुलभः सुसाध्यश्च। ज्ञानयोगस्तु तत्वसाक्षात्कारः। विवेकशालिना मनसा सुनिपुणं गवेषणे चिरं क्रियमाणे सति अन्ते सर्वस्यान्तर्जीवभूत सर्वसाररूपस्य तत्त्वे पारमार्थिके ऐक्ये पर्यवसानं भवति। सर्वस्यापि मानवस्यैतत्प्राप्तौ यत्नेऽधिकारोऽस्ति। ऐक्यद्दष्टया बोधकथा विवेकानन्दस्वामिना प्रोक्ता। वेदान्तेन सर्वत्र ब्रह्मदर्शनमुपदिष्टम्। 'ब्रह्माहमस्मि' इति स्वयमनुभूय सर्वत्रापि तदेव व्यापकं तत्त्वमनुस्यूतमिति अपरोक्षानुभूतिरेव वेदान्तरहस्यम्। 'सर्वेष्वपि प्राणिषु ईश्वरबुद्धिपूर्वकं जीवसेवा कर्तव्या' इयमेव यथार्थतः ईश्वराभ्यर्चना। एवं जनताजनार्दनं पूजयित्वा सर्वत्र साम्यमैत्री–भातृभावानां प्रचारः कर्तव्य इत्यपि स्वामिनः उपदेशः। 'ईश्वर–वुद्ध्या जीवसेवा' इत्यस्मादधिकमुन्नततरं वेदान्तस्य तत्वं न विद्यते ।

काश्चित् प्रेयान्प्रेयसीगृहं जगाम, द्वारं पिहितमासीत्। आघातं चकार। द्वारमनुद्घाट्यैव प्रेयसी कस्त्वमिति पप्रच्छ। अहमित्युत्तरयामास प्रेयान्, नोद्घाटितवती द्वारम्। एवं पुनरपि प्रश्नः उत्तरं च बभूवतुः। तृतीयवारं कस्त्वमिति प्रश्ने प्रेयान् त्वमेवाहमित्युत्तरितवान्। द्वारमुद्घाटयामास प्रेयसी। एवं सर्वत्र परमप्रेम्णा अभेददृष्टिव्यवहारोऽपि शान्तिं सुखं च ददाति। एतादृश–सुखशान्ति–लाभार्थ 'तत्व–मसि' इति महावाक्यस्य व्यावहारिकक्षेत्रे स्पष्टीकरणार्थं स्वामिना इदमेवोदाहरणं दत्तमासीत्।

बुभुक्षूणां प्राणिनां शरीरपोषणायान्नदानं कार्यम्। विवेकवृद्धये विद्यादानं कर्तव्यम्। आध्यात्मिकतत्त्वज्ञानसम्पत्तये ज्ञानमपि देयम्। सर्वत्र भगवद्दृप्टया सर्वेषां हितावहं कार्यमाचरेत्। अन्ते च तत्वं साक्षात्कृत्य कृतार्थो भवेत्। एष सर्वहितकारी पन्था युगाचार्यविवेकानन्दस्वामिना प्रदर्शित इति।

1. शब्दार्थः

शैल्या = शैली से, प्रपञ्चे = संसार में, परमार्थ निष्ठतां = परमार्थ भाव, आवुर्जयामास = संपूर्णरूप से झंझोड़ दिया, कलुषीकृते = दूषित किए जाने पर, जरथुस्त्र = धर्मप्रचारक । अहुरम् = देवता । ,संचारणम् = प्रसार, परमोच्चगुणभरिताः = श्रेष्ठगुणयुक्त, उपरोधम् – बाधक,अहंतां – अहङ्कार, अन्तरेण = दूरी से, विशकलितः = बंटा हुआ, गवेषणे = खोजने पर, उन्नततर = श्रेष्ठ, हितावहं = कल्याणकारी, पिहितं = बंद ।

2. सन्धयः

महोत्सवम् = महा + उत्सवम् (गुण संधि), एकैकोऽपि = एक + एकः + अपि (वृद्धि, विसर्ग, पूर्वरूप)। तावन्न = तावत् + न (परसर्वण), श्रुतिरपि = श्रुतिः + अपि (विसर्ग संधि), भगवद्दर्शनम् = भगवत् + दर्शनम् (व्यञ्जन), फलाभिलाषं = फल + अभिलाषा (दीर्घ संधि), प्रेमैव = प्रेम + एवं (वृद्धि संधि), चालकञ्च = चालकम् + च (परसवर्ण व्यञ्जन), कश्चित् = कः + चित् (विसर्ग) ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. समासाः

महोत्सवः = महान् चासौ उत्सवः (कर्मधारय), भाषणारम्भे = भाषणस्यारम्भे (षष्ठी तत्पुरूष), सर्वधर्मीयध्वजेषु = सर्वेधर्मीयाः तेषां ध्वजेषु (कर्मधारय), फलस्य अभिलाषः = फलाभिलाषं (तत्पुरूष), सुखशान्तिलाभार्थं = सुखं च शान्तिश्च तयोः लाभाय अर्थम् (द्वन्द, तत्पुरूष)।

4. प्रश्नानि

1. **प्रश्नानामुत्तराणि लिख्यताम् –**

(क) स्वामी विवेकानन्दः वेदान्तधर्मं कथं प्रचारितवान् केन रूपेण च ?
(ख) वेदान्तधर्मस्य सारः कः ?
(ग) शिकागोनगरे किमुक्त्वा स्वामी /सम्बोधयत् ?
(घ) स्वामिनः संबोधनं श्रुत्वा सभ्यजनाः कथमनुभूतवन्तः ?
(ङ) वेदान्तधर्मः कथं कलुषीभूतः ?
(च) कलुषीभूतस्य वेदान्त धर्मस्य पुनरुज्जीवनाय मध्ययुगे कः प्रायतत ?
(छ) विवेकानन्दः तदुद्धाराय किमुद्घोषितवान् ?
(ज) श्रुतिः धर्मविषये किं वदति ?
(झ) कानि कानि च योगसाधनानि ?
(ञ) कर्ममार्गसर्वस्वं किम् ?
(ट) भक्तियोगः कः ?
(ठ) राजयोगः कः ?
(ड) ज्ञानयोग कः ?
(ढ) वेदान्त रहस्यं किमु ?
(ण) ईश्वराम्यर्थना कथं कर्तव्या ?
(त) 'तत्त्वमसि' इत्यस्य वाक्यस्य स्पष्टीकर्तुं स्वामिना किमुदाहरणं दत्तम् ?
(थ) प्राणिनामुद्धाराय किम् किम् कर्तव्यम् ?

5. **शब्दरूपाणां मूलशब्दः विभक्ति–वचनानिलिख्यताम –**
(क) एतेषां, (ख) सर्वेषां, (ग) भ्रातरः, (घ) भवतां, (ङ) मतानि, (च) प्रेम्णा ।
6. **धातुरूपाणां मूलधातुः पुरुषः वचनानि लिखत ?**
(क) कुर्यात्, (ख) वदन्ति, (ग) वर्धताम्, (घ) भवेयुः, (ङ) त्यज, (च) आसीत्।
7. **प्रकृति–प्रत्ययौ पृथक्कुरुत ?**
(क) प्रकाशयितुम्, (ख) वर्धमानः, (ग) प्रादुर्भूय, (घ) द्रष्टव्यः, (ङ) देयम्, (च) दत्तम्।
8. **विवेकानन्दस्य वेदान्तधर्मविषये का व्याख्या पञ्च वाक्येषु लिखत ?**
9. **अव्ययानि चित्वा लिख्यताम् ?**
10. **मानवकल्याणाय अस्माभिः किं कार्यम्? संक्षेपतः लिखत।**

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तृतीयः पाठः

किम्, किम् उपादेयम्

अरुणः उषे ! पश्य इदं पुस्तकं भारतस्य मानचित्रं च।

उषा कुतः प्राप्तम् इदम् ?

अरुणः मम मातुलः मह्यं जन्म दिवसस्य उपहाररुपेण प्रायच्छत्।

उषा अहो! इयम् तु प्रश्नोत्तररत्नमालिका।

अरुणः जानासि कस्तावत् अस्य रचियता ?

उषा न जाने।

अरुणः पश्य एतत् भारतस्य मानचित्रे अङि्कतम् एकस्य महापुरूषस्य चित्रम्।.

उषा भ्रातः ! कोऽयं सन्यासी ?

अरुणः उषेः! अयम् खलु प्रातः स्मरणीयः आदिगुरुः शङ्कराचार्यः। अस्य एवं कृतिः इयम्।

उषा मानचित्रे कानि एतानि स्थानानि दर्शितानि ?

अरुणः एतानि तु मठस्थानानि, शङ्कराचार्येण स्थापितानि धर्मप्रचाराय। अयं महायोगी अष्टवर्षीयः एषः संन्यासं स्वीकृत्य भारते वेदान्तस्य प्रचारम् अकरोत्।

उषा किं आचार्येण ग्रन्थाः अपि रचिताः ?

अरुणः आम् ! तेन विविधाः ग्रन्था रचिताः। तेषु एव विद्यते इयं रचना प्रश्नोत्तरमालिका यत्र प्रश्नोत्तरमाध्यमेन इदं ज्ञापितं यदस्माभिः जीवने किं किं ग्राह्यम् किं किञ्च त्याज्यम्।

उषा अहो ! तत् तु अवश्यं पठनीयम्।

अरुणः तस्याः रचनायाः एव पठामः इदानीम् कानिचित् पद्यानि।

1. भगवान्किमुपादेयम् ? गुरूवचनम्, हेयमपि च किम् ? अकार्यम्।
   को गुरुः ? अधिगततत्वः शिष्यहितायोद्यतः सततम्।।1।।
2. कः पश्यतरः ? धर्मः कः शुचिरिह ? यस्य मानसं शुद्धम्।
   कः पण्डितः ? विवेकी, किं विषम् ? अवधीरणा गुरुषु।।2।।
3. किं जीवितम् ? अनवद्यम् किं जाड्यम् ? पाठितोऽप्यनभ्यासः।
   को जागर्ति ? विवेकी, का निद्रा ? मूढ़ता जन्तोः।।3।।
4. नलिनीदलगतजलवत्तरलं किम् ? यौवनं धनं चायुः।
   कथय पुनः के शशिनः किरणसमाः ? सज्जना एव ।।4।।
5. कोऽनर्थफलः ? मानः, का सुखदा ? साधुजनमैत्री।
   सर्वव्यसनविनाशे को दक्षः ? सर्वथा त्यागी ।।5।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. किं मरणम् ? मूर्खत्वम्, किं चानर्थं ? यदवसरे दत्तम्।
आमरणात्किं शल्यम् ? प्रच्छन्नं यत्कृतं पापम् ।।6।।

7. कस्य वशे प्राणिगणः ? सत्यप्रियभाषिणो विनीतस्य।
क्व स्थातव्यम् ? न्याय्ये पथि दृष्टादृष्टलाभाढ्ये।।7।।

8. कोऽन्धः ? यो अकार्यरतः, को बधिरः ? यो हितानि न श्रृणोति।
को मूकः? यः काले प्रियाणि वक्तुं न जानाति ।।8।।

अन्वयाः

1. भगवन् ! उपादेयम् किम् ? गुरुवचनम्। अपिच हेयम् किम् ? अकार्यम् गुरुः कः ? सततम् शिष्य–हिताय उद्यतः अधिगततत्वः।

अर्थ – हे भगवन् ! ग्रहण करने योग्य क्या है ? गुरु के वचन। छोड़ने योग्य क्या है ? वह जो नहीं करना चाहिये। गुरु कौन है ? जिसने तत्व को प्राप्त कर लिया है और जो सदा शिष्य के कल्याण के लिए तैयार रहता है।

2. पथ्यतरः कः ? धर्मः। इह शुचिः कः ? यस्य मानसम् शुद्धम्।
पण्डितः कः ? विवेकी। विषम् किम् ? गुरुषु अवधीरणा।

शब्दार्थ – पथ्यतरः = अधिकहितकारक। इह = इस लोक में। शुचि = पवित्र। अवधीरणा= तिरस्कार।

अर्थ – अधिकहितकारक क्या है ? धर्म। इस लोक में पवित्र कौन है ? जिसका मन शुद्ध है। पण्डित कौन है ? अच्छे तथा बुरे की पहचान करने वाला। विष क्या है ? गुरुजनों के प्रति तिरस्कार की भावना।

3. जीवितम् किम् ? अनवद्यम्। जाड्यम् किम् ? पठितः अपि अनभ्यासः।
कः जागर्ति ? विवेकी। निद्रा का ? जन्तोः मूढ़ता।

शब्दार्थ – अनवद्यम् – जो निन्दनीय नहीं है। जाड्यम् – जड़ता। जन्तोः – प्राणी की।

अर्थ – जीवन क्या है ? निन्दारहित होना। जड़ता क्या है? पढ़ा हुआ होने पर भी अभ्यास का न होना। कौन जागता है ? अच्छे बुरे का ज्ञान रखने वाला। निद्रा क्या है ? प्राणी की मूढ़ता (विचारशून्यता)

4. नलिनी–दलगत जलवत्–तरलम् किम् ? यौवनम्, धनम्, आयुः च पुनः कथय, शशिनः किरण–समा के ? सज्जनाः एव।

शब्दार्थ – नलिनी = कमलिनी। दल = पत्तों पर। गत = पड़े हुए।

अर्थ – कमलिनी के पत्तों पर पड़े जल के समान चंचल क्या है ? जवानी धन और आयु। फिर बताओ। चन्द्रमा की किरणें के समान निर्मल कौन होते है ? सज्जन ही।

5. अनर्थफलः कः ? मानः। सुखदा का ? साधु–जन–मैत्री। सर्वव्यसन विनाशे कः दक्षः ? सर्वथा त्यागी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शब्दार्थ – अनर्थफलः = अनर्थकारी फल देने वाला। दक्षः = चतुर। मानः = घमंड।

अर्थ– अनर्थकारी फल देनेवाला कौन है ? घमंड। सुख देने वाली कौन है ? सज्जनों के साथ मित्रता।सब विपत्तियों की समाप्ति में कुशल कौन है ? सब प्रकार से त्याग करने वाला।

6. मरणम् किम् ? मूर्खत्वम्। अनर्घम् च किम् ? यत् अवसरे दत्तम्। आमरणात् शल्यम् किम् ? यत् कृतम् प्रच्छन्नम् पापम्।

शब्दार्थ – अनर्घम् = पाप रहित। प्रच्छन्नम् = छिपकर। मूर्खत्वम् = मूर्खता।

अर्थ – मृत्यु क्या है ? मूर्खता। तथा पापरहित क्या है ? जो उचित अवसीर पर दिया जावे। मरने तक कांटे के समान कष्टकारक क्या है ? जो पाप छिप कर किया जावे।

7. प्राणिगणः कस्य् वशे ? सत्य प्रियभाषिणः विनीतस्य। क्व स्थातव्यम् ? दृष्ट–अदृष्ट–लाभ–आढ्ये न्याय्ये पथि।

शब्दार्थ – प्राणिगणः = प्राणियों का समूह। स्थातव्यम् = ठहरना चाहिये। दृष्टादृष्टलाभाढ्ये = दृष्ट तथा अदृष्ट भाग्य के लाभों से भरपूर।

अर्थ – प्राणियों का समूह किसके वश में है ? सत्य तथा प्रिय बोलने वाले नम्र व्यक्ति के। कहाँ ठहरना उचित है ? दृष्ट तथा अदृष्ट भाग्य के लाभों से भरपूर न्याय के मार्ग में।

8. अन्धः कः ? यः अकार्यरतः। बधिरः कः ? यः हितानि न श्रृणोति। मूकः कः ? यः काले प्रियाणि न जानाति।

शब्दार्थ – अकार्यरतः = न करने योग्य काम में संलग्न। काले = उचित समय पर

अर्थ – अन्धा कौन है ? जो न करने योग्य कार्य में लगा है। बहरा कौन है ? जो हित की बातों का नहीं सुनता। गूँगा कौन है ? जो समय पर प्रिय लगने वाली बातों को कहना नहीं जानता।

अभ्यासः

1. **संस्कृतेन उत्तरं दीयताम्** –

क. अनर्थफलम् को ऽस्ति ?

ख. सुखदा का अस्ति ?

ग. मरणं किम् ?

घ. जीवितम् किम् ?

ङ. कोऽन्धः ?

च. कः पथ्यतरः ?

छ. हेयं किम् ?

ज उपादेयं किम् अस्ति ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चतुर्थ : पाठः

भारतस्य– महिमा

भारतवर्ष का विशाल स्वरूप, भौगोलिक और सांस्कृतिक महत्व, वेद,पुराण, साहित्य में वर्णित श्लोकों का चयन किया गया है। शेष अंश 'डॉ. रमाकान्त शुक्ल के गीतिकाव्य' भाति मे भारतम्' से संकलित है। गेय पदावली' के माध्यम से भारत के सभी प्रकार की उन्नति की कामना वर्णित है।

भारतस्य–महिमा

गायन्ति देवाः किल गीतकानि।
धन्यास्तु ये भारतभूमिभागे।।1।।

उत्तरम् यत् समुद्रस्य
हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्।
वर्षंतद् भारतं नाम,
भारती यत्र सन्ततिः ।।2।।

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा,
हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधी वगाह्य,
स्थितः पृथिव्याम् इव मानदण्डः ।।3।।

रत्नाकराधौतपदां, हिमालयकिरीटिनीम्
ब्रह्म राजर्षिरत्नाढ्यां वन्दे भारत–मातरम्
विन्ध्यसह्यादि नीलाद्रिमालान्वितं शुभ्रहेमाद्रिहासप्रभापूरितम्
अर्बुदारावलीश्रेणीसम्पूजितम् भूतले भाति मे अनारतं भारतम्।।4।।

जान्हवीचंद्रभागाजलैः पावितम् भानुजानर्मदावीचिभिर्लालितम्।।
तुङ्गभद्राविपाशादिभिर्भावितम् भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।
वेशभूषाशनोपासना पद्धतिः क्रीडनामोदसंस्कारवृत्यादिषु।
यद्विभिन्नं सदप्यस्यभिन्नं सतां भूतले भातितन्मामकं भारतम्।।5।।

शोषितोनात्र कश्चिद्भवेत् केनचित् व्याधिना पीडितो नो भवेत् कश्चन।
नात्रकोऽपि ब्रजेद् दीनतां हीनतां मोदतां राजतां पावनं भारतम्।।
भारतं वर्तते मे परं सम्बलं भारतं नित्यमेव स्मरामि प्रियम्।
भारतेनास्ति मेजीवनं जीवनं भारतायार्पितं मेऽखिलं चेष्टितम्।।6।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

वेदभासितं सत्कलालालितं
रम्यसङ्गीत–साहित्य–सौहित्य भूः
भारती वल्लकी झङ्कृतैर्झङ्कृतं
भूतले भाति मे अनारतं भारतम्।।8।।

आर्यभट्टं वियन्मण्डले स्थापयत्
पोखरण भूमिगर्भेऽणुशक्तिं किरत्।
शांति–कार्येष्वणुं प्रेरयत्सन्ततं
भूतले भाति मेऽअनारतं भारतम्।।9।।

रोहिणीं प्रक्षिपद् भास्करं साधयद्
आत्मनीतैरमोघैर्मितैः साधनैः
युद्धपोताँश्च सिन्धूरसि स्थापयद्
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।10।।

यद्बरौनी–भिलाई– बुकारोस्वनै
स्वोन्नतिस्यन्दनोत्थं शुभं घर्घरम्।
दिक्षु विस्तारयद् वीक्ष्यते सर्वदा
भूतलेभाति तन्मामकं भारतम्।।11।।

व्यास वाल्मीकिरत्नाकरैरूज्ज्वलं
स्वादुकादम्बरी–पान–लुब्ध सदा।
कालिदासेन भासेन संद्योतितं
भूतले भाति मेऽअनारत भारतम्।।12।।

यत्र मन्दाकिनी पाप संहारिणी
यत्र गोदावरी चारु संचारिणी
देववाणी च यत्रास्ति मोदाकुला
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।।13।।

कठिन शब्दार्थाः

विन्ध्यसह्याद्रिनीलाद्रिमालान्वित = विन्ध्य, सह्याद्रि, नील पर्वत आदि पर्वत श्रृंखलाओं से युक्त। शुभ हेमाद्रिहास प्रभा पूरितम् = हिमालय के धवल हास की कान्ति से व्याप्त। अर्बुदारावली = आबू और अरावली की श्रेणियों से पूजित। भूतले = भूतल पृथ्वी पर, भाति = सुशोभित होता है। अनारतं = निरन्तर, भारतम् = भारत। वेदभासितं = वेदों से आलोकित। सत्कलालालितम् = उत्तम कलाओं से अलंकृत। रम्यसड्.गीत साहित्य सौहित्य भू. = मधुर संगीत, साहित्य तथा संतुष्टि के भाव को जन्म देने वाली भूमि। भारती वल्लकी झंकृतैः = सरस्वती की वीणा के तारों से। झड्.कृतम् = झनझनाता हुआ। व्याधिना = बीमारी। मोदताम् = प्रसन्नता। संबल = आश्रय।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अभ्यासाः

प्रश्न 1. संस्कृतभाषायाम् एक पदेन उत्तरं देयम्–

1. मम भारतं कुत्र भाति?
2. भारतं कस्य हास प्रभया पूरितम् अस्ति?
3. धरण्यां किं मोदताम्?
4. मम अखिलं चेष्टितम् कस्मै अर्पितं भवेत्?
5. अत्र कोऽपि कान् न व्रजेत्।
6. भारतं जगत् कीदृशैः चरित्रैः पावयति?

प्रश्न 2. संस्कृत भाषायांम् एक–वाक्येन उत्तर देयम्–

1. अस्मिन् पाठे केषां पर्वतानाम् उल्लेखो अस्ति?
2. भारतस्य पञ्चनदीनाम् नामानि लिखत्?
3. भारत देशः संसार कैः पावयति?
4. भारतः कैः झङ्कृतं वर्तते?
5. मम भारतं कैः अन्वितं वर्तते?

प्रश्न. 3 अघोलिखिताः श्लोक पंक्तयः पूर्यन्ताम्–

क. विश्वमेकं .... समालोकयत्

ख. वेदमा .... सत्कला ....

ग. अर्बुदा ....श्रेणि

घ. जाह्नवी .... जलैः

ङ. .... भाति मे .... भारतम्

प्रश्न. (क) स्तम्भे लिखितानां पर्वतानां ख. स्तम्भे उचितैः सह सम्मेलन क्रियताम्

क	ख
1. हिमाद्रिः	अ. महाराष्ट्रे
2. सह्याद्रिः	ब. राजस्थाने
3. विंध्याचलः	स. काश्मीरे
4. अरावलिः	उ. गुजराते
5. नीलाद्रिः	इ. मध्यप्रदेशे

(ख) क. स्तम्भ लिखितानां नदीनां ख. स्तम्भैः दत्तैः उचितैः उद्गमस्थलैः मेलनं क्रियताम्–

क	ख
1. जाह्नवी	कनार्टक राज्यम्
2. भानुजा	जम्बू काश्मीरम्
3. विपाशा	गंगोत्री
4. चन्द्रभागा	यमुनोत्री

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

5. तुङ्गभद्रा हिमाचलः
6. नर्मदा अमरकण्टकम्

प्रश्न 5. प्रकृति प्रत्यय विभागः क्रियताम्–

1. पीडितः
2. भासितम्
3. पूजितम्
4. लालितम्
5. अर्पितम्

प्रश्न 6. अधोलिखितानां पदानां परिचयः दीयताम्

पद	शब्द	विभक्ति	वचनम्
1. व्याधिना	....	....	....
2. भारताय	....	....	....
3. जलैः	....	....	....
4. दीनताम्	....	....	....
5. कुटुम्बम्	....	....	....

प्रश्न 7. धातुलकार पुरूष वचन निर्देशः दीयताम्

पदम्	धातुः	लकारः	पुरूषः	वचनम्
1. स्मरामि				
2. अस्ति				
3. मोदताम्				
4. राजताम्				

प्रश्न 8. समुचितैः अव्ययपदैः रिक्त स्थानानि पूर्यन्ताम्

अनारतम्, नित्यम्, एव, अत्र, सदा

1. अहं .... प्रातः व्यायामं करोमि।
2. भूतलेभाति मे .... भारतम्।
3. सत्यम् .... विजयते।
4. न .... कोऽपि दीनः मानवः स्यात्
5 वीराः .... परिचरन्ति।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पंचमः पाठः

अस्माकं राज्यम्

राजीव लोचन–भूमि प्रधाना
षड् राज्येषु सुशोभिताया
तरङ्गिणी य़त्र महानद्याख्या
स्वर्णिम–भूमि–छत्तीसगढ सुसंस्कृता।।

आम्! अस्मिन् मनोरमे छत्तीसगढ. राज्ये सर्वेषां हार्दिकं स्वागतम् अस्ति। षड्विंशतितम राज्यरूपेण स्थितः अस्य प्रदेशस्य स्थापना नवम्बर मासस्य प्रथमे दिवसे 2000 तमे रव्रीस्ताब्देअभवत्। पूर्वम् इदम् मध्यप्रदेशस्य अङ्गरूपेण आसीत्। षड्त्रिंशदि्गढ़ानां संख्यायाः आधारेण 'छत्तीसगढ़म्' नामकरणम् अभवत्। अस्य उत्तरे उत्तर–प्रदेशः, पूर्वे झारखण्ड.ः, उड.ीसा च प्रदेशौ, दक्षिणे आन्ध्र प्रदेशः, पश्चिमे मध्यप्रदेशः, महाराष्ट्रश्च सन्ति। रायपुर नगरी अस्य राजधानी अस्ति। अत्र अष्टादशम् मण्डलानि सन्ति। एते बिलासपुरम्, रायगढ.म्, जांजगीरम्, कोरबा, जशपुरम्ः, सरगुजाः, कोरिया, रायपुरम्, महासमुंदम्, धमतरीः, दुगम्, राजनांदगांवः, कवर्धा, बस्तरः, दन्तेवाड़ा, कांकेरः, बीजापुरम्, नारायणपुरम् च।

प्रमाणमस्ति यद् श्रीरामस्य मातृ–गृहम् इदं दक्षिणं कोशलं राज्यम् अस्ति। छत्तीसगढ़स्य दण्डकारण्य–क्षेत्रे श्रीरामः सीतालक्ष्मणभ्यां सह वनवास–समये आगच्छत्। छत्तीसगढ.राज्ये शिवरीनारायण–नगरम् शबर्याः जन्मस्थानम् अस्ति। अस्मिन् प्रदेशे दशाधिकाः नद्यः प्रवहन्ति। विपुला च अत्र वन सम्पदा। वनौषधीनां तु अत्र भण्डारः एवास्ति। मनोरमाः फलसमृद्ध–विटपाः एवं मनोहारी च सुगन्धिः। पुष्पाणां समृद्धिः अत्र दर्शनीया। हरीतिमा परिपूर्णम् राज्यमिदम् शुद्ध पर्यावरणेन युक्तमस्ति। प्रभूत–शालिः उत्पन्नमभवति अतएव शालिपात्रं अपि कथ्यते। न केवलं अस्य प्रकृतिः मनोहरा, विविधा च प्रत्युत् अस्याः संस्कृतिरपि अति समृद्धा प्राचीना च। आदिवासी बाहुल्यं राज्यमिदं खनिजेन वन सम्पद्भिश्च सम्पन्नम् अस्ति। मृत्तिकायाः क्रीडनकं, आकर्षक–पात्रनिर्माणं, लाक्षाभिः नानावस्तूनि, विशिष्टकाष्ठकार्यम् चर्मस्यकार्यम् विभिन्न धातूनां पात्रस्य निर्माणमादयः राज्यस्य प्रमुखाः हस्तकलाः सन्ति।

यद्यपि प्रशासनिक दृष्ट्या छत्तीसगढ. राज्यम् नवोदितम् किन्तु ऐतिहासिक सांस्कृतिक दृष्ट्या च अस्य दूधाधारी मठस्य शिल्परचना, लघुप्रयाग रूपेण राजिम नगरस्य राजीवलोचनमन्दिरं, शिमला रूपेण मैनपाटे शिल्पकलायाः अनुपमं प्रतिबिम्बंम् अस्ति। भोरमदेव तु छत्तीसगढ़स्य खजुराहो इति कथ्यते। बिलासपुर नगरस्य समीपे रत्नदेवेन निर्मितं रतनपुरनगरं सुप्रसिद्धं देवास्थानमस्ति। एशियायाः

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एकमात्र–कला संगीत विश्व विद्यालयः खैरागढे. स्थितः। जगदलपुर मण्डले कुटुमसर कैलाशगुहा, सरगुजामण्डले लक्ष्मण–गुहा, दरबार गुहा बिल्दूर (पातालद्वार) इत्यादीनि दर्शनीय – स्थानानि सन्ति। चित्रकोटस्य निर्झरस्य अतुलनीय–सौन्दर्यं–राशिः वैदेशिकानां चित्तमाकर्षयति।
जनजातीनां संस्कृतिः छत्तीसगढ.राज्यस्य वैशिष्ट्यमस्ति। गोंड., कोरबा, मडिंया, गड.ावा आदयः मुख्य जनाजातयः प्रदेशस्य जनसंख्यायाः 30.8 प्रतिशताः सन्ति।छत्तीसगढ.ी हल्बी, गोंड.ी, माडि.या, गदबी, दोरली, भतरी आदि विभाषाः अस्य शोभांवर्धयन्ति।

छत्तीसगढ़–राज्यं विविधवर्णानांलोकसंस्कृतेः अनुपमः समुच्चयः अस्ति। अत्याकर्षक नृत्यानि, संगीतम् गानम् नाट्यादयश्च अस्याः मनोभिरामं श्रृंगारं कुर्वन्ति। राष्ट्रिय–अंतर्राष्ट्रिय स्तरे च प्रदेशस्य लोकगीतानि स्वअस्मितां स्थापयन्ति। पण्डवानीविधा पारड्.गता तीजनबाई पद्मश्री पुरष्कारं प्राप्यविध ाायाः अंतर्राष्ट्रिय–स्तरे ख्यातिं प्रसारयति।

पण्डवानी, ददरिया, बांसगीतम् देवारगीतम्, च बिहावगीतम्, पठौनीगीतम्, सोहरगीतम् च विभिन्न संस्काराणाम् अवसरे जनाः सोल्लासंगायन्ति। सुवानृत्यम्, करमानृत्यम्, डण्डा अथवा रहसनृत्यः, राउत नृत्यम्ः, सरहुल नृत्यम्, घसिया बाजा नृत्यम्, पंथी नृत्यम्, विभिन्नावसरे भवन्ति। नवरात्रिः, अक्तिः (अक्षयतृतीयां) रथयात्रा–हरेली–नागपंचमी–रक्षाबंधन–कमरछठ–आठे (जन्माष्टमी)–पोला–तीजा–पितर–देवारी–मातर–देवोत्थानी–छेरछेरा आदयः प्रमुखाः उत्सवाः भवन्ति। बस्तर दशहरा उत्सवः अन्तर्राष्ट्रीयस्तरे प्रसिद्धिं गतः।

मानः, सम्मानः, पुरस्कारः, च संस्कृतिगौरवंभवन्ति। राज्येऽपि शहीदवीरनारायणसिंह पुरस्कारः, गुरूघासीदास पुरस्कारः, मिनीमाता सम्मानः, अहिंसा–पुरस्कारः, ठाकुर प्यारेलाल सिंह स्मृति वार्षिक पुरष्कारः खेल पुरस्कारेण च जनाः पुरस्कृताः भवन्ति। एवं विभिन्न कलायाः सौन्दर्यम्, नानाविधानि, नृत्यानि, गीतानि, उत्सवाः, पुरस्काराश्च अतिरमणीयं उद्यानमिव। इदं छत्तीसगढ़–राज्यम् अस्माकं गौरवमस्ति।

अस्मिन् राज्ये अवस्थिताः सर्वे धन्याः सन्ति

प्रश्नोत्तरः

1. अस्माकं राज्यम् कैः षड्राज्यैः आवृतमस्ति ?
2. अस्माकं राज्ये कति मण्डलाः सन्ति ?
3. रामस्य मातुः गृहम् कुत्राऽस्ति ?
4. रत्नदेवेन निर्मितं रतनपुर नगरं कथं प्रसिद्धम् अस्ति ?
5. अस्य प्रमुखाः जनजातयः काः सन्ति ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. प्रमुखानि नृत्यानि कानि ?
7. एशियायाः एकमात्र–क्ला एवं संगीत–विश्वविद्यालयः कुत्रास्ति ?
8. तीजनबाई कस्याः विधायाः पुरस्कार प्राप्ता ?
9. अस्य राज्य काः काः हस्तकलाः प्रसिद्धाः ?
10. एतत् राज्यं शालिपात्रं कथं कथ्यते ?

प्र. 2 शब्द रूपाणां परिचयः दीयताम्

	शब्दरूप	मूलशब्दः	विभक्तिः	वचनम्
1.	अस्मिन्	–	–	–
2.	अस्माकम्	–	–	–
3.	राज्ये	–	–	–
4.	सर्वेषां	–	–	–
5.	इदम्	–	–	–
6.	मासस्य	–	–	–
7.	रूपेण	–	–	–
8.	शबर्याः	–	–	–
9.	वनौषधीनां	–	–	–
10.	गीताः	–	–	–

प्रश्न 3. धातु रूपाणां मूल धातुः लिख्यताम् ?

1. अस्ति	4. प्रवहन्ति
2. अभवत्	5. कथ्यते
3. आगच्छत्	6. वर्धयन्ति

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

षष्टः पाठः

कण्वोपदेशः

भूमिका – 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' कालिदास का ही नही समूचे संस्कृत नाटक – साहित्य का शिरोमणि नाटक हैं। इस सम्बन्ध में संस्कृत – प्रेमियों में एक श्लोक परम प्रसिद्ध हैं जिसके अनुसार – काव्य के भेदों में नाटक सर्वाधिक मनोरम होता है। नाटकों में कालिदास का 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' नाटक सर्वाधिक मनोरम हैं, शाकुन्तलम् में भी उसका चतुर्थ अङ्क सर्वाधिक मनोरम हैं, जहाँ शकुन्तला पति के घर प्रस्थान करती है।

काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला।
तत्रापि चतुर्थोऽङ्को, तत्र श्लोक चतुष्टयम्।

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि अभिज्ञानशाकुन्तलम् का चतुर्थ अंक सर्वश्रेष्ठ है। यहाँ शकुन्तला के प्रस्थान का वर्णन है। इसी वर्णन के संदर्भ में कण्व द्वारा शकुन्तला को दिया गया उपदेश आता है।

(प्रविश्य उपायनहस्तौ ऋषिकुमारकौ)

उभौ – इदमलङ्करणम्। अलंक्रियतामत्र भवती।
(सर्वा विलोक्य विस्मिताः)

गौतमी – वत्स नारद! कुतः एतत् ?

प्रथमः – तात्काश्यपप्रभावात्।

गौतमी – किं मानसी सिद्धिः ?

द्वितीयः – न खलु श्रूयताम्, तत्र भवता वयमाज्ञप्ताः शकुन्तलाहेतोः वनस्पतिभ्यः कुसुमान्यहरत इति। तत इदानीम् –

क्षौमं केनचिदिन्दुपाण्डु तरुणामाङ्गल्यमाविष्कृतं
निष्ठयूतश्चरणोपभोगसुलभो लाक्षारसः केनचित्।
अन्येभ्यो वनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्थितैः –
र्दत्तान्याभरणानि तत्किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्दिभिः।।

गौतमी – जाते ! अनया अभ्युपपत्या सूचिता ते
भर्तुर्गेहे अनुभवितव्या राजलक्ष्मीरिति।
(शकुन्तला व्रीडां रुपयति)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रथम: – एह्येहि, अभिषेकोत्तीर्णाय काश्यपाय वनस्पतिसेवां निवेदयाव:।

द्वितीय: – तथा (इति निष्क्रान्तौ)!

सख्यौ – अये अनुपयुक्तभूषणोऽयं जन:। चित्रकर्मपरिचयेन अङ्गेषु त आभरण–विनियोगं कुर्व:।

शकुन्तला –जाने वां नैपुणम्। (उभे नाट्येनालङ्कुरुत:)

(तत: प्रविशति स्नानोत्तीर्ण: काश्यप:)

यास्यत्यद्य शकुन्तलेति हृदयं संस्पृष्टमुत्कण्ठया
कण्ठ:स्तम्भितवाष्पवृत्तिकलुषश्चिन्ताजडं दर्शनम्।
वैक्लव्यं मम तावदीदृशमिदं स्नेहादरण्यौकस:
पीड्यन्ते गृहिण: कथं न तनयाविश्लेषदु:खैर्नवै: ।।2।।

(इति परिक्रामति)

सख्यौ – हला शकुन्तले! अवसितमण्डनासि। परिधत्स्व साम्प्रतं क्षौमयुगलम्।

(शकुन्तला उत्थाय परिधत्ते)

गौतमी – जाते! एष त आनन्दपरिवाहिणा चक्षुषा परिष्वजमान इव गुरुरुपस्थित:। आचारं तावत् प्रतिपद्यस्व।

शकुन्तला –(सव्रीडम्) तात! वन्दे।

काश्यप: – वत्से!

ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतें त्वमपि सम्राजं सेव पुरुमवाप्नुहि।।

गौतमी – भगवन्। वर: खल्वेष: नाशी:।

काश्यप: – (ऋक्छन्दसाऽऽशास्ते)

अमी वेदि परित: क्लृप्तधिष्ण्या:
समिद्वन्त: प्रान्तसंस्तीर्णदर्भा:।
अपघ्नन्तो दुरितहव्यगन्धै–
वैंतानास्त्वां वन्हय: पावयन्तु।।

शाङ्.र्गरव: – इत इतो भवति (सर्वे परिक्रामन्ति)

काश्यप: – भो भो: संनिहितास्तपोवनतरव:।

पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलं, युष्मास्वपीतेषु या
नादत्ते प्रियमण्डनाऽपि भवतां, स्नेहेन या पल्लवम्।
आद्ये व: कुसुमप्रसूतिसमये, यस्या भवत्युत्सव:
सेयं याति शकुन्तला पतिगृहं, सर्वैरनुज्ञायताम्।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शाड्.गरवः – भगवन्! ओदकान्तं स्निग्धो जनः अनुगन्तव्य इति श्रूयते। तदिदं सरस्तीरम्! अत्र सन्दिश्य प्रतिगन्तुम् अर्हसि।

काश्यपः – शाड्.गरव! इति त्वया मद्वचनात् स राजा शकुन्तलां पुरस्कृत्य वक्तव्यः।

शार्ंगखः – आज्ञापयतु भवान्।

काश्यपः – अस्मान्साधु विचिन्त्य संयमधनानुच्चैः कुलं चात्मनः
सवयस्याः कथमप्यबान्धवकृतां स्नेहप्रवृत्तिं च ताम्।
सामान्यप्रतिपत्तिपूर्वकमियं दारेषु दृश्या त्वया
भाग्यायत्तगतः परं न खलु तद्वाच्यं वधूबन्धुभिः।।

शाड्.गरवः – गृहीतः सन्देशः।

संस्कृतेन उत्तरं दीयताम् –

1. अयं पाठः कस्मात् नाटकात् संग्रहीतः ?
2. तरुभिः कानि कानि वस्तूनि शकुन्तलायै दत्तानि ?
3. शकुन्तलायाः पतिगृहगमनं विचार्य महर्षि काश्यपस्य दशा कीदृशी जाता ?
4. महर्षि – काश्यपेन शकुन्तलायै का आशीः दत्ता ?
5. शकुन्तलायाः उत्सवः कदा भवति ?
6. स्निग्धः जनः कं देशं यावत् अनुगन्तव्यः ?
7. प्रियमण्डनापि शकुन्तला पल्लवं किं न आदत्ते ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सप्तमः पाठः

रघूणामन्वयः

महाकवि कालिदास ने रघुवंश महाकाव्य की रचना की थी जिसमें राजा रघु के वंश का विस्तृत वर्णन है। अन्वय का अर्थ कुल अथवा वंश है। प्रस्तुत पाठ में महाकाव्य के प्रथम सर्ग से चुने श्लोकों में रघु के वंश का वर्णन काव्यात्मक पद्धति से किया गया है। शब्द और अर्थ के समान मिले हुए शिव–शक्ति का नमन करते हुए, महाकवि कालिदास रघुवंश की महत्ता तथा स्वयं की अल्पज्ञता में महान अन्तर मानते हुए, स्वयं को रघुवंश वर्णन करने योग्य नहीं मानते और छोटी नौका से सागर पार करने की इच्छा करने वाले नाविक की गति जैसी अपनी गति समझते है। फिर भी पूर्व विद्वानों द्वारा सूचित मार्ग पर चलना कवि को सरल दिखता है। रघु का वंश शुद्ध, पराक्रमी, समुद्रतट पर्यन्त शासन करने वाला, विधिवत् हवन, दान, दण्ड आदि की व्यवस्था करने वाला, त्याग के लिये संचय, सत्य के लिये मितभाषी , कीर्ति के लिए जीतने की इच्छा करने वाला, वंशवृद्धि के लिए गृहस्थ धर्म, चारों आश्रमों का विधिवत् पालन करने वाला है, ऐसे वंश की कीर्ति से प्रेरित होकर कालिदास रघु के वंश का वर्णन करते हैं। सूर्य के द्वारा जल शोषण एवं रघु के द्वारा करग्रहण प्रजापालन के लिये ही होता था। राजा दिलीप यज्ञ द्वारा स्वर्ग का पोषण तथा इन्द्र वृष्टि द्वारा मर्त्यलोक का पोषण करते थे। इस प्रकार प्रस्तुत पद्यों में रघुकुल के उदात्त गुणों का वर्णन किया गया है।

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।1।।

क्व ? सूर्यप्रभवो वंशः क्व? चाल्पविषया मतिः।
तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्।।2।।

अथवा कृतवाग्द्वारे वंशेऽस्मिन् पूर्वसूरिभिः।
मणौ वज्रसमुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः।।3।।

सोऽहमाजन्मशुद्धानामाफलोदयकर्मणाम्।
आसमुद्रक्षितीशानामानाकरथवर्त्मनाम्।।4।।

यथाविधिहुताग्नीनां यथाकामार्चितार्थिनाम्।
यथापराधदण्डानां यथाकालप्रबोधिनाम्।।5।।

त्यागाय सम्भृतार्थानां सत्याय मितभाषिणाम्।
यशसे विजिगीषूणां प्रजायै गृहमेधिनाम्।।6।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शैशवेऽभ्यस्तविद्यानां यौवने विषयैषिणाम्।
वार्धके मुनिवृत्तीनां योगेनान्ते तनुत्यजाम्।।7।।

रघूणामन्वयं वक्ष्ये तनुवाग्विभवोऽपि सन्।
तद्गुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः ।।8।।

प्रजानामेव भूत्यर्थं स ताभ्यो बलिमग्रहीत्।
सहस्रगुणमुत्स्रष्टुमादत्ते हि रसं रविः।।9।।

दुदोह गां स यज्ञाय सस्याय मघवा दिवम्।
सम्पद्विनिमयेनोभौ दधतुर्भुवनद्वयम्।।10।।

तं सन्तः श्रोतुमर्हन्ति सदसद्व्यक्तिहेतवः।
हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ विशुद्धि श्यामिकाऽपिवा ।।11।।

शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

वागर्थौ	:	वाक् च अर्थश्च वागर्थौ, वागर्थौ इव वागर्थाविव, शब्द और अर्थ के समान।
सम्पृक्तौ	:	मिले हुए।
पितरौ	:	माता च पिता च पितरौ (एकशेषः) माता–पिता।
सूर्यप्रभवः	:	प्रभवति अस्मात् इति प्रभवः सूर्यः प्रभवः यस्य सः सूर्यप्रभवः सूर्य कुल में उत्पन्न।
तितीर्षुः	:	तरितुम् इच्छति इति तितीर्षति, तितीर्षति इति (तितीर्ष+उ) तितीर्षुः, तैरने की इच्छा करने वाला।
उडुपेन	:	नौका से।
पूर्वसूरिभिः	:	पूर्वे च ते सूरयः पूर्वसूरयः तैः पूर्वसूरिभिः, पूर्व विद्वानों के द्वारा।
मणौ	:	मणि में ।
वज्रसमुत्कीर्णे	:	वज्रेण समुत्कीर्णः वज्रसमुत्कीर्णः तस्मिन् वज्रसमुत्कीर्णे, वज्र द्वारा छेद किए गये।
आजन्मशुद्धानाम्	:	जन्मनः आ इति आजन्म, आजन्म शुद्धाः इति आजन्मशुद्धाः, तेषाम् आजन्मशुद्धानाम्, जन्म से पवित्र।
आनाकरथवर्त्मनाम्	:	न विद्यते अकं यत्र स, नाकः, नाकम् अभिव्याप्य इति आनाकम्, आनाकं रथवर्त्म येषां ते आनाकरथवर्त्मानः तेषाम् आनाकरथवर्त्मनाम्, स्वर्ग पर्यन्त रथ ले जाने वाले।
मितभाषिणाम्	:	कम बोलने वाले।
विजिगीषूणाम्	:	विजेतुम् इच्छन्ति इति विजिगीषवः तेषां विजिगीषूणाम्, जीतने की इच्छा करने वाले।
शैशवे	:	शिशोः भावः शैशवम् तस्मिन् शैशवे, बाल्यकाल में।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

यौवने	:	युवावस्था में।
वार्धके	:	वृद्धावस्था में
तनुत्यजाम्	:	तनुं त्यजन्ति इति तनुत्यजः तेषां तनुत्यजाम्, शरीर त्याग करने वाले।
अन्वयं	:	वंश को।
वाग्विभवः	:	वाचां विभवः वाग्विभवः तनुः वाग्विभवः यस्य सः तनुवाग्विभवः, वाणीरूपी धन।
प्रचोदितः	:	प्रेरित किया।
प्रजानाम्	:	प्रजाओं का।
भूत्यथम्	:	भूत्यै इदं भूत्यर्थम्, कल्याण के लिए।
बलिम्	:	कर (टैक्स)
उत्स्रष्टुम्	:	देने के लिये।
दुदोह	:	दुह–प्रपूरणे लिट्, प्रथम पुरूष, एकवचन, दोहन किया।
भुवनद्वयम्	:	भुवनयो द्वयम्, दो लोक (पृथ्वी और स्वर्ग)।
हेम्नः	:	षष्ठी एकवचन, सोने का।
अग्नौ	:	सप्तमी एकवचन, अग्नि में।

संधिविच्छेदः

वागर्थाविव = वागर्थौ + इव, उडुपेनास्मि = उडुपेन+अस्मि, वंशेऽस्मिन् = वंशे + अस्मिन्, सोऽहम् = सः + अहम्, यथापराध = यथा + अपराध, तदगुणैः = तत् + गुणैः, सदसत् = सत् + असत्

अभ्यासः

1. संस्कृतेन उत्तरं देयम्
   (क) अयं पाठः कस्माद् ग्रन्थात् उद्धृतः?
   (ख) रघुवंशमहाकाव्यस्य रचयिता कः अस्ति?
   (ग) कालिदासः कीदृशं सागरं (तितीर्षुः अस्ति) ? तरीतुम् इच्छति?
   (घ) वज्रसमुत्कीर्णे मणौ सूत्रस्य इव गतिः कस्य अस्ति?
   (ङ) राज्ञः दिलीपस्य रथः कुत्र गच्छति स्म?
   (च) राजा दिलीपः शैशवे कस्य अभ्यासं करोति?
   (छ) दिलीपः गां किमर्थं दुदोह?
   (ज) हेम्नः श्यामिका कुत्र दृश्यते?
   (झ) अन्ते योगेन किं त्यजन्ति?

2. रिक्तस्थानपूर्तिः क्रियताम्

   (क) जगतः पितरौ ––––––––– परमैश्वरौ।
   (ख) मणौ –––––––––– मे गतिः।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ग) शैशवे ———————— तनुत्यजाम्।
(घ) त्यागाय ——————— मितभाषिणाम्।
(ङ) दुदोह गां ——————— भुवनद्वयम्।

3. सप्रसंग व्याख्यायेताम्
(क) तितीर्षुर्दुस्तरं मोहादुडुपेनास्मि सागरम्।
(ख) तदगुणैः कर्णमागत्य चापलाय प्रचोदितः।

4. द्वितीय –दशमश्लोकयोः स्वमातृभाषया अनुवादः क्रियताम्।

5. अधोलिखितपदानाम् उचितम् अर्थं कोष्ठकात् चित्वा लिखत।
(सन्तान के लिए), (पृथिवी को), (माता–पिता को), (कहूँगा), (सुनने के लिए), (समुद्र को), (विधिपूर्वक), (इन्द्र), (पूर्व विद्वानों के द्वारा)।
(क) पितरौ – ————————
(ख) सागरम् – ———————
(ग) पूर्वसूरिभिः – ———————
(घ) यथाविधि – ———————
(ङ) प्रजायै – ——————————
(च) वक्ष्ये – ———————
(छ) गाम् – ——————————
(ज) मघवा – ——————
(झ) श्रोतुम् – ————————

6. विपरीतार्थमेलनं क्रियताम्

मोहात्	नरकम्
में	असत्याय
सत्याय	ते
दिवम्	अज्ञानात्

7. सन्धिविच्छेदः क्रियताम्

यथा	–	चाल्पविषया	= च + अल्पविषया
		उडुपेनास्मि	=
		इवास्ति	=
		श्यामिकाऽपि	=
		अत्रागच्छ	=

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अष्टमः पाठः

वैदिक धर्मः

वैदिकधर्मस्य शिक्षा – स्वरूपम – नानाविधेषूपदेशेषु धर्मस्य पुरूषार्थचतुष्टयस्य सामञ्जस्यं हि नाम मूर्धन्यतामाप्नोति। त्रिवर्गे धर्मार्थकामरूपे धर्मस्यैव प्राधान्यमङ्.गीकुर्वन्ति धर्मशास्त्रविदो मनीषिणः। धर्मानुकूलः कामो धर्मानुकूलोऽर्थश्चवैदिकधर्मे समीहितौ। न हि धर्मेण विरूद्धोऽर्थः कामो वा साफल्यं भजते। धर्मानुकूलः कामस्तु साक्षात् भगवद्विभूतित्वेन परिगण्यते। श्रीभगवद्गीतासु–धर्माविरूद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ' 7/11 इति उक्तः श्रीकृष्णेनापि। लोकोपकारित्वात् जीवननिर्वाहसाधकत्वात् निखिलमानवााभीष्टत्वाच्च अर्थकामौ न कथमपि वर्जनीयतामाप्नुतः, परन्तु धर्मेणाविरूद्धावेव सन्तौ अभ्यर्हणीयतां भजत इति शास्त्रकाराणां हार्दम्। अत एवं धर्मार्थकामानां परस्परोपकारित्वादेव संतुलिताचरणो शास्त्रस्य तात्पर्यम्, न तु तेषां विरूद्धाचरणे। तथा च व्यासस्य वचनम्–

धर्मार्थकामाः सममेव सेव्या
    यो ह्येकसक्तः स नरो जघन्यः।
तयोस्तु दाक्ष्यं प्रवदन्ति मध्यं
    स उत्तमो योऽभिरतस्त्रिवर्गे।।

सममित्यस्यार्थः अनासक्तिभावेन परस्पर–संतुलित रूपेणेति। स नरो जघन्यो भवति यः खलु एकस्मिन् कस्मिन्नपि–धर्मेऽपि यदि आसक्तः स्यात्। अर्थकामौ विहाय धर्मासक्तिरपि नो स्वीकार्या मानवैः। अर्थकामाभ्यां साकमविरूद्धभावेन धर्मस्याचरणो शास्त्रकाराणामाग्रहः, न तु अर्थकामाभ्यां वर्जिते धर्माचरणो इति निपुणां शास्त्रमर्म निभालनीयं भव्यैः। वर्तमानकाले अर्थकामौ धर्मेण नितान्तं विरूद्धौ साक्षात्क्रियेते। अत एव तौ त्याज्यौ, धर्माविरूद्धौ चेत् तु नितान्तं ग्राह्यौ इति वैदिकशास्त्राणां स्पष्टं तात्पर्यम्।

आधुनिकः साम्यवादो भारतीयधर्मानुकूल एव। अन्योपमर्दनपूर्वकं स्वाभीष्टार्थोपलब्धिर्हि साम्प्रतिकी व्यवस्था लक्ष्यते पाश्चात्यदेशेषु साम्प्रतम्। परन्तु नैषा स्थितिः साम्यवादेन साकमौचित्यं भजते। एतद्विषये श्रीमद्भागवतस्य वचनमेतन्नितान्तं महत्वमाधत्ते –

यावद् भ्रियेत जठरं तावत् स्वत्वं हि देहिनाम्।
अधिकं योऽभिमन्येत स स्तेनो दण्डमर्हति।।

एषा स्वत्वमीमांसा। यावता द्रव्येण प्राणिनामुदरं भ्रियेत तावति एव द्रव्ये तेषामधिकारः, उदरपूरणार्थकत्वात् द्रव्यस्य। ततो योऽधिकं स्वत्वभिमन्यते, स स्तेनः चौर एव। स च समाजे दण्डमर्हति। अनधिकृतस्य द्रव्यस्य स्वात्मापादनं हि चौर्यं नाम। तत्तु स्वोदरपूर्ति समधिकद्रव्येऽधिकारमानिनि पुरूषेऽपि

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नितान्तं समन्वेति। अत एव चौर्यभावो दुर्निवारः। एषा स्वत्वमीमांसा नैसर्गिकी औचित्यपूर्णेति सैव साम्प्रतमादरणीया मानवैः। यथार्थतः साम्यवादस्तु भारतवर्ष एव स्ववास्तविकं स्वरूपमाधातुं प्रभवति, नान्येषु भेद–प्रभेद–वादिषु पाश्चात्यदेशेषु। इत्थं च धर्मानुकूलत्वे अर्थकामयोः न हि कुत्रापि केनचित् संघर्षः, न वा क्वापि मतविरोधः इति हेतोस्तौ नूनमुपास्यौ। कर्त्तव्यस्य पालनं, न तु अधिकाराय संघर्षः मानवानां मिथो भ्रातृभावः न तु परस्परं वैमनस्यम्, युद्धानामुपशमः, न तु पारस्परिकः कलहः–एतत् सर्वं साम्प्रतं वैदिकधर्मादेवोपगन्तुं पार्यते, नान्यतः कस्मादपि धर्माभासरूपात् सम्प्रदायात्। इति हेतोः स एवोपास्यः। तस्योपासनेन सर्वेषां मानवानामैहिक–फलस्योदयः आभुष्मिक–कल्याणस्योपलब्धिर्नूनं भविता। अतो वैदिको धर्मो भजनीयः इति दिक्।

श्रोतव्यः सौगतो धर्मः कर्तव्यः पुनरार्हतः।
वैदिको व्यवहर्तव्यो ध्यातव्यः परमः शिवः।।
ओम् तत्सत्।

(1) शब्दार्थाः

मूर्धन्यतां = श्रेष्ठता को, मनीषिणः = विद्वानजन, समीहितौ = जुड़े हुये, भारतर्षभ = अर्जुन, अभ्यर्हणीयतां = स्वागतयोग्य, जघन्य = घृणित, दाक्ष्यं = निपुणता, अभिरतः = संलग्न, अनासक्तिभवेन = अनुराग रहित, निमालनीयं = ग्रहणीय, अन्योपमर्दनपूर्वकं = दूसरे को बाधित किये बिना, स्तेनः = चोर, स्वात्मापादनम् = छुपाकर अधीन रखना, नैसर्गिकी = प्राकृतिक, उपास्य = ग्रहणयोग्य, उपशमः = समाप्ति, पार्यते = प्राप्त होना, ऐहिक = सांसारिक, आमुष्मिक–कल्याणस्यः=आध्यात्मिक कल्याण का, नूनं = निश्चित ही।

(2) संधिः

धर्मस्यैव = धर्मस्य + एव (वृद्धि), धर्मानुकूलः = धर्म + अनुकूलः (दीर्घ), विरूद्धोऽर्थे = विरूद्धः + अर्थः (पूर्वरूप), निखिलमानवाभीष्टत्वाच्च = निखिलमानव + अभीष्टत्वात् + च (दीर्घ व्यंजन), अविरूद्धावेव = अविरूद्धौ + एव (अयादि), ह्येकसक्तः = हि + एकसक्तः (यण), कस्मिन्नपि = कस्मिन् + अपि (न को द्वित्व), धर्मासक्तिरपि = धर्म+आसक्तिः+अपि (दीर्घ, विसर्ग) , उपलब्धिर्हि = उपलब्धिः + हि (विसर्ग), पुरूषेऽपि = पुरूषे + अपि (पूर्वः), एवोपास्यः = एव + उपास्यः (गुण)।

(3) समासाः

त्रिवर्गेषु = त्रयाणांवर्गाणां समाहारः तेषु (द्विगु), अर्थकामौ = अर्थश्चकामश्च (द्वन्द), धर्मार्थकामाः = धर्मश्च अर्थश्च कामश्च (द्वन्द), धर्माचरणे = धर्मस्य आचरणे (तत्पुरूष), धर्माविरूद्धौ = धर्मात् अविरूद्धौ (तत्पुरूष), नितान्नम् = नितम्अन्नम् (तत्पुरूष),।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(4) प्रश्नानि

(4) निम्न प्रश्नानामुत्तराणि लिखतु?

(क) वैदिक धर्माशिक्षासु कस्य मूर्धन्यता अस्ति?
(ख) त्रिवर्गे कस्य प्राधान्यम्?
(ग) वैदिके धर्मे किं समीहितम्?
(घ) धर्मेणविरूद्धौ कौ साफल्यं न भजेते?
(ङ) अर्थकामौ किमर्थं न वर्जनीयौ?
(च) व्यासेनोत्तमजनः कः उक्तः?
(छ) 'समम्' इत्यस्य कोऽर्थः?
(ज) धर्मासक्तिः कदा अस्वीकार्या मानवैः?
(झ) साम्प्रतिकी अर्थकामयोः धर्मेण सह का स्थितिः?
(ञ) आधुनिकः साम्यवादः कीदृक्?
(ट) अधुना पाश्चात्य देशेषु अर्थोपार्जने कीदृशी अवस्था?
(ठ) भागवते 'स्तेनः' कः कथितः?
(ड) द्रव्यम् किमर्थम्?
(ढ) भारते साम्यवादस्य कीदृशी स्थितिः?
(ण) वैदिकधर्मेण किं किं प्राप्तुं शक्येत्?
(त) वैदिकधर्मः कथम् भजनीयः?

(5) शब्दरूपेषु विभक्ति–वचनानि लिख्यताम्?

(क) हेतोः (ख) पुरूषे (ग) मनीषिणः (घ) नरः (ङ) तौ (च) वदता।

(6) समासविग्रहं लिखित्वा, नाम लिखतु?

(क) पुरूषार्थचतुष्टयस्य (ख) धर्मानुकूलः (ग) अर्थकामाभ्याम् (घ) साम्यवादः (ङ) चौर्यभावः।

(7) प्रकृति–प्रत्ययान् पृथक्करोतु?

(1) नैसर्गिकी (2) श्रोतव्यः (3) स्वत्वम् (4) सेव्याः (5) त्याज्यः।

(8) पाठगतानि कतिपय अव्ययानि चित्वा लिखतु?

(9) भारतीय–साम्यवादस्य विषये पञ्चवाक्यानि लिखतु?

(10) 'वैदिक धर्मःकथं ध्यातव्यः' इति विषये पाठानुसारेण पञ्च वाक्यानि लिखतु?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नवमः पाठः

सुपात्राय दानम्

एकदा काशीति विख्यात–नगरे एकः प्रतिष्ठितः ब्राह्मणः आसीत्। तस्य नाम विश्वनाथः आसीत्। सः प्रकाण्ड विद्वान् दानशीलश्चासीत्। तथापि केचन जनाः तम् पापिनं मन्यन्ते, निष्ठुरः इति कथयन्ति च! सः दयालुः दानवीरश्चासीत्, तथापि तस्य व्यक्तित्वं अति विचित्रं आसीत्। सः कदाचित् याचकाय दानं ददाति, कदाचित् निष्ठुरः भूत्वा ताडयतिस्म। तस्य एतादृशं व्यवहारं दृष्ट्वा जनाः आश्चर्यचकिताः भवन्ति स्म।

ब्राह्मणः विश्वनाथः विश्वनाथस्य भक्तः आसीत्। सः श्रद्धा–भक्तिपूर्वकं विश्वनाथम् अपूजयत्। एकस्मिन् दिवसे तत् स्वभाव–विषये मातुः पार्वत्याः मनसि विचिकित्सा जायते यत् तस्य स्वभावः किमर्थं विचित्रं भवति। एकदा सा शिवं प्रति अपृच्छत्–हे नाथ! भवतः भक्तः विचित्रम् अस्ति। अनेकवारं सः याचकाय प्रसन्नतापूर्वकं दानं करोति, अनेकवारं तान् अपमानितं करोति। अहं एतस्य कारणं ज्ञातुम् इच्छामि। तस्याः वचनं श्रुत्वा भगवान् विहस्य अवदत्, पार्वति। इदं सत्यं नास्ति। विश्वनाथः सर्वदा दीनजनस्य सहायतां करोति। पार्वती पुनः अपृच्छत्–नहि, नाथ! माम् एतादृशं न प्रतिभाति। तद् वचनं निशम्य शिवः उवाच–अस्तु अद्य तस्य परीक्षा भविष्यति तर्हि भवत्याः प्रश्नस्य उत्तरं स्वयमेव मिलिष्यति।

शिवपार्वत्यौ वेषं परिवर्तनं कृत्वा काशीनगरं ययतुः। तत्र पार्वतीं दूरे स्थापयित्वा शिवः कुष्ठ–रोगग्रस्तः भूत्वा विश्वनाथस्य द्वारे गत्वा भिक्षां याचितवान्। तस्य वचनं श्रुत्वा सः वहिरागतः अपश्यच्च–अनेक स्थले ब्रण–ग्रस्तः कुष्ठरोगी भिक्षां याचते। सः द्रवीभूतः अभवत्। सः अचिरं औषधिम् आनीय तस्य उपचारं कृतवान्। तम् भोजनं, रूप्यकाणि च दत्वा प्रेषितवान्। देवी पार्वती स्वस्थले स्थितः सर्वम् अपश्यत्। तदैव भगवान् शिवः तत्र आगत्य अकथयत् किं त्वम् अद्यापि न मन्यसे यत् विश्वनाथः याचकै सह दुर्व्यवहारं न करोति? तदा पार्वती अकथयत्–नहि! अहम् स्वयमपि तस्य परीक्षां करिष्यामि। इति निश्चित्य सा भिक्षां याचितुं गतवती।

याचकस्य शब्दं श्रुत्वा विश्वनाथः बहिः आगतः। सः अपश्यत्–एका हृष्टा–पुष्टा महिला भिक्षां प्रार्थयति। विश्वनाथः तां दृष्ट्वा क्रोधितवन्तः भूत्वा वेगेन द्वारं पिहितवान्। विश्वनाथस्य एतादृश व्यवहारेण पार्वती प्रसन्ना भूत्वा शिव–समीपमागतवती। विहस्य साऽवदत्–पश्यतु, भवता भक्तस्य व्यवहारः। द्वारादेव उपेक्षितः। तथापि भवान् तस्य प्रशसां करोति। पार्वत्याः वचनं निशम्य भगवान् शिवः विहस्य अवदत्–देवि। भवान् तु अनुचितं वेशं धारयित्वा गतवती। पुनः वृद्धावेशं धारयित्वा गच्छ। यदा सा वृद्धारूपा पार्वती तस्य द्वारे गत्वा याचितवती। सः अपश्यत् यत् एका असहाया अबला वृद्धा शैत्येन कम्पिता तिष्ठति। सः शीघ्रमेव गृहं गत्वा एकम् उष्णं वस्त्रं आनीय वृद्धायै दत्तवान्। तदनन्तरं सः वृद्धायै भोजनं दत्वा प्रेषितवान्।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

विश्वनाथस्य एतादृश–व्यवहारेण कुपिता पार्वती भगवन्तं शिवं प्रति अकथयत्–अहं मन्ये यत् अयम् अपि भवतः मायाजालः अस्ति। अन्यथा प्रथमं विश्वनाथः माम् कथम् उपेक्षितवान् तथा अस्मिन् अवसरे सत्कृतवान् च।

पार्वत्याः वचनं श्रुत्वा भगवान् शिवः अवदत् देवि पार्वति! मम भक्तः प्रज्ञा पुरुषः अस्ति। सः अनेकावसरे याचकान् उपेक्षते, किन्तु एतद् रहस्यं अस्ति, इदं सत्यं। एषः ज्ञानी, दानवीरः भूत्वा कर्मयोगी अपि अस्ति । अतएव यदा भवतीं हृष्टा–पुष्टां महिलावेषं धारिणीमवलोकयति तदा उपेक्षितवान् यतोहि सः ज्ञातवान् यत् भवती कार्यसम्पादने समर्था क्षमा वा अस्ति। तथापि भिक्षां कथं याचते।

वस्तुतः सः जानाति यत् किं सुपात्रं किं कुपात्रमिति। दानं सर्वदा एव सुपात्रायदत्तम् फलति। अनेनैव कारणेन विश्वनाथः कुपात्रयाचकान् अनेकावसरे तिरस्कृतवान्। भगवान् शिवस्य एतादृशीं वार्तां श्रुत्वा विश्वनाथस्य ज्ञानं प्रति श्रद्धापूरिता अभवत् पार्वती। कालान्तरे विश्वनाथः कर्मयोगी इति प्रसिद्धः।

अतएव सुपात्राय एव दानं दातव्यम्। शास्त्रेऽपि कथितम् – कुपात्रायदानं वृथा भवति –

दानं सदैव दातव्यं पात्रत्वं तु परीक्ष्य वै।
सुपात्राय कृतं दानं चतुर्वर्गसुसाधकम् ।।

शब्दार्थाः

निष्ठुरः = कठोर, निर्दयी। मनसि = मन में । विचिकित्सा = जिज्ञासा । प्रतिभाति = ज्ञात होता, लगता । निशम्य = सुनकर । ब्रणः = घाव। शैत्येन = ठंड से । कम्पिता = कॉपते हुए । उष्णं = गरम। दत्तवान् = दिया । सत्कृतवान् = सत्कार किया । प्रज्ञा = ज्ञान । कुपात्र = जो उचित व्यक्ति न हो । सुपात्र = जो उचित व्यक्ति हो । कर्मयोगी = कर्म में विश्वास करने वाला । चतुवर्ग = अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष।

सन्धयः

काशी + इति। दानशीलः + च + आसीत्। तथा + अपि । दुः + व्यवहारं । काल + अन्तरे।

प्र.1 शब्द और प्रत्यय अलग–अलग कर लिखिए –

दृष्ट्वा, श्रुत्वा, कृतवान्, याचितुम्, भूत्वा, निशम्य आनीय, सत्कृतवान्, दातव्यम्।

प्र.2 धातु पुरूष काल एवं वचन लिखिये –

आसीत्, कथयन्ति, अपूजयत्, इच्छामि, मिलिष्यति, याचते, अस्ति, अभवत्।

प्र.3 शब्द, कारक एवं वचन लिखिये –

याचकाय, दिवसे, विश्वनाथं, पार्वत्या, पार्वति, जनस्य, द्वारे, भगवन्तं, सुपात्राय, शिवस्य।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्र.4 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में लिखिये –

1. काशीनगरे कः निवसति स्म ?
2. सः कीदृशः ब्राह्मणः आसीत् ?
3. जनाः आश्चर्यचकिताः कदा भवन्ति स्म ?
4. पार्वत्याः मनसि किम् अजायत ?
5. 'विश्वनाथः सदा दीनजनस्य सहायतां करोति,' इति केन कथितम् ?
6. शिवपार्वत्यौ कीदृशौ काशीनगरं ययतुः?
7. शिवः कम् रूपम् धारयित्वा विश्वनाथस्य द्वारं गतः ?
8. पार्वती, शिवेन, पुनः गमनाय कथं कथित् ?
9. कुपात्राय दानं कीदृशं भवति ?
10. दानं कस्मै प्रदेयः ?

प्र.5 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए –

1. विश्वनाथः कः आसीत् ?
2. केचन् जनाः तं निष्ठुरं किमर्थं कथयन्ति ?
3. शिवपार्वत्यौ वेश–परिवर्तनं कृत्वा कुत्र ययौ ?
4. कुष्ठरोगीं दृष्ट्वां विश्वनाथः किम् अकरोत् ?
5. पार्वती कस्य रूपं धारयित्वा गतवती ?
6. कालान्तरे विश्वनाथः केन रूपेण प्रसिद्ध ?

प्र.6 हिन्दी में अनुवाद कर लिखिये –

1. तस्य व्यक्तित्वं विचित्रम् आसीत्।
2. सः याचकाय प्रसन्तापूर्वकं दानं करोति ।
3. अनेकबारं सः तान् तिरस्कारं करोति ।
4. शिवः कुष्ठरोग–ग्रस्तः भूत्वा अगच्छत्।
5. सुपात्राय एव दानं दातव्यम्।
6. कुपात्राय दानं वृथा भवति।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दशमः पाठः

तिरूक्कुरल्–सूक्ति–सौरभम्

ख. ग्रन्थपरिचयः

'तिरूक्कुरल्' तमिंलभाषायां रचित तमिलसाहित्यस्य उत्कृष्टा कृतिः अस्ति। अस्य प्रणेता तिरूवल्लुवरः अस्ति। ग्रन्थस्य रचनाकालः अस्ति – ईशवीयाब्दस्य प्रथमशताब्दी।

अंस्मिन् ग्रन्थे सकलमानवजातेः कृते जीवनोपयोगिसत्यम् प्रतिपादितम्। 'तिरू' शब्दः 'श्री' वाचकः। 'तिरूक्कुरल्' पदस्य अभिप्रायः अस्ति श्रिया युक्तं कुरल छन्दः अथवा श्रिया युक्ता वाणी

अस्मिन् ग्रन्थे धर्म अर्थ – काम – संज्ञकाः त्रयः भागाः सन्ति। त्रयाणां भागानां पद्यसंख्या 1330 अस्ति।

पिता यच्छति पुत्राय बाल्ये विद्याधनं महत्।
पिताऽस्य किं तपस्तेपे इत्युक्तिस्तत्कृतज्ञता।। 1।।

अवक्रता यथा चित्ते तथा वाचि भवेद् यदि।
तदेवाहुः महात्मानः समत्वमिति तथ्यतः।। 2।।

त्यक्त्वा धर्मप्रदां वाचं परुषां योऽभ्युदीरयेत्।
परित्यज्य फलं पक्वं भुङ्क्तेऽपक्वं विमूढधीः।।3।।

विद्वांस एव लोकेऽस्मिं चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः।
अन्येषां वदने ये तु ते चक्षुनामनी मते।।4।।

यत् प्रोक्तं येन केनापि तस्य तत्त्वार्थनिर्णयः।
कर्तुं शक्यो भवेद्येन स विवेक इतीरितः।।5।।

वाक्पटुर्धैर्यवान् मन्त्री सभायामप्यकातरः।
स केनापि प्रकारेण परैर्न परिभूयते।।6।।

य इच्छत्यात्मनः श्रेयः प्रभूतानि सुखानि च।
न कुर्यादहितं कर्म स परेभ्यः कदापि च।।7।।

आचारः प्रथमो धर्मः इत्येतद् विदुषां वचः।
तस्माद् रक्षेत् सदाचारं प्राणेभ्योऽपि विशेषतः।।8।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अन्वयाः

1. पिता पुत्राय बाल्ये महत् विद्याधनं यच्छति। अस्य (पुत्रस्य) पिता किं तपः तेपे इति उक्तिः तत्कृतज्ञता।
2. यथा अवक्रता चित्ते तथा यति वाचि भवेत् महात्मानः तथ्यतः तदेव समत्वम् इति आहुः।
3. यः धर्मप्रदां वाचं त्यक्त्वा परुषां (वाचं) अभ्युदीरयेत्। (सः) विमूढधीः पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं (फलं) भुङ्क्ते।
4. अस्मिन् लोके विद्वांसः एव चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः। अन्येषां वदने ये (चक्षुषी) ते तु चक्षुनामनी मते।
5. येन केन अपि यत् प्रोक्तं तस्य तत्त्वार्थनिर्णयः येन कर्तुं शक्यः भवेत्, सः विवेकः इति ईरितः।
6. (यः) मन्त्री वाक्पटुः, धैर्यवान्, सभायाम् अपि अकातरः (अस्ति) सः परैः केन अपि प्रकारेण न परिभूयते।
7. यः आत्मनः श्रेयः प्रभूतानि सुखानि च इच्छति, सः परेभ्यः अहितं कर्म कदापि न कुर्यात्।
8. आचारः प्रथमः धर्मः इति एतत् विदुषां वचः तस्मात् प्राणेभ्यः अपि सदाचारं विशेषतः रक्षेत्।

अनुप्रयोगः

1. प्रश्नानाम् उत्तरम् एकपदेन दीयताम् (मौखिक–अभ्यासार्थम्)
   (क) पिता पुत्राय बाल्ये किं यच्छति?
   (ख) मूढमतिः कीदृशीं वाचं परित्यजति?
   (ग) अस्मिन् लोके के एव चक्षुष्मन्तः प्रकीर्तिताः?
   (घ) नरः केन गुणेन कस्यापि कथनस्य तत्त्वार्थनिर्णयं कर्तुं शक्नोति?
   (ङ) प्राणेभ्योऽपि किं रक्षणीयम्?
   (च) आत्मनः श्रेयः इच्छन् नरः कीदृशं कर्म न कुर्यात्?
   (छ) वाचि किं भवेत्?
   (ज) 'वाचि पटुः' इति स्थाने किं पदं प्रयुक्तम्?

2. पाठात् चित्वा अधोलिखितपद्यांशानां भावम् उपयुक्तपदैः पूरयत :–

   क. चित्ते वाचि च सरलता महात्मभिः – – – – – – मन्यते।
   ख. पिता पुत्राय विद्यादानार्थं महत् कष्टं सहते। पुत्रेण अस्य अनुभूतिः एव – – – – मन्तव्या।
   ग. – – – – – – – – एवं धर्मप्रदां वाचं त्यक्त्वा – – – – – वाचं वदति।
   घ. अस्मिन् संसारे केवलं – – – – – – – एव – – – – – – – मन्तव्याः।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ङ़ प्रत्येक कथनस्य – – – – – – – – –येन क्रियते सः – – – – – – – – – – अस्ति।

च. यः मन्त्री (परामर्शदाता) तु – – – – – – – – – – – – – भवति स अन्यैः कदापि न तिरस्क्रियते।

छ. यः आत्मनः कल्याणम् इच्छति सः परेभ्यः – – – – – – – – कर्म कदापि न कुर्यात्।

ज. – – – – – – – – – – – एव प्रथमो धर्मः अतः विशेषतः – – – – – – – – – रक्षेत्।

3. स्थूलपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरूत

यथा **विमूढ़धीः** पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं फलं भुङ्कते?

कः पक्वं फलं परित्यज्य अपक्वं फल **भुङ्कते**?

(i) संसारे विद्वांसः **ज्ञानचक्षुभिः** नेत्रवन्तः कथ्यन्ते।

(ii) जनकेन सुताय **शैशवे** विद्याधनं दीयते।

(iii) तत्त्वार्थस्य निर्णयः **विवेकेन** कर्तुं शक्यः।

(iv) **साधूनां** चित्ते वाचि च सरलता भवति।

(v) **धैर्यवान्** लोके परिभवं न प्राप्नोति।

(vi) **आत्मकल्याणम्** इच्छन् नरः परेषाम् अनिष्टं न कुर्यात्।

4. पाठात् चित्वा अधोलिखितानां श्लोकानाम् अन्वयम् उचितपदक्रमेण पूरयत

(1) पिता पुत्राय बाल्ये महत् – – – – – – – – – –यच्छति, अस्य पिता किं – – – – – – तेपे, इत्युक्तिः – – – – – – –।

(2) येन केनापि यत् – – – – – – – – – तस्य तत्त्वार्थनिर्णयः येन – – – – – – – शक्यः – – – – – – सः – – – – – – – इति ईरितः।

(3) य आत्मनः श्रेयः – – – – – – – – – – – – सुखानि च इच्छति, सः परेभ्यः अहितं – – – – – – – – – कदापि च न – – ––– –– ।

5. अधोलिखितम् उदाहरणद्वयं पठित्वा अन्येषां प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत

		प्रश्नाः	उत्तराणि
क.	**श्लोक**	**संख्या–1**	
यथा		विद्याधनं कः यच्छति?	पिता
	(1)	पिता विद्याधनं कस्मै यच्छति?	—————————
	(2)	पिता पुत्राय विद्याधनं कदा यच्छति?	—————————
	(3)	पुत्रः किम् अनुभवति?	—————————

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ख. श्लोक संख्या–3

यथा	सत्या मधुरा च वाणी का?	धर्मप्रदा
(1)	धर्मप्रदां वाचं कः त्यजति ?	————————
(2)	मूढः पुरूषः कां वाणीं वदति ?	————————
(3)	मन्दमतिः कीदृशं फलं खादति ?	————————

ग. श्लोक संख्या–4

यथा	नरस्य वास्तविकं चक्षुः किम्?	ज्ञानम्
(1)	येषां चक्षूंषि भवन्ति ते के?	————————
(2)	चक्षुष्मन्तः के कथिताः?	————————
(3)	वस्तुतः लोके विद्वांसः के?	————————

घ. श्लोक संख्या–7

यथा	बुद्धिमान् नरः किम् इच्छति?	आत्मनः श्रेयः
(1)	कियन्ति सुखानि इच्छति?	————————
(2)	सः कदापि किं न कुर्यात्?	————————
(3)	सः केभ्यः अहितं न कुर्यात्?	————————

6. (क) पाठात् विचित्य समुचितैः विशेषणपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत

क. — — — — — — — — मन्त्री परैः न परिभूयते।

ख. बुद्धिमान् सदा — — — — — — एव वाचं वदति।

ग. यः सुखानि इच्छति सः — — — — — — कर्म त्यजेत्।

घ. पुत्रः शैशवे पितुः — — — — — — — — — — विद्याधनं प्राप्नोति।

ङ. — — — — — — — — — आचारः इति विद्वांसः मन्यन्ते।

7. मञ्जूषायाः तद्भावात्मकसूक्तीः विचित्य अधोलिखितकथनानां समक्षं लिखत

(क) विद्याधनं महत्

— — — — — — — — — — — — — — — — — — —

— — — — — — — — — — — — — — — — — — —

(ख) आचारः प्रथमो धर्मः

— — — — — — — — — — — — — — — — — — —

— — — — — — — — — — — — — — — — — — —

(ग) चित्ते वाचि च अवक्रता एव समत्वम्

— — — — — — — — — — — — — — — — — — —

— — — — — — — — — — — — — — — — — — —

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मञ्जूषायां सूक्तयः

आचारेण तु संयुक्तः सम्पूर्णफलभाग्भवेत्।
मनसि एकं वचसि एकं कर्मणि एकं महात्मनाम्।
विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।
सं वो मनांसि जानताम्।
विद्याधनं श्रेष्ठं तन्मूलमितरद्धनम्।
आचारप्रभवो धर्मः सन्तश्चाचारलक्षणाः।

8. अधोलिखितानां शब्दानां, पुरतः उचितं विलोमशब्दं कोष्ठकात् चित्वा लिखत –

शब्दः	**विलोमशब्दः**	
कृतज्ञता	– – – – – – –	(कृपणता, कृतघ्नता, कातरता)
पक्वः	– – – – – – –	(परिपक्वः, अपक्वः, क्वथितः)
परुषा	– – – – – – –	(पौरुषी, कोमला, कठोरा)
विमूढधीः	– – – – – – –	(सुधीः, निधिः, मन्दधीः)
आलस्यम्	– – – – – – –	(उद्विग्नता, विलासिता, उद्योगः)
कातरः	– – – – – – –	(अकरूणः, अधीरः, अकातरः)

9. अधोलिखितानां शब्दानां त्रयः समानार्थकाः शब्दाः शब्दमञ्जूषायाः चित्वा लिख्यन्ताम्

चित्तम्	– – – – – – –	– – – – – – –	– – – – – – –
मुखम्	– – – – – – –	– – – – – – –	– – – – – – –
प्रभूतम्	– – – – – – –	– – – – – – –	– – – – – – –
चक्षुष्	– – – – – – –	– – – – – – –	– – – – – – –
सभा	– – – – – – –	– – – – – – –	– – – – – – –
श्रेयः	– – – – – – –	– – – – – – –	– – – – – – –

शब्द–मञ्जूषा

वदनम्	नयनम्	चेतः
मनः	कल्याणम्	बहु
संसद्	भूरि	नेत्रम्
लोचनम्	वक्त्रम्	समितिः
शुभम्	मानसम्	शिवम्
आननम्	विपुलम्	परिषद्

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

10. अधस्ताद् समासविग्रहाः दीयन्ते तेषां समस्तपदानि पाठाधारेण दीयन्ताम्

विग्रहः	**समस्तपदम्**	**समासनाम**
तत्त्वार्थस्य निर्णयः	————————	षष्ठी तत्पुरुषः
वाचि पटुः	————————	सप्तमी तत्पुरुषः
धर्मं प्रददाति इति (ताम्)	————————	उपपदतत्पुरुषः
न कातरः	————————	नञ् तत्पुरुषः
न हितम्	————————	नञ तत्पुरुषः
महान् आत्मा येषाम् ते	————————	बहुव्रीहिः
विमूढा धीः यस्य सः	————————	बहुव्रीहिः

11. अधोलिखितेषु भिन्नप्रकृतिकं शब्दं रेखाङ्कितं कुरूत

(क) तपः, धर्मः, श्रेयः, वचः। (लिंगकारणात्)

(ख) तथ्यतः, विशेषतः, मुख्यतः, ईरितः। (प्रत्ययकारणात्)

(ग) लघुता, प्रकीर्तिता, अवक्रता, कृतज्ञता। (प्रत्ययकारणात्)

(घ) लोके, चित्ते, वांचि, भुङ्क्ते। (विभक्तिकारणात्)

12. अधोलिखितशब्दैः सह 'मतुप्' प्रत्ययं योजयत

यथा चक्षुष् + मतुप् = चक्षुष्मान्

धैर्य + मतुप् = धैर्यवान्

विद्या + मतुप् = – – – – – – –

धन + मतुप् = – – – – – – –

गुण + मतुप् = – – – – – – –

श्री + मतुप् = – – – – – – –

बुद्धि + मतुप् = – – – – – – –

नीति + मतुप् = – – – – – – –

शक्ति + मतुप् = – – – – – – –

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एकादशः पाठः

कालोऽहम्

संकलन – ईश्वर प्रसाद तिवारी

कालोऽहम्। अहं खलु कालः। विश्वस्य आत्माऽहम्। कलयामि गणयामि जगतः आयुःप्रमाणम्। सततं चक्रवत् परिवर्तमानः भूतं वर्तमानं भविष्यदपि च वीक्षमाणः अहमेव साक्षी जगतः उत्पत्तेः विकासस्य प्रलयस्य च ।इदम् जगत् तु पुनः पुनः जायते विलीयते च परमहं सर्वदा विद्यमानोऽस्य सर्व क्रियाकलापं पश्यामि। अहो! किं जानीथ यूयम्, 'कियती प्राचीना इयम् सृष्टिः!' नैव! तर्हि श्रृणुत ध्यानेन।

'कृतयुगं' त्रेतायुगं द्वापरयुगं कलियुगञ्चेति चत्वारि युगानि। चतुर्णा युगानां समूहः एव महायुगम्। एकसप्ततिमहायुगानाम् एकम् मन्वन्तरम्। चतुर्दशमन्वन्तराणां समूहः कल्पः। एकः कल्प एव ब्रह्मणः एकं दिनं मन्यते। ब्रह्मणः आयुः शतं वर्षाणि।'

अहो! श्रूयते शंखध्वनिः! युगादिपर्वणि कश्मिंश्चिद् गृहे नूतनसंवत्सरस्य अभिनन्दनसमारोहः आयोज्यते। अद्य कलियुगं तु द्विपच्चाशत्तमं शतकं प्रविशति। तदैव समारोहारम्भे कश्चन् विद्वान् सङ्कल्पवाचनं करोति......

विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रम्हणः द्वितीयपरार्धे श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे यमुनातीरे दिल्लीमण्डले 'नन्दन' नाम संवत्सरे, सूर्योत्तरायणे, वसन्तर्तौ चैत्रमासे, शुक्लपक्षे, प्रतिपदायाम् तिथौ गुरूवासरे उत्तराभाद्रपदनक्षत्रे, शुक्लयोगे किंस्तुध्नकरणे ....नामाहम् मङ्गलकार्यं करिष्ये।

अये! कथम् इमम् सङ्कल्पं श्रुत्वा विस्मिताः यूयम्? अयं तु वर्तमानकालदेशपरिचायकः। प्राचीनतमा हि एषा गणना। अपि ज्ञायते मदीयायाः अस्याः गणनायाः आधारः ?

मम कलनस्य तु आधारः सूर्य एव। सूर्यस्य द्वे गती उत्तरायणम् दक्षिणायनंच्। प्रत्येकम् अयनस्य अवधिः षण्मासाः। भारतीयमासानां नामानि नक्षत्रनामभिः सम्बद्वानि। पूर्णिमायां यत् नक्षत्रं भवति तेनैव नाम्ना तस्य मासस्य नाम भवति। यथा चैत्रे मासे पूर्णिमा चित्रानक्षत्रयुता भवति, अतः तस्य मासस्य नाम 'चैत्रं' भवति। संवत्सरस्य तु विषये इदमुच्यते–

षण्णाभेर्द्वादशाक्षस्य चतुर्विंशतिपर्वणः।
यस्त्रिषष्टिशतारस्य वेदार्थं स परः कविः।।1।।

षड्ऋतव एव मे नाभयः। द्वादशमासा एव अक्षत्वेन गण्यन्ते। चतुर्विंशतिः पक्षा एव पर्वाणि। षष्ट्युत्तर–त्रिशतानि दिनानि एव अराणि।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

परमहम् अखण्डः शाश्वतः विभुः च। नूतनसंवत्सरोत्सवदिवसे इदानीम् इयमेव मे शुभाशंसा ....

सर्वस्तरतु दुर्गाणि, सर्वो भद्राणि पश्यतु।
सर्वः कामानवाप्नोतु, सर्वः सर्वत्र नन्दतु।।2।।

अनुप्रयोगः

1. एकपदेन उत्तरत (मौखिक– अभ्यासार्थम्)
   - क. अस्मिन् पाठे कः वक्ता ?
   - ख. कालः कस्य आयुः गणयति ?
   - ग. कालः कथं परिवर्तते ?
   - घ. कस्य आयुः शतं वर्षाणि ?
   - ङ. कस्य अभिनंन्दनसमारोहस्य वर्णनम् अत्र कृतम् ?
   - च. दिल्ली कस्या नद्याः तीरे स्थिता ?
   - छ. कालगणनायाः आधारः कः ?
   - ज. सर्वः किम् तरतु ?
   - झ. सर्वः कुत्र नन्दतु ?

2. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् एकवाक्येन उत्तराणि दीयन्ताम्
   - क. कालः किम् किम् वीक्षते ?
   - ख. कालः केषाम् साक्षी अस्ति ?
   - ग. महायुगम् केषाम् समूहः ?
   - घ. कल्पः केषाम् समूहः ?
   - ङ. युगादिपर्वणि किम् आयोज्यते ?
   - छ. सङ्कल्पे देशवाचकाः (स्थानवाचकाः) के के शब्दा आगताः ?
   - ज. सूर्यस्य के गती ? तयोः नाम अपि लिखत ।
   - झ. एकस्मिन् वर्षे कति पक्षाः ?
   - ङ.. "परमहम् अखण्डः शाश्वतः विभुः च" इति अस्मिन् वाक्ये कालाय कानि विशेषणानि प्रयुक्तानि ?

3. उदाहरणमनुसृत्य अधोलिखितानां वाक्यानाम् प्रश्ननिर्माणं क्रियताम्।
   उदाहरणम् कृतयुगं त्रेतायुगं द्वापरयुगं कलियुगच्चेति चत्वारि युगानि ।

   प्रश्नः– कृतयुगं त्रेतायुगं द्वापरयुगं कलियुगश्चेति कति युगानि ?

   (क) भूतं वर्तमानं भविष्यद् इति त्रयः कालभेदाः ।
   (ख) चतुर्णां युगानां समूह एव महायुगम्।
   (ग) संवत्सरे षड् ऋतवः भवन्ति।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(घ) संवत्सरे द्वादश मासाः भवन्ति।
(ङ.) चतुर्दश मन्वन्तराणां समूहः कल्पः।
(च) ब्रम्हणः आयुः शतम् वर्षाणि ।

4. अधोलिखितानाम् कथनानाम् आशयाः विकल्परूपेण तत्समक्षमेव लिखिताः सन्ति। तेषु समुचितम् आशयं (√) इति चिन्हीकुरुत

उदाहरणम् – सततं चक्रवत् परिवर्तमानः
1. कालः यदा कदा चक्रवत् भ्रमति।
2. निरन्तरं भ्रमन् कालः चक्रम एव ।
3. कालः चक्रम् इव निरन्तरं गतिशीलः। (√)

(क) विश्वस्य आत्माऽहम्
1. कालः यत्र तत्र व्याप्तः।
2. कालः संसारस्य आत्मा ।
3. कालः विश्वस्य निर्माता ।

(ख) मम कलनस्य तु आधारः सूर्य एव
1. सूर्य एव कालगणनां करोति।
2. सूर्यम् बिना कालस्य गणना न भवति।
3. सूर्यः अपि कालगणनायाः आधारः।

5. अधोलिखितसंख्यावाचकपदैः रिक्तस्थानानि पूरयत।

सूर्यः ....। सूर्यस्य ....गती । जगतः .... स्थितयः सृष्टिः, विकासः, प्रलयश्च। कालस्य .... युगानि । एकस्मिन् वर्षे .... नाभयः। एकस्मिन् दिवसे ....प्रहराः। संवत्सरे ....मासाः। मन्वन्तरे ....महायुगानि। कल्पे . ...मन्वन्तराणि। ....वर्षाणि ब्रम्हणः आयुः।

(तिस्त्रः, द्वे, एकः, षट्, अष्ट, शतम्, चत्वारि, एकसप्ततिः, चतुर्दश)

6. अधोलिखितानां शुद्धकथनानां समक्षं (√) अशुद्धानां च समक्षं (×) इति चिन्हांकन क्रियताम् यथा

मासे द्वौ पक्षौ भवतः शुक्लः कृष्णः च (√)

(क) चन्द्रस्य द्वे अयने भवतः ( )
(ख) एकस्मिन् वर्षे द्वादशपक्षाः भवन्ति। ( )
(ग) नूतनः संवत्सरः चैत्रमासस्य शुक्लपक्षस्य प्रतिपदायाः प्रारभ्यते। ( )
(घ) एकस्मिन् दिने अष्टप्रहराः भवन्ति। ( )
(ङ.) संवत्सरे षड् ऋतवः भवन्ति। ( )
(च) प्रत्येकम् अयने अष्टमासाः भवन्ति। ( )
(छ) चैत्रमासे सूर्यः उत्तरायणः भवति। ( )
(ज) कृष्णपक्षे अमावस्या भवति। ( )

7. सङ्.कल्पं पठित्वा रिक्तस्थानपूर्तिः क्रियताम्

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

यथा इदानीम् ब्रम्हणः द्वितीयपरार्धः प्रचलति।

(क) इदानीम् .... कल्पः।

(ख) मन्वन्तरस्य नाम .... अस्ति।

(ग) अयम् .... कलियुगः।

(घ) संवत्सरस्य नाम .... ।

(ङ) द्वीपस्य नाम .... ।

(च) देशस्य नाम .... ।

(छ) दिल्ली .... नद्याः तीरे वर्तते।

8. अधोलिखितानि उत्तरोत्तरक्रमेण लिखत

यथा– दिवसः, मासः, पक्षः, वर्षम्, – दिवसः, पक्षः, मासः, वर्षम्।

1. द्वापरम्, कृतयुगम्, कलियुगम्, त्रेता।
2. मन्वन्तरम् महायुगम् कल्पः ब्रम्हणः एकं दिनम्।
3. चतुर्थी, प्रतिपदा, त्रयोदशी, अष्टमी।
4. वर्षा वसन्तः ग्रीष्मः हेमन्तः।
5. आषाढ़ः चैत्रः ज्येष्ठः वैशाखः।

9 अधोदत्तानि सर्वनामपदानि सन्ति। एतेभ्यः उचितं पदं चित्वा रिक्तस्थानपूर्तिः कियताम् अहम्, इदम्, यूयम्,मम, एषा, कश्चन्, अस्याः, सर्वः

यथा अहम् कलयामि जगतः आयुः प्रमाणम्।

(क) .... कलनस्य आधारः सूर्य एव।

(ख) .... श्रृणुत ध्यानेन।

(ग) .... जगत् पुनः पुनः जायते विलीयते च ।

(घ) कीदृशी .... विचित्रा सृष्टिः।

(ङ.) .... सृष्टेः विकासं प्रलयं च काल एवं जानाति।

(च) अद्य युगादिपर्वणि .... कामान् अवाप्नोतु।

10. अधोलिखितानि अव्ययपदानि **<u>पदानां</u>** स्थाने एवं प्रयुज्यन्ताम् येन अर्थभेदः न स्यात् भूयो भूयः, सदा, **<u>अधुना</u>**, स्थूल निरन्तरम्,

(क) **<u>सततम्</u>** कालः चक्रवत् परिवर्तमानः अस्ति।

(ख) **<u>इदानीम्</u>** कलियुगस्य प्रथमः चरणः अस्ति।

(ग) **<u>सर्वदा</u>** शुभकार्य सङ्.कल्पेन प्रारब्धव्यम्।

(घ) **<u>पुनः पुनः</u>** जगत् जायते विलीयते च ।

11. भिन्नविभक्तिकं पदम् रेखाकिंत कुरूत

यथा उत्पत्तेः, चतुर्णाम्, युष्माकम्, ऋतवः जगतः।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(क) पर्वणि, दुर्गाणि, मन्वन्तरे, वसन्ततौ।

(ख) अहम् सङ्.कलपवाचनम्, आयुः प्रमाणम्, सङ्.कल्पम्

(ग) दक्षिणायने, दिवसे, ध्यानेन, चरणे।

12. अधः केषाञ्चित् समस्तपदानां विग्रहाःसमासनामानि च निर्दिष्टानि। पाठात् चित्वा प्रत्येकं विग्रहस्य समक्षं समस्पदम् लिखत

विग्रह	समस्तपदम्	समासनाम
यथा एकम् एकम् प्रति	प्रत्येकम्	अव्ययीभावः
(क) शंखस्य ध्वनिः	....	षष्ठी तत्पुरुषः
(ख) अभिनन्दनस्य समारोहः	....	षष्ठी तत्पुरुषः
(ग) यमुनायाः तीरे	....	षष्ठी तत्पुरुषः
(घ) महत् च तत् युगम्	....	कर्मधारयः
(ङ.) मङ्.गलं च तत् युगम्	....	कर्मधारयः
(च) चित्रानक्षत्रेण युता	....	तृतीया तत्पुरुषः
(छ) सङ्.कल्पस्य वाचनम्	....	षष्ठी तत्पुरुषः

13. अधः शानच् प्रत्यान्तपदानि सन्ति। तेषाम् प्रकृतिः निर्देशनीया।

	पदम्	प्रकृतिः
यथा	परिवर्तमानः	परि. वृत्
	विद्यमानः	....
	वीक्षमाणः	....
	वर्तमानः	....

14. अधोलिखितपदेषु यद् उत्तरपदम् अस्ति तत् लिखत

यथा	दक्षिणायनम्	अयन
	द्वादशाक्षस्य	अक्ष
	सूर्योत्तरायणे	....
	वसन्ततौ	....
	प्रत्येकम्	....

15. अधोलिखितपदानां विपरीतार्थकपदानि पाठात् एव चित्वा लिखत

यथा– भूतम्	**वर्तमानम्**
(क) उत्पत्तेः	....
(ख) जायते	....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ग) प्राचीनः ....
(घ) कलियुगम् ....
(ङ.) उत्तरायणम् ....
(च) इदानीम् ....

गतिविधयः

1. 'युगादिपर्व चैत्रमासे शुक्लपक्षे प्रतिपदायाम् तिथौ भवति ' इति भवन्ताः पठितवन्त एव। अधोलिखितानि पर्वाणि कस्मिन् मासे कस्मिन् पक्षे कस्यां तिथौ च भवन्ति इति लिख्यताम्।

	पर्वनाम	मासः	पक्षः	तिथिः
1.	विजयदशमी	....	....	....
2.	जन्माष्टमी	....	....	....
3.	वाल्मीकिजयन्ती	....	....	....
4.	दीपावलिः	....	....	....
5.	रक्षाबन्धनम्	....	....	....
6.	रविदासजयन्ती	....	....	....
7.	बुद्धपूर्णिमा	....	....	....
8.	क्रिसमस्– दिवसः	....	....	....
9.	होलिकोत्सवः	....	....	....
10.	रामनवमी	....	....	....
11.	गुरूनानकजयन्ती (गुरुपर्व)..........................		....	....

1. युगादिपर्व कदा भवति इति सङ्.कल्पे ज्ञातमेव। दिल्लीनगरे ' अम्बालिका' नाम्न्याः बालिकायाः जन्मदिवसः 'रामनवमीः इति दिवसे आयोज्यते। अधोलिखितेषु देशकालवाचकेषु शब्देषु परिवर्तनम् भविष्यति न वा इति लिखत

यथा ब्रम्हणः द्वितीये परार्धे .... (न भविष्यति)

1. श्वेतवाराहकल्पे .... ( )
2. भारतवर्षे भरतखण्डे .... ( )
3. कलियुगे प्रथमे चरणे .... ( )
4. जम्बूद्वीपे .... ( )
5. सूर्योत्त्रायणे .... ( )
6. चैत्रमासे .... ( )
7. प्रतिपदायाम् तिथौ .... ( )
8. गुरूवासरे .... ( )
9. आदित्यः नाम अहम् .... ( )

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. नवसंवत्सरस्य आरम्भे भवान्/ भवती एकम् शुभकामनापत्रं स्वमित्राय प्रेषयितुम् इच्छति। तस्मिन् कामपि शुभाशंसाम् लिखत

....

....

....

....

....

....

....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

द्वादशः पाठः

आज्ञा गुरूणां ह्यविचारणीया

संकलन– ईश्वर प्रसाद तिवारी

(पन्चतन्त्रम् पण्डित विष्णुशर्मा रचित संसार में प्रसिद्ध नीतिग्रंथ है। इस ग्रंथ के कथा के पात्र प्रायः पशु–पक्षी हैं। इनके माध्यम से गंभीर तत्वों को भी अत्यधिक सरलतापूर्वक यहां प्रतिपादित किया है। प्रस्तुत कथा ' अपरीक्षितकारक' से उद्धृत हैं।)

कस्मिंश्चित् नगरे चन्द्रो नाम भूपतिः प्रतिवसति स्म। तस्य पुत्राः वानरक्रीडारताः वानरयूथं नित्यमेव विविधैः भोज्यपदार्थैः पुष्टिं नयन्ति स्म। तस्मिन् राजगृहे बालवाहनयोग्यं मेषयूथम आसीत्। तेषां मेषाणां मध्ये एको मेषः जिह्वालोलुपतया अहर्निशं महानसं प्रविश्य यत् पश्यति तद् भक्षयति। ते च सूपकाराः यत्किच्चित् काष्ठं, मृण्मय भाजनं कांस्यताम्रपात्रं वा पश्यन्ति तेन तम् आशु ताडयन्ति स्म।

मेषस्य सूपकाराणां च कलहम् अवेक्ष्य नीतिविदाम् अग्रणीः वानरयूथपतिः अचिन्तयत्– 'एतेषां कलहो न वानराणां हिताय।' एवं विचार्य स यूथपः सर्वान् कपीन् आहूय रहसि अवदत्–

सूपकाराणाम् मेषेण सह एषः कलहः नूनं भवतां विनाशकारणं भविष्यति। उक्तम् हि–

तस्मात् स्यात् कलहो यत्र गृहे नित्यमकारणम्।
तद्गृहं जीवितं वाञ्छन् दूरतः परिवर्जयेत्।।1।।

ततः सर्वेषां संक्षयो न भवेत्, तदेतद् राजभवनं परित्यज्य वनं गच्छामः। यतः

कलहान्तानि हर्म्याणि कुवाक्यान्तं च सौहृदम्।
कुराजान्तानि राष्ट्राणि कुकर्मान्तं यशो नृणाम् ।।2।।

तस्य वचनम् अश्रद्धेयं मत्वा मदोद्धताः कपयः प्रहस्य अवदन्–' भो! किमिदम् उच्यते ? न वयं स्वर्गसमानोपभोगान् विहाय अटव्यां क्षार–तिक्त–कषाय–कटु–रूक्षफलानि भक्षयिष्यामः।' तच्छ्रुत्वा साश्रुनयनो यूथपतिः सगद्गदम् उक्तवान्–' रसनास्वादलुब्धाः यूयम् अस्य सुखस्य कुपरिणामं न जानीथ। अहं तु वनं गच्छामि'।

अथ अन्यस्मिन् अहनि स मेषो यावत् महानसं प्रविशति तावत् सूपकारेण अर्धज्वलितकाष्ठेन ताडितः ऊर्णाप्रचुरः मेषः वह्निना जाज्वल्यमानशरीरः निकटस्थाम् अश्वशालां प्रविशति दाहवेदनया च भूमौ लुठति। तस्य क्षितौ प्रलुठतः तृणेषु वह्निज्वालाः समुत्थिताः।

ज्वालमालाकुलाः अश्वाः प्राणत्राणाय इतस्ततः अधावन्। तेषु केचिद् दग्धाः केचिद् अर्धदग्धाः केचन च पञ्चत्वं गताः। दग्धां हयशालां विज्ञाय सविषादः राजा शालिहोत्रज्ञान् वैद्यान् आहूय

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अपृच्छत्–' हा! दग्धाः मे घोटकाः कथं रक्षणीयाः?सपदि उपायः क्रियताम्।' तदा राजवैद्यः प्रोवाच–

'कपीनां मेदसा दोषो वह्निदाहसमुद्भवः।
अश्वानां नाशमभ्येति तमः सूर्योदये यथा।।3।।

'यथोचितं क्रियताम् ' इति राजादेशं श्रुत्वा सर्वे भयत्रस्ताः कपयः अचिन्तयन्– 'हा! हताः वयम्। **अवधीरिताः अस्माभिः गुरूजनोपदेशाः।' उक्तम् हि**

मित्ररूपाः हि रिपवः सम्भाष्यन्ते विचक्षणैः।
ये हितं वाक्यमुत्सृज्य विपरीतोपसेविनः।।4।।

अन्वयाः

(1) तस्मात् स्यात् कलहो यत्र गृहे नित्यमकारणः।
तद्गृहं जीवितं वाच्छन् दूरतः परिवर्जयेत्।।

अन्वयः तस्मात् यत्र गृहे नित्यम् अकारणः कलहः स्यात्। जीवितं वाच्छन् तत् गृहं दूरतः परिवर्जयेत्।

(2) कलहान्तानि हर्म्याणि कुवाक्यान्तं च सौहृदय्।
कुराजान्तानि राष्ट्राणि कुकर्मान्तं यशो नृणाम्।।

अन्वयः हर्म्याणि कलहान्तानि (भवन्ति), सौहृदम् च कुवाक्यान्तम् (भवति) राष्ट्राणि कुराजान्तानि (भवन्ति) नृणां यशः (च) कुकर्मान्तं (भवति)।

(3) कपीनां मेदसा दोषो बह्निदाहसमुद्भवः।
अश्वानां नाशमभ्येति तमः सूर्योदये यथा।।

अन्वयः अश्वानां बह्नि–दाह– समुद्भवःदोषः कपीनां मेदषा नाशम् अभ्येति यथा सूर्योदये तमः।

(4) मित्ररूपाः हि रिपवः सम्भाष्यन्ते विचक्षणैः।
ये हितं वाक्यमुत्सृज्य विपरीतोपसोविनः।।

अन्वयः ये हितं वाक्यम् उत्सृज्य विपरीत–उपसेविनः (ते) विचक्षणैः मित्ररूपाः हि रिपवः सम्भाष्यन्ते।

अनुप्रयोगाः

1. एकपदेन संस्कृतभाषया उत्तरत (मौखिक–अभ्यासार्थम्)
   क. राजपुत्राः प्रासादे कैः सह क्रीडन्ति स्म ?
   ख. राजगृहे कीदृशं मेषयूथम् आसीत् ?
   ग. जिह्वालोलुपतया मेषः कुत्र प्रविशति स्म?
   घ. के पाकशालां प्रविष्टं मेषं ताडयन्ति स्म ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ङ. केन जाज्वल्यमानशरीरः मेषः अश्वशालां प्रतिशति ?
च. मेषस्य क्षितौ प्रलुठतः तृणेषु काः समुत्थिताः ?
छ. किमर्थम् अश्वाः इतस्ततः अधावन् ?
ज. केषां वहिनदोषः कपीनां मेदसा शाम्यति ?
झ. कस्य आदेशं श्रुत्वा सर्वे कपयः भयत्रस्ताः जाताः ?
छ. केषाम् आज्ञा अविचारणीया भवति ?

2. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरूत

यथा– कथनम्– राजपुत्राः वानरयूथं **भोज्यपदार्थैः** पुष्टिं नयन्ति स्म।
प्रश्नः – राजपुत्राः वानरयूथं कैः पुष्टिं नयन्ति स्म ?
क. अश्वाः **प्राणत्राणाय** इतस्ततः अधावन्
ख. राजा **वैद्यान्** आहूय अश्वरक्षार्थम् अपृच्छत्।
ग. सूपकारेण मेषः **अर्धज्वलितकाष्ठेन** ताडितः।
घ. **प्राज्ञः** कलहयुक्तम् गृहं दूरतः परिवर्जयेत्।
ङ. सूर्योदये **तमः** नश्यति।
च. ज्वलन् मेषः **अश्वशालां** प्रविशति।

3. पूर्णवाक्येन उत्तरतः–

क. जिह्वालोलुपतया मेषः अहर्निशं किं करोति स्म?
ख. सूपकाराः मेषं कैः वस्तुभिः ताडयन्ति स्म?
ग. मेषस्य सूपकाराणां च कलहम् अवेक्ष्य वानरयूथपतिः किम् अचिन्तयत्?
घ. मदोद्धताः कपयः वानरयूथपतिं किम् अवदन्?
ङ. सविषादः राजा वैद्यान् आहूय किम् अवदन्?
च. राजादेशं श्रुत्वा भयत्रस्ताः कपयः किम् अचिन्तयन्?
छ. केषां उपदेशाः नैव अवधीरणीयाः?
ज. नरः कीदृशं गृहं दूरतः परिवर्जयेत्?

4. कोष्ठकात् शुद्धं रूपं विचित्य रिक्तस्थानानि पूरयत

यथा – एकः मेषः जिह्वालोलुपतया महानसं प्रविशति स्म। (वानरः/अश्वः/मेषः)

क. मेषेण सह....................कलहः वानराणां विनाशकारकः अभवत्।
(राज्ञाम्/सूपकाराणाम्/अश्वानाम्)
ख. वह्निना जाज्वल्यमानशरीरः मेषः .... प्रविश्य भूमौ अलुठत।
(राजभवनम्/महानसम्/हयशालाम)
ग. प्राज्ञः .... हर्म्याणि परिवर्जयेत्। (कुकर्मान्तानि/कलहान्तानि/कुराजान्तानि)
घ. नृपतेःपुत्राः................सह क्रीडन्ति स्म। (अश्वैः/मेषैः/वानरैः)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ङ. यूथपते वचनम्................. मत्वा कपयः प्राहसन्। (अप्रियं/प्रियं/हितकरम्)

च. .... रसनास्वादलुब्धाः आसन्। (पाचकाः/मेषाः/कपयः)

छ. मर्कटैः................. अवधीरिताः। (राजादेशाः/गुरूजनोपदेशाः/सूपकारादेशाः)

5. अधोलिखितानां पङ्.क्तीनाम् शुद्धं भावार्थ (√) चिन्हेन चिन्हीक्रियताम्

(क) एतेषां कलहः न वानराणां हिताय अर्थात्

(1) मेषस्य सूपकारैः सह दैनन्दिनः कलहः वानराणां विनाशकारणं भविष्यति।

(2) एतेषां वानराणां पारस्परिकः विवादः जनानां हिताय न अस्ति।

(3) वानरेभ्यः हितकरम् एतत् यत् ते जनैः सह कलहं न कुर्युः।

(ख) तद्गृहं जीवितं वाच्छन् दूरतः परिवर्जयेत् अर्थात्

(1) यस्मिन् गृहे महान् कोलाहलः वर्तते, धनम् इच्छन् नरः तस्मात् दूरे गृहनिर्माणं कुर्यात्।

(2) यत्र गृहे नित्यं सुखमयं जीवनम् अस्ति, तद्गृहं दूरतः अपि न परिवर्जितव्यम् तत्रैव वस्तव्यम्।

(3) यस्मिन् गृहे नित्यं विवादः भवति, नरः सुखेन जीवितुम् तत् गृहं कदापि न प्रविशेत्, तद् दूरतः एव परिवर्जयेत्।

(ग) रसनास्वादलुब्धा यूयम् अस्य कुपरिणामं न जानीथ अर्थात्

(1)जिह्वास्वादलोभेन मेषः महानसप्रवेशस्य दुष्परिणामं न जानाति, अतः अवश्यमेव दण्डं प्राप्स्यति।

(2)यूयम् सर्वे वानराः जिह्वास्वादवशाः लोलुपाः, अतः अस्य क्षणिकसुखस्य दुष्परिणांम न अवगच्छथ यत् अनेन युष्माकं विनाशः भविष्यति।

(3)रसनास्वादेन लुब्धाः जनाः लोभस्य दुरन्तं न जानन्ति। तेषाम् लोभवृत्तिः तेभ्यः विनाशकारिणी भविष्यति।

(घ) हा हन्त! हताः वयम्! अवधीरिताः अस्माभिः गुरूजनोपदेशाः अर्थात्

(1) घोटकाः चिन्तयन्ति–'अस्माभिः स्वस्वामिनः आज्ञापालनं न कृतम् अतः वयं दग्धाः।'

(2) सूपकाराः दुःखिनः भवन्ति––'स्वराजादेशस्य पालनं न कृतम् अस्माभिः अतः वयं दण्डिताः भविष्यामः।'

(3) वानराः पश्चात्तापं कुर्वन्ति – 'स्वगुरुजनस्य यूथपतेः उपदेशानाम् अस्माभिः अवहेलना कृता अतः वयं विनाशोन्मुखाः।

6. घटनाक्रमानुसारम् अधोलिखितानि वाक्यानि पुनः लेखनीयानि

क. सूपकारैः नित्यं ताडितं मेषं दृष्ट्वा वानरयूथपः वानरान् राजभवनं त्यक्तुम् अकथयत्।

ख. राजा राजवैद्यम आहूय अश्वरक्षायै न्यवेदयत्।

ग. भूपतेः चन्द्रस्य पुत्राः वानरान् भोज्यपदार्थैः पुष्टिं नयन्ति स्म।

घ. ज्वलन् स मेषः अश्वशालां प्रविष्टः। परिणामतः दग्धाः अश्वाः प्राणत्राणाय अधावन्!

ङ. भयत्रस्ताः कपयःगुरूजनोपदेशस्य अवधीरणातः पश्चातापं कृतवन्तः।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

च. अन्यस्मिन् अहनि स मेषः सूपकारेण अर्धज्वलितकाष्ठेन ताडितः।
छ. राजगृहे बालवाहनयोग्यः मेषः जिह्वालोलुपतया महानसं प्रविश्य भोजनं खादति स्म।
ज. रसनास्वादलुब्धाः मदोद्धताः मर्कटाः तद् राजभवनं त्यक्तुं न स्वीकृतवन्तः।

7. अधोलिखितानि वाक्यानि कः कथयति? कं प्रति कथयति?

	कथनम्	कः	कम्
यथा	मेषेण सह पाचकानां कलहः अस्माकं विनाशकारकः नूनम्।	वानरयूथपतिः	कपीन्
(क)	वयं स्वर्गसदृशान् भोगान् विहाय अटव्यां कषायकटुरूक्षफलानि नैव भक्षयिष्यामः।	....	....
(ख)	रसनास्वादलुब्धाः यूयम् अस्य सुखस्य कुपरिणामं न जानीथ।	....	....
(ग)	हा! दग्धाः मे घोटकाः। कथं रक्षणीयाः।	....	....
(घ)	'हता' वयम्! अवधीरिताःअस्माभिः गुरूजनोपदेशाः।	....	....

8. अधोलिखितपदानां मूलशब्दं विभक्तिं वचनं लिङ्.गच लिखत

	पदम्	**मूलशब्दः**	**विभक्तिः**	**वचनम्**	**लिङ्.गम्**
यथा	नगरे	नगर	सप्तमी	एकवचनम्	नपुंसकलिङ्.गम्
क)	सूपकाराणाम्	....	....	....	....
ख)	भोज्यपदार्थैः	....	....	....	....
ग)	महानसम्	....	....	....	....
घ)	वेदनया	....	....	....	....
ङ.)	हर्म्याणि	....	....	....	....
च)	बह्निना	....	....	....	....
छ)	प्राणत्राणाय	....	....	....	....
ज)	भूमौ	....	....	....	....
झ)	कपयः	....	....	....	....

9. 'क' स्तम्भे विशेषणपदाति 'ख' स्तम्भ विशेष्यपदानि दत्तानि, तेषां समुचित मेलनं कुरूत

'क' स्तम्भः		**'ख' स्तम्भः**	
(1)	कुवाक्यान्तम्	(क)	मेषः
(2)	मदोद्धताः	(ख)	यशः
(3)	ऊर्णाप्रचुरः	(ग)	हर्म्याणि
(4)	कुराजान्तानि	(घ)	यूथपतिः
(5)	मृण्मयम्	(ङ.)	कपयः
(6)	कलहान्तानि	(च)	राष्ट्राणि
(7)	साश्रुनयनः	(छ)	सौहृदम्

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(8) कुकर्मान्तम् (ज) भोजनम्

10. (अ) रेखाङ्ि.कतानि सर्वनामपदानि कस्मै प्रयुक्तानि। समक्ष प्रदत्तस्थाने लिखत

यथा **अस्माकं विनाशकारकः भविष्यति।** **वानरेभ्यः**

(क) तस्य पुत्राः वानरैः सह क्रीडन्ति स्म। ________________

(ख) एतेषां कलहः न वानराणां हिताय। ________________

(ग) सर्वेषां संक्षयः न भवेत्। ________________

(घ) वयम् अटव्यां रूक्षफलानि नैव भक्षयिष्यामः। ________________

(ङ.) अहं तु वनं गच्छामि। ________________

(च) हा! दग्धाः मे घोटकाः। ________________

(छ) अवधीरिताः अस्माभिः गुरूजनोपदेशाः। ________________

(ज) यूयम् अस्य कुपरिणामं न जानीथ। ________________

11. कोष्ठकात् समुचितं पदं विचित्य रिक्तस्थानानि पूरयत

(क) .... नगरे चन्द्रः भूपतिः प्रतिवसति स्म।(कस्याच्चित्/ कस्मिंश्चित्)

(ख) .... एव राजगृहे मेषयूथम् अपि आसीत्। (तस्य/तस्मिन्)

(ग) .... अहनि स मेषः महानसं प्रविशति (अन्यस्मिन्/पूर्वस्मिन्)

(घ) .... क्षितौ प्रलुठतः तृणेषु अग्निज्वालाः समुत्थिताः। (तस्याः/तस्य)

(ङ.) .... भयत्रस्ताः कपयः अचिन्तयन् (सर्वाः/सर्वे)

12. अधः समस्तपदानां विग्रह। उदाहरणम् अनुसृत्य समस्तपदानि तन्नाम च लिखत

	विग्रहाः	समस्तपदानि	समास नाम
यथा	मेषाणां मध्ये	मेषमध्ये	(षष्ठीतत्पुरूषः)
	वानराणां हिताय	....	( )
	प्राणानां त्राणाय	....	( )
	कपीनां मेदसा	....	( )
	राज्ञः आदेशम्	....	( )
	जिह्वायाः लोलुपतया	....	( )
	अश्वानां नाशः	....	( )
	यूथस्य पतिः	....	( )

13. (अ) कर्तृपदे तृतीया विभक्तिः प्रयुज्य कर्मवाच्ये रिक्तस्थानानि पूरयत

	कर्तृवाच्यम्	**कर्मवाच्यम्**
यथा	वानरयूथपतिः उक्तवान्	वानरयूथपतिना उक्तम्।
(क)	**अश्वाः** प्राणत्राणाय इतस्ततः धावितवन्तः	(क) ....प्राणत्राणाय इतस्ततः धावितम्

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ख)	राजादेशं श्रुत्वा **कपयः** चिन्तितवन्तः	(ख) राजादेशं श्रुत्वा .... चिन्तितम्।
(ग)	**सूपकाराः** मेषं काष्ठेन ताडितवन्तः।	(ग) .... मेषः काष्ठेन ताडितः।
(घ)	**कपयः** प्रहस्य तम् उक्तवन्तः।	(घ) .... प्रहस्य सः उक्तः।
(ङ.)	**राजा** वैद्यान् आहूय पृष्टवान्।	(ङ.) .... वैद्याः आहूय पृष्टाः।

(अत्र परिवर्तित क्रियारूपम् अपि च ध्यानपूर्वक दृष्टवा परिवर्तनस्य कारणं चिन्तयत)

13.(आ) स्थूलाङ्कितेषु पदेषु प्रथमाविभक्तिं प्रयुज्य रिक्तस्थानानि पूरयत।

	कर्मवाच्यम्	कर्तृवाच्यम्
यथा	विद्वद्भिः साधू उक्तम्।	विद्वांसः साधु उक्तवन्तः।
(क)	स मेषः **सूपकारेण** ताडितः।	(क) तं मेषं .... ताडितवान्।
(ख)	**वानरयूथपतिना** कपिभ्यः हितं वचनं कथितम्।	(ख) .... कपिभ्यः हितं वचनं कथितवान्।
(ग)	**त्वया** किमिदम् उक्तम्?	(ग) .... किमिदम् उक्तवान्?
(घ)	**अस्माभिः** गुरूजनोपदेशाः अवधीरिताः	(घ) .... गुरूजनोपदेशान् अवधीरितवन्तः
(ङ.)	सपदि **भवता** उपायः क्रियताम्।	(ङ.) सपदि .... उपायं करोतु।

अत्र अपि परिवर्तितं क्रियारूपं ध्यानपूर्वकं दृष्ट्वा परिवर्तनस्य कारणं चिन्तयत।

14. अधः मज्जूषायां प्रत्येकशब्दस्य त्रीणि समानार्थकानि पदानि दत्तानि तानि सहैव लिखत ।

अग्निः, वानरः, घोटकः, भूपतिः, सूपकारः, कपिः, राजाः, वहिः, अश्वः, हयः, मर्कटः, नूपः, अनलः, औदनिकः, पाचकः,।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

त्रयोदशः पाठः

प्राचीनं जलविज्ञानम्

आकाश से गिरने वाला जल, वायु और भूमि के संसर्ग से विभिन्न रंग और स्वाद का हो जाता है। यही जल पृथ्वी के नीचे कितना खोदने पर खारा या मीठा, मृदु या रूक्ष मिलेगा– इसकी गणना संस्कृत के प्राचीन वैज्ञानिकों ने की है। आचार्य वराहमिहिर ने अपनी ''बृहत्संहिता'' के ''दकार्गल'' अध्याय में इसका विवेचन करते हुये बताया है कि जल की शिरायें भिन्न–भिन्न स्थितियों में उपर–नीचे के तलो पर विद्यमान रहती हैं जहां अपार जलराशि न्यूनाधिक रूप में उपलब्ध होती है। मरूप्रदेश में जलभंडार की प्राप्ति के क्या–क्या लक्षण हैं–इसका भी वर्णन उक्त अध्याय में किया गया है। यह पाठ वहीं से उद्धृत है।

धर्म्यं यशस्यं च वदाम्यतोऽहं दकार्गलं येन जलोपलब्धिः।
पुंसां यथाङ्गेषु शिरास्तथैव क्षितावपि प्रोन्नतनिम्नसंस्थाः।।1।।

एकेन वर्णेन रसेन चाम्भश्च्युतं नभस्तो वसुधाविशेषात्।
नानारसत्वं बहुवर्णतां च गतं परीक्ष्य क्षितितुल्यमेव।।2।।

यदि वेतसौऽम्बुरहिते देशे हस्तैस्त्रिभिस्ततः पश्चात्।
सार्धे पुरूषे तोयं वहति शिरा पश्चिमा तत्र।।3।।

चिन्हमपि चार्धपुरुषे मण्डूकः पाण्डुरोऽथ मृत्पीता।
पुटभेदकश्च तस्मिन् पाषाणो भवति तोयमधः।।4।।

जम्बूवृक्षस्य प्राग् वल्मीको यदि भवेत् समीपस्थः।
तस्माद् दक्षिणपार्श्वे सलिलं पुरूषद्वये स्वादु।।5।।

अर्धपुरूषे च मत्स्यः पारावतसन्निभश्च पाषाणः।
मृद् भवति चात्र नीला दीर्घकालं च बहु तोयम्।।6।।

मरूदेशे भवति शिरा यथा तथातः परं प्रवक्ष्यामि।
ग्रीवा करभाणामिव भूतलसंस्थाः शिराः यान्ति।।7।।

उत्तरतश्च मधूकादहिनिलयः पश्चिमे तरोस्तोयम्।
परिहृत्य पञ्चहस्तानर्धाष्टमपौरूषान् प्रथमम् ।।8।।

उत्तरतश्च करीरस्याहिगृहं दक्षिणे जलं स्वादु ।
दशभिः पुरूषैः ज्ञेयं पुरूषे पीतोऽत्र मण्डूकः।।9।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

यदि वा सुवर्णनाम्नः तरोर्भवेद् वामतो भुजङ्गगृहम्।
हस्तद्वये तू याम्ये पञ्चदशनरावसानेऽम्बु।।10।।

क्षारं पयोऽत्र नकुलोऽर्धमानवे ताम्रसन्निभश्चाश्मा।
रक्ता च भवति वसुधा वहति शिरा दक्षिणा तत्र।।11।।

शब्दार्थाः टिप्पण्यश्च

यशस्यम्	यश देने वाला।
दकार्गलम्	जलनिबन्धन (जल को सुरक्षित रखने का स्थान)।
क्षितौ	पृथिवी पर।
प्रोन्नतनिम्नसंस्थाः	ऊॅचे नीचे रूप में स्थित।
रसेन	स्वाद से।
अम्भः	जल।
नभस्तः	आकाश से।
च्युतम्	पतित (गिरा हुआ)।
परीक्ष्यम्	जॉच करने योग्य।
बहुवर्णताम्	बहुत प्रकार के रंगो के रूप में।
वेतसः	वेंत के वृक्ष सें
अम्बुरहिते	पानी से रहित।
सार्धे पुरूषे	डेढ़ पुरूष के शरीर के लम्बाई के बराबर (साढ़े सात हाथ पर)
शिरा	शिरा (नस) जलवाहिनी।
पाण्डुरः	श्वेतपीत (सफेदी लिये हुये हल्का पीला)।
मृत्पीता	पीली मिट्टी ।
पुटभेदकःपाषाणः	कठोर पत्थर।
जम्बूवृक्षस्य प्राक्	जामुन के वृक्ष से पूर्व।
बल्मीकः	बमई (चींटियों द्वारा निकाली गई भुरभुरी मिट्टी का ढेर)।
पुरूषद्वये	दो पुरूषों की लम्बाई के बराबर(.......)
स्वादु	स्वादिष्ट।
मत्स्यः	मछली।
दक्षिणपार्श्वे	दक्षिण की ओर।
पारावतसन्निभः	कबूतर के समान।
मरूदेशे	मरूस्थल में ।
ग्रीवा	गर्दन ।
करभाणाम्	ऊॅटों की ।
भूतलसंस्थाः	पृथ्वी की सतह पर स्थित ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मधूकात्	:	महुए के पेड़ से ।
उत्तरतः	:	उत्तर की ओर।
अहिनिलयः	:	सॉप का घर (बमई)।
दशभिः पुरूषैः	:	दस पुरूषों के बराबर लम्बाई ।
सुवर्णनाम्नः तरोः वामतः	:	अमलतास के वृक्ष के बाई ओर।
हस्तद्वये	:	दो हाथ की दूरी पर ।
याम्ये	:	बाईं ओर।
पच्चदशनरावसाने	:	पन्द्रह पुरूषों की लम्बाई के बराबर की गइराई पर (पच्चहत्तर हाथ की गइराई पर)।
अर्धमानवे	:	आधे मनुष्य की लम्बाई के बराबर (ढाई हाथ)।
नकुलः	:	नेवला।
ताम्रसन्निभः	:	ताम्बे के रंग के समान।
अश्मा	:	पत्थर।
भुजगङ्गृहम्	:	सांप का घर (बमई)।

अभ्यासः

1. संस्कृतभाषया उत्तराणि लिखत
   (क) 'दकार्गलम्' शब्दस्य कः अर्थः?
   (ख) स्वादु जलं कुत्र (कीदृश्यां भूमौ) लभ्यते ?
   (ग) कीदृशी सा मूभिः यत्र बहुकालस्थितम् अत्यधिकं च जलं प्राप्यते ?
   (घ) यत्र करीरवृक्षस्य उत्तरतः अहिगृहं स्यात् तत्र किं वैशिष्ट्यम् ?
   (ङ.) क्षारं जलं कीदृशे स्थाने प्राप्यते।
2. अयं पाठः कस्मात् ग्रन्थात् गृहीतः? किं च तद्ग्रन्थस्य वैशिष्ट्यम् ?
3. अस्य पाठस्य सारांशः संक्षेपेण लेखनीयः ?
4. अस्मिन् पाठे जलविज्ञानविषये कानि रहस्यानि वर्णितानि ?
5. निम्नलिखितानां शब्दानाम् आशयः प्रकाशनीयः।
   वल्मीकः, अर्धपुरूषः, पारावतसन्निभः, ग्रीवा, करभाणामिव, अर्धाष्टमपौरूषान्
   भुजगङ्.गृहम ताम्रसन्निभः, अश्मा, पुटभेदकः, पाषाणः, पच्चदशनरावसाने।
6. निम्नांकितानां पदानाम् अर्थमेलनं कुरूत

क्षितौ	पाषाणः
च्युतम	आकाशात्
नभस्तः	पृथिव्याम्
पुटभेदकः	स्वादिष्टः
स्वादु	कठोरः
अश्मा	पतितम्

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7. अधोलिखितयोः श्लोकयोः भावार्थो लेख्यः

यदि वेतसोऽम्बुरहिते देशे हस्तैस्त्रिभिस्ततःपश्चात्।
सार्धे पुरूषे तोयं वहति शिरा पश्चिमा तत्र।।
चिह्नमपि चार्धपुरूषे मण्डूकः पाण्डुरोऽथ मृत्पीता।
पुटभेदकश्च तस्मिन् पाषाणों भवति तोयमधः।।

विशेष

(1) **दकार्गलम** – 'दक' शब्द 'उदक' का लघु रूप है, जिसका अर्थ है 'जल'। अर्गला शब्द का अर्थ है 'सांकल' (किवाड बन्द करने का उपकरण)। इस प्रकार 'दकार्गल' का अर्थ हुआ जल को सुरक्षित रोके रखने व नियंत्रित (निबन्धित) करने का विज्ञान।

(2) **पुरूष** – इस पाठ में पुरूष शब्द पारिभाषिक है। यहां पुरूष शब्द का अर्थ है – पुरूष के शरीर के बराबर परिमाण। 'पुरूष परिमाण ' से अभिप्राय है– हाथ ऊँचा करके खडे हुए पुरूष के बराबर लम्बाई, जिसकों पॉच हाथ (5 cubits) के बराबर माना गया है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चतुर्दशः पाठः

सरस्वती श्रुतिमहती महीयताम्

डॉ. बालकृष्ण तिवारी
(संकलन)

प्रस्तुत पाठ संस्कृत के प्रसिद्ध आधुनिक विद्वान पं. सरस्वती प्रसाद चतुर्वेदी (वि.सं. 1959) कृत ''सारस्वत् दर्शनम्'' ग्रन्थ से उद्धृत है। चतुर्वेदी जी संस्कृत के प्रसिद्ध आधुनिक निबन्धकार है,'' सारस्वत सन्दर्शनम्'' में उनके अनेक संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी के निबन्धों का संग्रह है। प्रस्तुत पाठ में विद्वान लेखक ने संस्कृत भाषा की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए निम्नांकित शुभकामना व्यक्त की है।

यावत्तिष्ठन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावत् संस्कृत भाषेयं भारते प्रचरिष्यति।।

यस्याः संस्कृतभाषायाः संरक्षणार्थम् उन्नयनार्थम् च धृतव्रताः भवन्तः तस्याः गौरवं वैशिष्ट्यं जगतः विद्यारसिकैरद्यतनेकाले निःसंशयमनुमन्यते स्वीक्रियते च। योरोपदेशे यदा संस्कृतग्रन्थानाम् परिचयो जातः तदा तत्रत्यैर्विद्ज्जनैः साश्चर्यं सामोदं च तेषां स्वागतं कृतम्। भारतीयदर्शनशास्त्रस्या– धारभूतानां दशोपनिषदाम् परम्पराक्रमप्राप्तिमपि अनुवादं पठित्वा प्रसिद्वजर्मनदार्शनिकः शापनहारः स्वजीवनस्य धन्यतां मेने। प्रथितयशा गेटेमहाकविः शाकुन्तलनाटकस्य फ्रेन्चभाषायाम् अनुवादं दृष्ट्वा प्रशंसोद्गारं प्रकटयामास। तस्य संस्कृतभाषामयं श्लोकानुवादः केनचिद् विदुषाकृतोऽस्ति।

वासन्तं कुसुमं फलं च युगपद् ग्रीष्मस्य सर्वं च यत्
यच्चान्यन्मनसो रसायनमतः सन्तर्पणं मोहनम्।
एकीभूतभभूतपूर्वमथवा स्वर्लोकभूलोकयो–
रैश्वर्यं यदि वाञ्छसि प्रियसखे ! शाकुन्तलं सेव्यताम्।।

ससायणभाष्यस्य ऋग्वेदस्य सम्पादकः प्रख्यातो जर्मनसंस्कृतज्ञः मोक्षमूलरः(मैक्समूलरः) पुनर्जन्मसिद्वान्ते रिव्रस्तधर्मावलम्बित्वेन अधृतविश्वासोऽपि आत्मनो भाविजन्म वाराणस्यां वैदिककुले समकाङ्क्षत।

किम्बहुना संस्कृतभाषायां ग्रन्थरत्नेषु यद् यत् शब्दगतमर्थगतं वा माधुर्यतद्रसास्वादनेन प्रल्हादितचेतसः सर्वेऽपि विश्वस्य विद्वज्जनाः अस्या भाषायाः भूरि भूरि प्रशंसां कुर्वन्ति। संस्कृतभाषायाःपरिचयं लब्ध्वा ग्रीकलैटिनादिपुरातनभाषाभिः सह सादृश्यं निरीक्ष्य पाश्चात्यविद्वांसः फाइलालॉजी (भाषाशास्त्रम्) इति नूतनस्य शास्त्रस्य अवतारम् अकुर्वन्।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एवमेव वेदेषु इन्द्रादिदेवविषयकाणि सूक्तानि, तथा पुराणेषु प्रतिपादितदेवकथाः सम्यगाकलय्य योरोपदेशीयैः मनीषिभिः ' माइथालाजी' (देवताशास्त्रम्) इत्यपरस्य नवीनशास्त्रस्य प्रादुर्भावं कर्तुमपारि। तदेवं प्रकारेण संस्कृतभाषां प्रति विदेशीया अपि स्वाधर्मणताप्रकाशने परमं प्रमोदमावहन्ति। ततः किं वक्तव्यमस्मद्देशविषये। भारतवर्षे तु अतिप्राचीनकालादारभ्य अद्यपर्यन्तम् अस्या अध्ययनाध्यापनपरम्परा अक्षुण्णरीत्या प्रवहमाना दृश्यते। संस्कृत भाषा भारतीयसंस्कृतेरात्मैव। (1) अस्या एव संरक्षेणन भारतीयत्वस्य रक्षकमिति निः सन्दिग्धं वचः। (2) सर्वाङ्गीणविकासं कामयमानानाम् देशहितैषिणाम् प्रचलितेषु बहुविधेषु अत एव स्वातंत्र्यसूर्योदये जाते सर्वासु दिक्षु देशस्य सर्वांङ्गीविकासं कामयमानानाम् देशहितैषिणाम् प्रचलितेषु बहुविधेषु संस्कृतभाषाप्रचार इत्येकोऽस्ति अभिनन्दनीयः प्रयत्नः।

भारतीयसंस्कृतिपर्यालोचनेन विदितमेव स्यात् सर्वेषांयद् भारतीय संस्कृतेरैक्यसंस्थापने संस्कृतभाषा प्रधानतमं साधनम्। अस्मद्धर्म कृत्यानि संस्कृतमंत्रोच्चारणपूर्वकं क्रियन्ते। समस्तदेशे–ऋग्वेदश्रंदन लादारभ्य अद्ययावत् ' गृभ्णामि ते सौभगत्वाय हस्तम्' इति वैदिक–मंत्रपाठः भारतीयविवाहस्य अच्छेद्यत्वं प्रतिष्ठापयति। अधुनापि स्नानोत्तरं सर्वेऽपि आस्तिकभारतीयाः तमेवैकं गायत्रीमंत्रं जपित्वा स्वबुद्धेर्विकासाय भगवन्तं सवितारम् प्रार्थयन्ते। किंबहुना, स्नानात् पूर्वंयदा सः–

> गंगे च यमुने चैव गोदावरि! सरस्वति।
> नर्मदे! सिन्धुकावेरि! जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरू ।।

इति मंत्रेण जलाभिमंत्रणं करोति तदा सः समस्तराष्ट्रस्यैकत्वमखण्डत्वं च परोक्षरूपेण दृढ़ीकरोति। अतः सर्वथा संशयातीत इदं वचः यत् संस्कृतभाषादेशस्यैक्यस्य भारतीयसंस्कृतेरभिन्नतायाश्चप्रतीकरूपा। अत एवास्याः भाषायाः परिपोषण संवर्धनम् राष्ट्रसंस्कृत्योरेकत्वभावनायाः परिपोषणम्– सवर्धनं चेति सर्वसम्मतम्!

सत्यप्येवंविधेऽकाट्यसाक्ष्ये कंचन नवीनपक्षपातान्धितधियः संस्कृतभाषां मृतेत्युद्घोष्य अस्याः प्रचारम् अवाच्छनीयम् मन्यन्ते इति भृशं विषीदति चेतः। तेषां मनसि ' मृता' इति शब्दस्यार्थोऽतिसंकुचित इति मन्ये। सर्वतः प्रसरति सर्वोदयमतवादे किं महात्मागांधी 'मृत' इति वक्तुं शक्यते । कालधर्मेण नष्टशरीराऽपि पूर्वजा जीवत्सु पुत्र–पौत्रादिषु जीवन्त्येव। 'आत्मा वै पुत्र नामासि' इति श्रुत्या पुत्रः पितुरभिन्नः। 'प्रजातन्तुमाव्यवच्छेत्सीः' इति उपनिषद्वाक्यं स्पष्टतया सूचयति यद् अव्यवच्छिन्नतन्तुसन्ताने पूर्वगताः तन्तवो न सर्वथा विलुप्ताः। तथात्वे तु तन्तुसन्तान एव व्यवच्छिद्यते। एवं च यावत्काल–पर्यन्तं संस्कृतोद्भूताः संस्कृतप्रभाविता वा विभिन्ना भारतीयभाषा लोके प्रयुज्यन्ते, यावच्चास्माकम् धार्मिककृत्यानि संस्कृतमंत्रैः सम्पाद्यन्ते, यावच्च भारतीयसंस्कृतिरात्मनोऽस्तित्वं जगति धारयति तावत्कालपर्यन्तम् संस्कृतभाषा मृतेतिकथनम् वदतो व्याघात एव।

यथा सम्पादितशुभकृत्याः जनाः विनष्टेऽपि भौतिके देहे स्वयशः कायेन चिरं जीवन्ति, एवमेव उच्चविचारप्रकाशनक्षमा अखिलभारतीयप्रसिद्धिकामानाम् ग्रन्थकाराणामेकमात्रसाधनरूपा संस्कृतभाषापि जीवत्येव । जनभाषा म्रियते न बुधभाषा। उदात्तभावप्रकाशनसामर्थ्यं वहन्ती, शास्त्रीयविषयचर्चापटीयसी नवनवार्थजातं बोधयितुं स्वाक्षयभाण्डारात् नवशब्दनिर्माणशक्तिं धारयन्ती संस्कृतभाषा न कदापि मृतेति शब्दप्रयोगमर्हति।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

यावत्तिष्ठन्ति गिरयः सरितश्च महीतले।
तावत् संस्कृतभाषेयं भारते प्रचरिष्यति।।''

कठिन शब्दार्थाः

संरक्षणार्थम् = संरक्षण के लिये। उन्नयनार्थं = उन्नति के लिये । धृतव्रताः = व्रत को धारण करने वाला। विद्या रसिकैः = विद्या प्रेमी। प्रथितयशाः = विख्यात यशवाला।

वासन्त = बसन्त ऋतु का। युगपद = एक साथ। सन्तर्पणम् = संन्तृप्त करने वाला। मोक्षमूलरः = मोक्षमूलर का (संस्कृताद्वन्दनाम) मोक्ष मूलं राति ददाति इति मोक्षमूलरः प्रसिद्व जर्मन संस्कृत विद्वान, मेक्समूलर, ख्रिस्तधर्मा = ईसाई धर्म। समकाङ्क्षत = चाहता था। किं बहुना = क्या अधिक। प्रल्हादित चेतसः = प्रसन्नचित। परिपोषण = रक्षा। संवर्धन = विकास। प्रजातन्तुमाव्यच्छेसीः = प्रजा तन्तु मत तोड़ो पटीयसी = निपुण।

अभ्यासाः

लघुत्तरात्मक प्रश्नाः—

1. 'महाकवि' गेटे शाकुन्तल—नाटकस्यानुवादं कस्यां भाषायां कृतवान् ?
2. मोक्षमूलरः कः आसीत् ?
3. भारतीय संस्कृतेरात्मा का भाषा ?
4. संस्कृत भाषायाः विश्वस्य काभिः भाषाभिः सादृश्यं वर्तते?
5. देवकथां अधिकृत्य कस्य नवीन शास्त्रस्य प्रादुर्भावः जातः ।

निबन्धात्मक प्रश्नाः—

1. संस्कृत—भाषया राष्ट्र—संस्कृतेः का भावना परिपोषिता?
2. संस्कृत भाषा 'मृता' भाषा कथं कथ्यते?
3. संस्कृत भाषा मृता न लेखकेन कथं परिपुष्टितम् ?
4. संस्कृत भाषायाः विकासाय किं करणीयम्?

व्याकरणात्मक प्रश्नाः

1. अधोलिखित पदों के धातु, लकार, पुरुष एवं वचन लिखिये—

	मदम	धातुः	लकारः	पुरुषः	वचनम्
1.	अस्ति	—	—	—	—
2.	क्रियन्ते	—	—	—	—
3.	मन्यन्ते	—	—	—	—
4.	क्रियते	—	—	—	—
5.	भवन्ति	—	—	—	—
6.	कुर्वन्ति	—	—	—	—

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7.	दृश्यते	–	–	–	–
8.	अकुर्वन्	–	–	–	–

2. निम्नलिखित पदों के शब्द विभक्ति और वचन लिखिये –

क्र.	पद	शब्द	विभक्ति	वचन
1.	सखे	–	–	–
2.	वेदेषु	–	–	–
3.	किम्	–	–	–
4.	मनसि	–	–	–
5.	सर्वेषां	–	–	–

3. निम्नाङ्कित पदों के प्रत्यय लिखिये –
   1. पठित्वा
   2. उद्घोष्य
   3. दृष्ट्वा
   4. कृतम्
   5. प्रवाहमान
   6. अभिनन्दनीयः

4. निम्नाङ्कित पदों के समास विग्रह कर समासों के नाम लिखिये –
   1. विद्यारसिकैः
   2. प्रथितयशा
   3. अवच्छनीय
   4. पुत्रपौत्रादि
   5. जनभाषा

5. निम्नाङ्कित शब्दों के आधार पर वाक्य बनाइये–
   1. मन्यते –
   2. यावत् –
   3. तावत् –
   4. सेव्यताम् –

6. निम्नाङ्कित पदों के वचन परिवर्तन कीजिये।
   1. कुर्वन्ति
   2. मन्यते
   3. अविहन्ति
   4. करोति
   5. छिद्यते

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

7. अधोलिखित पदों की विभक्तियों में परिवर्तन कीजिये।
   1. रसिकैः (प्रथमा – एकवचन)
   2. लोके (प्रथमा – एकवचन)
   3. रत्नेषु (चतुर्थी – एकवचन)
   4. स्नानात् (प्रथमा – एकवचन)
   5. देशे (पञ्चमी – एकवचन)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पंचदशः पाठः

दण्डिनः पदलालित्यम्

श्री राजमूर्ति पाण्डेय
(लेखक)

महाकविः दण्डी, संस्कृत–साहित्ये, पदलालित्याय विशेष–रूपेण प्रसिद्धः अस्ति। सुबन्धु सृदृशीं श्लेषपूर्णा रचनां वा बाणवत् आनुप्रासिकीं दीर्घवाक्ययुतां रचनां विहायासौ पदेषु लालित्य–विन्यासाय प्रायतत्। फलतः सहृदय–पाठकेभ्यः अस्य रचना फुल्लकुसुमित–तडागवत् मनोरञ्जयति, आनन्दार्णवे निमज्जयति च ।

अनेन स्वरचनासु लघुभिःभावानुरूपैः ललितवाक्यैः वर्ण्यविषयानां चित्राड्किंतः। शब्दार्थाः तदिगिङ्तेन अर्थाभिव्यक्तिः कुर्वन्तः रसिकान् आश्चर्यचकितं कुर्वन्ति। सरसा, सुगमा, मनोरमा, प्रसाद गुणयुक्ता चास्य शैली। अवलोकनीयः राजहंसोपम राज्ञः राजहंसस्य चित्रणम्–'' अनवरतयाग–दक्षिणारक्षित शिष्ट–विशिष्ट विद्यासंभारभासुरभूसूरनिकरः– राजहंसो नामधनदर्पकन्दर्पसौन्दर्य सौंदर्यहृद्य निखिद्यरूपो भूपो बभूव।'' अत्र श्रुतिमधुराऽनुप्रासयुता ललितपदयोजना दर्शनीया। लालित्ये घ्वन्यात्मकता शोभां विद्धति।

राज्ञः राजहंसस्य महिष्यः वसुमतेः वर्णनमतीवरोचकम्– '' तस्य वसुमती नाम सुमती लीलावती कुलशेखरमणी रमणी वभूव। अत्राङ्किता पुनरावृत्तिः पदेषु लालित्यं सृजति। 'दण्डी' पदेषु लालित्यविघानाय अनुप्रास–यमक– पुनरावृत्यादीनां विधानं चकार। यमकाश्रितं कुमाराणां जय–यात्रा वर्णनम् अवलोकनीयम्– ''कुमारामाराभिरामारामाद्यपौरुषारुषा भस्मीकृतारयोपहसित समीरणारणाभियानेन यानेनाभ्युदयाशंसराजानमकार्षुः।'' 'धर्मवर्धनस्य दुहितुः वर्णने' नवमालिका ' पदप्रयोगः द्वयोः लालित्यं योजयति तद्यथा–'' तस्य दुहिता प्रत्यादेश इव श्रियः,प्राणा इव कुसुमबन्धनः, सौकुमार्यबिडम्वित –नवमालिका, नवमालिका नाम कन्यका''। सानुप्रास पदावली पश्यन्तु–'' सखे सैषा सज्जनाचरिता सरणिः यदणीयसि कारणेऽनणीयानादरः संदृश्यते''।

अस्तु दण्डिनः काव्ये, शब्दयोजना सौष्ठवं अनुप्रासमाधुर्यं, यमकालड्.कार प्रयोगः, वर्णन वैशद्यं, एकस्मिन् संपूर्णे उच्छवासे ओष्ठ–वर्णनां परिहारः, रमणीयं वर्णनम् उक्ति– प्रत्युक्तिभ्यां प्रशस्तं च पदलालित्यं दृश्यते। अत एवोच्यते'' दण्डिनः पदलालित्यम्।''

व्याकरणम्

शब्दार्थाः

बाणवत् = महाकवि बाणभट्ट की तरह, आनुप्रासिकीम् = अनुप्रास अलड्.कार पूर्ण, विहाय = छोड़कर, विन्यासाय = निहित करने के लिये, आनन्दार्णव = आनन्दरूपी समुद्र में, निमज्जयति = डुबोता है, याग = यज्ञ कन्दर्प– कामदेव, श्रुतिमधुरा = कर्णप्रियः महिष्यः = रानी के, सुमती = सुबुद्धिपूर्ण, चकार = किया ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(2) समासाः

श्लेषपूर्णा = श्लेषेन पूर्णा (तत्पुरूष), आनन्दार्णवे आनन्दस्य अर्णवे(तत्पुरूष), यागदक्षिणारक्षित = यागेन दक्षिणयाच रक्षितः (द्वन्द, तत्पु.), कुलशेखरमणिः = कुलस्य शेखरः स एव मणिः(कर्म.)। अनुप्रास–यमक–पुनरावृत्यादीनां = अनुप्रासः च यमकश्चपुनरावृत्तिश्च तदादीनाम् (द्वन्द)

(3) संधिः

विहायासौ = विहाय+असौ (दीर्घ), तदिड्गितेन = तत्.+इग्डि.तेन (व्यञ्जन), राजहंसोपम् = राजहंस+ उपमा (गुण), मधुराऽनुप्रासयुता = मधुरा.+अनुप्रासयुता (पूर्वरूप), प्रत्यादेशः = प्रति + आदेशः यदणीयसि = यत् + अणीयसि (जश्त्व)। अत एवोच्यते = अतः.+एव+उच्यते (विसर्ग,गुण)।

(4)

प्रश्नानामुत्तराणि लिख्यताम्–

1. दण्डिनः संस्कृत साहित्ये किम् प्रसिद्धम ?
2. सुबन्धोः रचना कीदृशी ?
3. वाणस्य रचनायाः किम् वैशिष्टयम् ?
4. सहृदयाः दण्डिनः रचनां कथमनुभवन्ति् ?
5 दण्डिनः रचनायाः किम् वैशिष्टयम् ?
6. केषामलकड.राणां दण्डी काव्ये न्ययोजयत् ?
7. एकस्मिन्नुउत्छ्वासे केषां वर्णानां प्रयोगः दण्डिना न कृतः ?
8. दण्डिनः कौव्यस्य नाम लिख्यताम् ?

(5) शब्दरूपाणां विभक्तिवचनानि लिखतु?

(क) दण्डिनः (ख) एषा (ग) दुहिता (घ) महाकविः (ड.) अस्य (च) अनेन (छ) राज्ञः।

(6) धातुरूपाणां धातुलकार–पुरूष वचनानि लिख्यताम् ?

(क) अस्ति, (ख) प्रायतत्, (ग) कुर्वन्ति (घ) विदधाति (ड.) योजयति (च) संदृश्यते (छ) पश्यन्तु।

(7) पाठमधिकृत्य कतिपय अव्ययानि चिनोतु ?

(8) दण्डिनः विषये सप्तवाक्यानि लिख्यताम् ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

षोडशः पाठः

विदुरनीतिः

संकलित
श्रीमती दीप्ति देविकर

आत्मज्ञानं समारम्भस्तितिक्षा धर्मनित्यता।
यमर्थान्नापकर्षन्ति स वै पण्डित उच्यते।।1।।

निषेवते प्रशस्तानि निन्दितानि न सेवते।
अनास्तिकः श्रद्दधान एतत् पण्डितलक्षणम्।।2।।

क्रोधो हर्षश्च दर्पश्च ह्रीः स्तम्भो मान्यमानिता।
यमर्थान्नापकर्षन्ति सं वै पण्डित उच्यते।।3।।

यस्य कृत्यं न जानन्ति मन्त्रं वा मन्त्रितं परे।
कृतमेवास्य जानन्ति सं वै पण्डित उच्यते।।4।।

यस्य कृत्यं न विघ्नन्ति शीतमुष्ण भयं रतिः।
समृद्धिरसमृद्धिर्वास वै पण्डित उच्यते।।5।।

यस्य संसारिणी प्रज्ञा धर्मार्थावनुवर्तते।
कामादर्थं वृणीते यः स वै पण्डित उच्यते।।6।।

यथाशक्तिः चिकीर्षन्ति यथाशक्ति च कुर्वते।
न किञ्चिदवमन्यन्ते नराः पण्डितबुद्धयः।।7।।

क्षिप्रं विजानाति चिरं श्रृणोति विज्ञाय चार्थं भजते न कामात्।
नासम्पृष्टो व्युपयुङ्क्ते परार्थे तत् प्रज्ञानं प्रथमं पण्डितस्य।।8।।

नाप्राप्यमभिवाञ्छंन्ति नष्टं नेच्छन्ति शोचितुम्।
आपत्सु च न मुह्यन्ति नराः पण्डितबुद्धयः।।9।।

निश्चित्य यः प्रक्रमते नान्तर्वसति कर्मणः।
अबन्ध्यकालो वश्यात्मा स वै पण्डित उच्यते।।10।।

आर्यकर्मणि रज्यन्ते भूतिकर्माणि कुर्वते।
हितं च नाभ्यसूयन्ति पण्डिता भरतर्षभ।।11।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

न हृष्यत्यात्मसम्माने नावमानेन तप्यते।
गाङ्गो ह्रद इवाक्षोभ्यो यः स पण्डित उच्यते।।12।।

तत्त्वज्ञः सर्वभूतानां योगज्ञः सर्वकर्मणाम्।
उपायशो मनुष्याणां नरः पण्डित उच्यते।।13।।

श्रुतं प्रज्ञानुगं यस्य प्रज्ञा चैव श्रुतानुगा।
असम्भिन्नार्यमर्यादः पण्डिताख्यां लभेत सः।।14।।

शब्दार्थः –

(1) आत्मज्ञानं = अपना ज्ञान। समारंभ = प्रारंभ । तितिक्षा = सहन शीलता। धर्मनित्यता = सदाचरण के साथ। अर्थात् = पुरूषार्थ से । न अपकर्षन्ति = गिरता नहीं। पण्डितः = सद्विवेकी।

(2) प्रशस्तानि = लोकशास्त्र सम्मत कर्म । निषेवते = आश्रय लेते है। श्रद्धधानः = श्रद्धावान्। अनास्तिकः = ईश्वर पर विश्वास करने वाला।

(3) दर्पः = मद। ह्रीः = लज्जा। स्तम्भः = उदारता। मान्यमानिता = अपने आप को श्रेष्ठ समझने वाला।

(4) मन्त्रितं = विचार करने पर । मन्त्रं = रहस्य।

(5) समृद्धि = संपति। असमृद्धिः = विपदा । वै = निश्चय ही

(6) अनुवर्तते = अनुसरण करता है। कामात् = अभिलाषा से

(7) चिकीर्षन्ति = करने की इच्छा करते है । न अवमन्यते = तिरस्कार नहीं करते।

(8) क्षिप्रं = शीघ्र । विजानाति = जानते है। चिरं = हमेशा । श्रृणोति = सुनते है। असम्पृष्टः= यथावत् प्रश्न किये जाने पर । व्युपयुङ्क्ते = वाणी व्यय नहीं करते अर्थात् नहीं बोलते। प्रज्ञानं = लक्षण है।

(9) नष्टं = अगोचर । नेच्छन्ति = इच्छा नहीं करते। आपत्सु = विपत्ति में।

(10) प्रक्रमते = कार्य आरंभ करते है। कर्मणः = कार्य के। अन्तः = मध्य में । अवध्यः = सफल। वश्यात्मा = जितेन्द्रिय, जिसकी आत्मा वश में हो ।

(11) आर्यकर्माणि = सत्पुरूषोचित कार्य । रज्यन्ते = प्रसन्न करती है। भूतकर्माणि = ऐश्वर्य के लिये कार्य करते है। भरतर्षभ = हे भरतकुल श्रेष्ठ।

(12) ह्रष्यति = खुशी का प्रकाश भरतर्षभ। न अवमानेन = तिरस्कार होने पर भी नहीं । गाङ्गः = गंगा संबंधी। अक्षोभ्यः = अविचलित

(13) तत्वज्ञः = तत्व (सार) को जानने वाला । सर्वभूतानि = संपूर्ण जगत के प्राणी पदार्थ आदि। योगज्ञः = उपाय, रचना, आदि जानने वाला । उपायज्ञः = उपाय जानने वाला।

(14) श्रुतं = शास्त्र का श्रवण किया। प्रज्ञानुगं = बुद्धि के अनुसार । श्रुतानुगा = शास्त्र के अनुसार। असम्भिन्न = अतिक्रान्त । आर्य = सत्पुरूष । मर्यादा = स्थिरता।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(1) कः पण्डितः उच्यते ?
(2) पण्डितः किम् न सेवते ?
(3) पण्डितम् के न अपकर्षन्ति ?
(4) पण्डिताः कस्य कृत्यं न विघ्नन्ति ?
(5) पण्डिताः कं जानन्ति ?
(6) पण्डितः कान् अनुवर्तते ?
(7) पण्डितस्य प्रथमं प्रज्ञानं कः ?
(8) कः जनः आपत्सु न मुह्यति ?
(9) पण्डितः कथं न तप्यते ?
(10) तत्वज्ञः केन कारणेन पण्डितः उच्चते ?
(11) पण्डिताख्या कः लभते ?

रिक्त स्थानानि पूरयतः

1. यम् .... न अपकर्षन्ति
2. प्रशस्तानि निन्दितानि न .... ।
3. अनास्तिक श्रद्धधान एतद् .... ।
4. क्रोधो हर्षश्च दर्पश्च ह्रीः .... मान्यमानिता ।
5. कृतमेवास्य .... स वै पण्डित उच्यते ।
6. यस्य संसारिणी .... धर्मानुवर्तते।
7. न .... अवमन्यन्ते नराः पंडितबुद्धयः।
8. .... च न मुह्यति नराः पण्डित बुद्धयः।
9. निश्चित्य यः .... नान्तर्वसति कर्मणः ।
10. ....सर्व भूतानां योगज्ञः सर्वकर्मणाम्।
11. श्रुतं प्रज्ञानुगं यस्य .... चैव श्रुतानुगा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सप्तदशः पाठः

साधुवृत्तिं समाचरेत्

श्री ईश्वर प्रसाद तिवारी
संकलन

अस्ति कर्मपुरनाम्नि नगरे प्रच्छन्नभाग्य–नामधेयः कश्चित् कुमारः। बाल्ये वयसि विद्यापराङ्–मुखः स केनचित् दुष्टबुद्धिनाम्ना चौरेण सह चौर्यकर्मणि निरतः सञ्जातः। एकदा स दुष्टबुद्धिना सार्धं कस्यचित् श्रेष्ठिनः गेहे धनहरणार्थं ग्रामान्तरं प्रस्थितः।

अथ व्रजन्तौ तौ गर्तसंकुले मार्गे क्रीडतः कांश्चित् बालकान् प्रेक्ष्य अवदताम्–भो भो बालकाः! कथमत्र नतोन्नते विषमे मार्गे क्रीडथ ? यदि कश्चित् गर्ते पतेत् तर्हि स विकलाङ्गो भूत्वा चिरे क्लेशम् अनुभवेत्। तच्छ्रुत्वा तेषु कश्चित् उद्दण्डः बालकः उवाच –अयि भो! यद्येवं तर्हि कथं भवन्तौ सुपथं परित्यज्य अनेन कुपथेन गन्तुं प्रवृत्तौ ? अपि इदम् श्रेयस्करम् ?

अनेन वचसा प्रतिहतान्तकरणः प्रच्छन्नभाग्यः अचिन्तयत्– किम् इदं वचनं विशेषेण माम् एवं लक्ष्यीकरोति ? अहो! कुमार्गम् आश्रितस्य मम कीदृशी इयं क्लेशपरम्परा। गुरूपदेशेन इव अनेन बालवचसा मम चक्षुषी समुन्मीलिते। अद्यप्रभृति पापपथं त्यजामि इति विचिन्त्य मित्रं दुष्टबुद्धिम् अवदत् 'सखे! यदि मां मित्रस्थाने परिगणयसि, तर्हि साधुजनगर्हितम् इमं पन्थानं त्यजतु भवान्।'

दुष्टबुद्धिः तु तस्य सद्वचनानि तिरस्कृत्य ग्रामाभिमुखं प्राचलत्। प्रच्छन्नभाग्यः तु समुपजातविवेकः स्वगृहं प्रतिनिवृत्तः।

गृहे तस्य भार्या सपदि समागतं पतिं दृष्ट्वा अपृच्छत्– आर्य! किं सर्वगतं कुशलं वर्तते? अयथाकालं समागतोऽसि? सम्प्रति धर्ममतिः सः पश्चात्तापेन दग्धमानसः सर्वं वृतान्तं निवेद्य सकरुणम् उच्चैः अक्रन्दत्। बुद्धिमती सा अवदत्–अलं चिन्तया। आपदां तरणिः धैर्यम्। इदानीं विषादं त्यक्त्वा उद्यमः क्रियताम्।

क्रन्दनं वर्धते तस्य, नान्तं समधिगच्छति।
व्यसनं प्राप्य यो मोहात् केवलं परिदेवयेत्।।

जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः पूर्यते घटः।
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च ।।

एवं बहुविधम् उपदेशं श्रुत्वा शान्तचित्तः सः कस्यचित् कृषकस्य शस्यक्षेत्रे हलकार्यं कर्तुं प्रारभत्, श्रमेण च शनैःशनैः प्रभूतं धनम् अर्जितवान्।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अथ पूर्वमित्रं दुष्टबुद्धिः प्रच्छनभाग्यस्य धनागमवृत्तान्तं श्रुत्वा कदाचित् मध्यरात्रे तस्य एव गृहे चौर्यार्थं सन्धि– खननसुयोगम् विलोकयन् स्थितः। तस्मिन्नेव काले सुप्तोत्थितः प्रच्छनभाग्यः सम्भ्रान्तचित्तः स्वपत्नीं सम्बोध्य उवाच– अहो विचित्रः स्वप्नो मया दृष्टः। अस्माकं क्षेत्रे अश्वत्थतरुमूले सुवर्णपूरितः कलशः विद्यते इति। तत्छ्रुत्वा परद्रव्ये अनासक्ता सा न्यवेदयत् – नाथ ! विरम अस्माद् लोभात्।

दुष्टबुद्धिः तु तयोः वार्ताम् श्रुत्वा झटिति एव क्षेत्रं गतः। तत्र अश्वत्थमूलं खनित्वा तं सुवर्णकलशं प्राप्तवान्। यदा स तस्य आवरणम् अपसारयति तदैव भयड्.करम् एकं विषधरं फूत्कारं कुर्वन्तं पश्यति। भीतः स कलशं पुनः आवृत्य तम् च आदाय मित्रस्य गृहं समागतः। स्वमित्रं सर्पेण मारयितुम् इच्छन् सः भित्तौ सन्धिं प्रकल्प्य तन्मध्यतः कलशं गृहाभ्यन्तरे क्षिप्तवान्।

विचित्रा खलु दैवगतिः। पतितात् कलशाद् बहिः निर्गत्य विषधरः तमेव दुष्टबुद्धिं दष्टवान्! कलशपातशब्देन प्रबुद्धौ तौ दम्पती आश्चर्येण प्रचुरमणिमाणिक्यानाम् आभयाभासमानं निजगृहं दृष्ट्वा परस्परम् अवलोकयन्तौ अतिष्ठताम्।

अतः उच्यते – **पापिनाञ्च सदा दुःखं, सुखं चै पुण्यकर्मणाम्।**
एवं स्थिरतरं ज्ञात्वा साधुवृत्तिं समाचरेत्।।

अन्वयाः

1. यः व्यसनं प्राप्य मोहात् केवलं परिदेवयेत् तस्य क्रन्दनं वर्धते, अन्तं (च) न समधिगच्छति।
2. (यथा) जलबिन्दुनिपातेन क्रमशः घटः पूर्यते (तथैव) सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च सः(एव) हेतुः।
3. सदा पापिनां दुःखं पुण्यकर्मणां च वै सुखम्। एवं स्थिरतरं ज्ञात्वा साधुवृत्तिं समाचरेत्।

अनुप्रयोगः

1. अधोलिखितान् प्रश्नान् एकपदेन उत्तरत (मौखिक–अभ्यासार्थम्)?
   क) प्रच्छन्नभाग्यः कुत्र अवसत् ?
   ख) प्रच्छन्नभाग्यः कम् पापमार्गं त्यक्तुम् अकथयत् ?
   ग) प्रच्छन्नभाग्यस्य पत्नी कीदृशी आसीत्?
   घ) पत्न्याः परामर्शेन सः कस्य क्षेत्रे कार्यं कर्तुं प्रारभत ?
   ड.) सुवर्णपूरितः कलशः कस्य वृक्षस्य मूले स्थितः आसीत् ?
   च) दुष्टबुद्धिः कलशे कम् अपश्यत् ?
   छ) दुष्टबुद्धिः कलशं कस्य गृहे अपातयत् ?
   ज) पतितात् कलशात् कः निस्सृतः?
   झ) सर्पः कम् दृष्टवान् ?
   ड.) नरः कीदृशीं वृत्तिं समाचरेत् ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. अधोलिखितानि वाक्यानि पठित्वा **स्थूलपदम्** आश्रित्य प्रश्ननिर्माणं क्रियताम् ?

    1. **विषादं** त्यक्त्वा उद्यमः क्रियताम् ।
    2. **जलबिन्दुनिपातेन** क्रमशः घटः पूर्यते।
    3. कृषकस्य क्षेत्रे **श्रमं** कृत्वा स धनम् अर्जितवान्।
    4. धैर्यम् **आपदां** तरणिः
    5. नरः **साधुवृत्तिं** समाचरेत्।
    6. प्रच्छन्नभाग्यस्य गृहम् **मणीनाम्** आभया भासमानम् अभवत्।

3 अधोलिखितेषु यत् कथनं शुद्धं तत् (√) चिन्हनेन अशुद्धं च (×) इति चिन्हेन अक्डयत ?

    1. प्रच्छन्नभाग्यः धर्मपुरनाम्नि ग्रामे अवसत्।
    2. दुष्टबुद्धिः प्रच्छन्नभाग्यस्य मित्रम् आसीत्।
    3. कृषकस्य क्षेत्रे हलं चालयन् प्रच्छन्नभाग्यः सुवर्णकलशं दृष्टवान्।
    4. सर्पं दृष्ट्वा दुष्टबुद्धिः कलशम् पुनः आवृतवान्।
    5. एकदा प्रच्छन्नभाग्यः दुष्टबुद्धिः च विद्याध्ययनाय ग्रामान्तरं प्रस्थितौ।
    6. प्रच्छनभाग्यस्य भार्या अवदत्– अलं चिन्तया, आपदां तरणिः धैर्यम्।
    7. बालकाः राजपथे क्रीडन्ति स्म।
    8. दुष्टबुद्धिः अचिन्तयत् ' अनेन बालवचसा मम चक्षुषी समुन्मीलिते '।

4. कथायाः तृतीयम् अनुच्छेदम् पठित्वा वाक्यानां पुरतः क्रमसंख्या लिख्यताम् ?

    1. सखे! यदि मां मित्रस्थाने परिगणयसि तर्हि साधुजनगर्हितम् इमं पन्थानं त्यजतु भवान्।
    2. प्रच्छनभाग्यस्तु समुपजातविवेकः स्वगृहं प्रतिनिवृत्तः।
    3. गुरूपदेशेन इव अनेन बालवचसा मम चक्षुषी समुन्मीलिते।
    4. दुष्टबुद्धिस्तु तस्य सद्वचनानि तिरस्कृत्य ग्रामाभिमुखं प्राचलत्।
    5. अनेन वचसा प्रतिहतान्तःकरणः प्रच्छन्नभाग्यःअचिन्तयत्, किमिदं वचनं विशेषेण माम् एव लक्ष्यीकरोति?
    6. अद्यप्रभृति पापपथं त्यजामि इति विचिन्त्य मित्रं दुष्टबुद्धिमवदत्।
    7. कुमार्गम्आश्रितस्य मम कीदृशी इयं क्लेशपरम्परा।

5. अधोलिखितानां 'क' स्तम्भस्य वाक्यांशानां 'ख' स्तम्भस्य वाक्यांशैः सह उचितं संयोजनं क्रियताम्

क	ख
(1) सखे, यदि मां मित्रस्थाने परिगणयसि तर्हि	(1) बालवचसा मम चक्षुषी समुन्मीलिते
(2) जलबिन्दुनिपातेन	(2) प्रभूतं धनम् अर्जितवान्
(3) स हलकार्यं कृत्वा श्रमेण	(3) साधुजनगर्हितं पन्थानं त्यजतु, भवान्
(4) बुद्धिमती सा अवदत् अलं चिन्तया,	(4) क्रमशः पूर्यते घटः
(5) गुरूपदेशेन इव अनेन	(5) आपदां तरणिः धैर्यम्

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

6. अधोलिखितं कथनं कः कम् कथयति ?

यथा		क	कम्
	कथमत्र नतोन्नते मार्गे क्रीडथ ?	प्रच्छन्नभाग्यः दुष्टबुद्धिः च,	बालकान्
	1. भवन्तौ सुपथं परित्यज्य कुपथेन गन्तुं प्रवृत्तौ ?	....	....
	2. सखे ! साधुजनगर्हितम् इमं पन्थानं त्यजतु भवान्	....	....
	3. इदानीं विषादं त्यक्त्वा उद्यमः क्रियताम्।	....	....
	4. अहो विचित्रः स्वप्नो मया दृष्टः।	....	....
	5. नाथ ! विरम अस्माद् लोभात् ।	....	....

7. मञ्जूषायां कानिचित् विशेषणानि सन्ति। तानि उपयुक्तपात्रेण सह योजयत

मञ्जूषा

बुद्धिमती, चौरः, कृतघ्नः, विद्यापराङ्.मुखः, परिश्रमी, धैर्यवती, समुपजातविवेकः, लोभरहिता, लोभी, शान्तचित्तः, अनासक्ता, ईर्ष्यालुः।

पात्राणि –	**प्रच्छन्नभाग्यः**	**दुष्टबुद्धिः**	**प्रच्छन्नभाग्यस्य पत्नी**
यथा	विद्यापराङ्मुखः	चौरः	बुद्धिमती
	....	....	....
	....	....	....
	....	....	....

8. अधोदत्तानि क्त–प्रत्ययान्त–वाक्यानि क्तवतु–प्रत्ययान्तक्येषु परिवर्तनीयानि ?

	क्त–प्रत्ययान्तम्	**क्तवतु–प्रत्ययान्तम्**
यथा	प्रच्छनभाग्येन प्रचुरं धनम् –	प्रच्छन्नभाग्यः प्रचुरं धनम् अर्जितवान्।
(1)	प्रच्छन्नभाग्येन मणीनाम् आभया गृहं भासमानं दष्टम।	................................।
(2)	तेन कृषकस्य शस्यक्षेत्रे हलकार्यं कृतम्।	................................।
(3)	अद्यप्रभृति मया कुपथः त्यक्तः।	................................।

उदाहरणनुसार समस्तपदैः वाक्यानि पूरयत ?

9. **यथा** (सुवर्णेन पूरितं) **सुवर्णपूरितं** कलशं प्राप्य प्रच्छन्नभाग्यः विस्मितः अभवत्।

क. (क्लेशानां परम्परा) .... कस्य मानसं न संतापयति।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

ख. (गुरोः उपदेशः) .... शिष्यस्य कल्याणाय भवति।
ग. (परेषां द्रव्ये) .... आसक्तिः उचिता नास्ति।
घ. (कलशस्य पातेन) .... तस्य निद्राभङ्.गः अभवत्।
ङ. यः नरः (विद्यायाः पराङ्.मुखः) .... भवति, सः लोके आदरं न लभते।
च. (साधूनां वृत्तिम्) .... आचरेत् ।
छ. (रवेः किरणाः) .... (गृहस्य अभ्यन्तरे) .... प्रविशन्ति।

10. मञ्जूषायाः समुचितपदानां संयोजनेन अधोदत्तशब्दानां त्रयः पर्यायाः दीयन्ताम् ?

निकेतनम्	अर्थः	चक्षुः
भुजगः	अहिः	प्रेक्ष्य
द्रविणम्	विलोक्य	वित्तम्
परित्यज्य	लोचनम्	विषधरः
अक्षि	निशा	सदनम्
वीक्ष्य	हित्वा	रजनी
शर्वरी	गेहम्	विहाय

(1) रात्रिः ....
(2) धनम् ....
(3) सर्पः ....
(4) दृष्ट्वा ....
(5) नेत्रम् ....
(6) त्यक्त्वा ....
(7) गृहम् ....

11. अधोदत्तेषु वाक्येषु कोष्ठके दत्तधातुभिः सह ल्यप् प्रत्ययं संयोज्य रिक्त स्थान पूर्तिः क्रियताम्?

यथा क्रीडतः बालकान् (प्र ईष्)......................... तौ वदतः।
क्रीडतः बालकान् प्रेक्ष्य तौ वदतः

1. अहं कुपथं (परि .+ त्यज्) .... सुपथं ग्रहीष्यामि।
2. अकस्मात् धनं (प्र.+ आप्) .... प्रच्छन्नभाग्यः विस्मितः अभवत्।
3. कलशं पुनः (आ.+ वृत्) .... दुष्टबुद्धिः मित्रस्य गृहं गतः।
4. स भार्यायै सर्व वृतान्तं (नि.+ विद्) .... उच्चैः क्रन्दनम् अकरोत्।
5. चौरः तस्य गृहे संन्धिं (प्र.+ कल्प्) .... कलशं क्षिप्तवान् ।
6. सर्पः कलशात् (निर्.+ गम्) .... दुष्टबुद्धिम् अदशत्।
7. सद्वचनानि (तिरस्.+ कृ) .... कः सुखी भवति?
8. प्रच्छन्नभाग्यः बालवचसा प्रेरणाम् (आ.+ दा) .... सन्मार्गे प्रवृत्तः।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अष्टादशः पाठः

संस्कृत–साहित्येऽवदानं तेरापन्थस्य

(तेरापन्थ की स्थापना विक्रम सम्वत् 1817 में आचार्य भिक्षु ने की थी।)

संभव है, आचार्य भिक्षु ने संस्कृत साहित्य का पारायण किया हो। पर, उस समय संस्कृत में साहित्य – सृजन का कोई उल्लेख नहीं मिलता । तृतीय आचार्य रायचन्द जी, चतुर्थ आचार्य जयाचार्य तथा पंचम् आचार्य मधवागणी के समय में संस्कृत साहित्य का बीज पड़ा । उन्नीसवी शताब्दी में आठवें आचार्य श्री कालूगणी के समय में उस बीज का प्रस्फुटन, अंकुरण, पुष्पन एवं फलन हुआ। नौवे आचार्यश्री तुलसी एवं दसवें आचार्यश्री महाप्रज्ञ इस फलन के पुरोधा आचार्य बने। फिर तो तेरापन्थ संघ में संस्कृत के पठन–पाठन एवं लेखन का एक अबाध अभिक्रम शुरू हो गया। अर्ध–शताब्दी की यह विकास यात्रा अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इस दृष्टि से जिस संस्कृत साहित्य की संरचना हुई उसके रचनाकार एवं रचनाओं का ज्ञात विवरण इस पाठ में प्रस्तुत है, क्योंकि बीसवीं शताब्दी में जैन समाज में तेरापन्थ में संस्कृत का एक अभिनव उत्कर्ष दीखता है।

आचार्य तुलसी :– तेन लिखिताः ग्रन्थाः अधो अंकिताः सन्ति– 1. जैन सिद्धांत दीपिका, 2. श्री भिक्षु न्याय कर्णिका 3. कर्त्तव्य षट्त्रिंशिका 4. श्री कालू कल्याण मंदिरम् 5. शिक्षा षण्णवतिः 6. ध ार्म रहस्यम् 7. सौराज्यम् 8. कवि माहात्म्यम् 9. किं तत्वम् 10. सर्वमस्ति नास्ति किञ्चित् 11. दिशा संकेताः 12. कथा कोषः 13. पंचसूत्रम् 14. संघ षट्त्रिंशिका 15. आराध्य स्तुतिः 16. निबन्ध निकुरम्बम्।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ :– 1. संबोधि 2. अश्रुवीण 3. मुकुलम् 4. तेरापन्थ चतुर्विंशतिः 5.संस्कृतं, भारतीया संस्कृतिश्च 6. रत्नपालचरितम् 7. भिक्षुशतकम् 8. तुलसी स्तोत्रम् 9. संस्कृतवाक्य रचना भागत्रयम् 10. निबन्धावलिः 11. कथा व्यूहः 12. न्याय पंचशती 13. जयपुर–यात्रा 14. श्लोक माला 15. अष्टाष्टकम् 16. भिक्षु गीता 17. भिक्षु गाथा 18. प्रज्ञा लोकः 19. षोडशकद्वयम्।

युवाचार्य जी महाश्रमण :– 1. शेमुषी 2. शिक्षासुधा।

मुनिश्री चौथमल :– 1. भिक्षु शब्दानुशासनम् (अष्टाध्यायी), 2. कालू–कौमुदी, – प्रक्रिया (पूर्वार्ध एवं उत्तरार्ध।)

मुनिश्री कानमल :– 1. कालू कल्याण मन्दिर द्वयम् 2. कालू भक्तामरः 3. पंचतीर्थी 4. गेय–काव्यम् 5. तुलसी न्याय प्रवेशिका

मुनिश्री नथमल :– 1. श्री भिक्षु महाकाव्यम् 2. युक्तिवादः 3. अन्योपदेशः 4. तेरापन्थस्तोत्रम् 5. सत्संग महिमा 6. जिन चतुर्विंशिका 7. वैराग्य तंरगिणी 8. अर्द्धाष्टकम् 9. तुलसी वचनामृत स्तोत्रम्।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मुनिश्री डूंगरमल :– 1. पांडव विजय 2. अन्योक्ति सन्दोहः 3. गुरु गौरवम्

मुनिश्री सोहनलाल :– 1. कालू भक्तामर स्त्रोतम् 2. कालू कल्याण मंदिर स्त्रोतम् 3. देवगुरू स्तोत्रम 4. मातृकीर्तनम् 5. भगवत्स्तुतिः 6. तुलसी प्रभा (प्रक्रिया)

मुनिश्री छत्रमल :– 1. कृष्ण शतकम् 2. महावीर शतकम् 3. जयाचार्य शतकम् 4. भिक्षु शतकम् 5. कालू शतकम् 6. तुलसी शतकम् 7. तेरापन्थ शतकम् 8. देवगुरू द्वात्रिंशिका 9. भिक्षु द्वात्रिंशिका 10 तुलसी द्वात्रिंशिका 11. कामकुंभ द्वात्रिंशिका 12. तपःकुटी द्वात्रिंशिका 13. मुख्यपत्र द्वात्रिंशिका 14. मणिशेखर द्वात्रिशिका 15. सूक्ति द्वात्रिंशिका 16. संबाद द्वात्रिशिंका 17. प्रतिभा द्वात्रिंशिकां।

मुनिश्री दुलीचन्द्र :– 1. तुलसी स्त्रोतम् 2. तुलसी शतकम् 3. मर्यादा पंञ्चकम् 4. ऐकान्हिक शतकम् 5. मेधाष्टकम् 6. समुद्राष्टकम् 7. सन्मति सन्दोहः 8. गति सन्दोहः।

मुनि बुद्धमल :– 1. निबन्ध सन्दोहः 2. कथा पेटकम 3. आत्म मीमांसा 4. स्मितम् 5. उत्तिष्ठत जाग्रत 6. भारतीय संस्कृतिः 7. चतुर्विंशति स्तवः 8. श्री तुलसी स्त्रोतम 9. सत्संग त्रिंशिका 10 मधुकर चतुर्दशकम् 11. गुरुभक्ति चतुर्दशकम् 12. अन्योक्ति पञचाशिका 13. ऐकान्हिक शतकम् 14. रौहिणेय 15. दैवात् देवं वलीयः 16. मुक्तामाला ।

मुनिश्री पूनमचन्द :– 1. तुलसी स्तोत्रम् 2. ऐकान्हिक श्लोकाः 3. प्रकीर्णक सप्ततिः, 4. श्री वैराग्य मंजरी ।

मुनिश्री चंपालाल :– 1. अणुव्रत शतकम् 2. धर्मशतकम्।

मुनिश्री मोहनलाल :– 1. ममिनाथ स्तुतिः 2. कुर्वर काव्यम् 3. कल्पना 4. ऐकान्हिक शतकम् 5. समस्या निशाष्ठिकः 6. प्रयास–प्रशस्ति 7. भारतीय संस्कृतिः

मुनिश्री मधुकरः :– 1. समस्या शतकम् 2. पथिक पञ्चकम् 3. तुलसी सप्तकम् 4. सूर्याष्टकम्

मुनिश्री सुखलाल : – ऐकान्हिक शतकम् 2. उन्निद्रम् 3. समुद्राष्टकम् 4. पथिक पञ्चदशकम् 5. अमृतम्

मुनिश्री राकेश कुमारः – 1. ऐकान्हिक श्लोक सहस्त्री 2. मैशं द्विशतकम् 3. ऐकान्हिक शतकम् 4. श्लोक संग्रह 5. परिमलम् 6. उन्मिवितम्

पण्डित रघुनन्दनः – भिक्षुशब्दानुशासनम् बृहत्वृतिः 2. तुलसी महाकाव्यम् 3. प्राकृत काश्मीरम् 4. साधुरावकम्

मुनिश्री श्रीचन्द्रः – 1. मर्यादा षोडशकम् 2. मेघाष्टकम् 3. नद्यष्टकम् 4. समुद्राष्टकम् 5. अव्यय निबन्धः 6. एकाक्षर निबन्धः 7. कथा माला

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

साध्वीश्री मोहनकुमारी – 1. निबंध माला 2. शिक्षा षट्त्रिंशिका

साध्वीश्री मालू :– ऐकान्हिक शतकम्

साध्वी श्री जतनकुमारी :– ऐकान्हिक शतकम्

साध्वीश्री सोहना :– ऐकान्हिक शतकम्

साध्वी श्री कानकुमारी :– 1. गीतिका 2. अहिंसा षोडशकम् 3. मेधाष्टकम्

तेरापन्थीमुनिभ्यः साध्विभिश्च संस्कृत साहित्य–रचना कृता। तेषां कर्त्तृव्यं प्रशंसनीयमस्ति। तेरापन्थसंस्कृत– साहित्यः नवभागेषु विभक्तः अस्ति यथा–

1. व्याकरणम् 2.दर्शनन्यायश्च 3. योगः 4. महाकाव्यम् 5. खण्डकाव्यम् 6. प्रकीर्णक काव्यम् 7. संगीतकाव्यः 8. स्तोत्र काव्यम् 9. नीति काव्यम्।

व्याकरण :– मर्हिर्षि पाणिना लिखितं व्याकरणमतिप्रसिद्धमस्ति। जैनानां व्याकरणमध्ये – जैनेन्द्र व्याकरणस्य गणना प्रथमश्रेण्यां भवति। अस्य लेखकः देवनन्दी अस्ति। पल्यकीर्तिना ' शाकटायन व्याकरणः " लिखितः हेमचन्द्रेण ' सिद्ध हेमशब्दानुशासनम्" रचितम्। मुनिश्री चौथमलेन ' भिक्षुशब्दानुशासनम् लिखितम्। एतद् अधुनातनं व्याकरणमस्ति। अनेनैव विदुषा ' कालू कौमुदी ' अपि विरचिता। तेरापन्थस्य इममभूतपूर्वं प्रस्तुतिः अस्ति। मुनिश्री सोहनलालेन ' तुलसी प्रभा' विरचिता।

दर्शन– न्यायः– जैनधर्मस्य स्व– तत्वदर्शनः अस्ति। अस्य दर्शनस्य 'जैनसिद्धांत – दीपिका' लाक्षणिक ग्रन्थरूपेण प्रसिद्धिंगता अस्याः रचयिता आचार्य श्रीतुलसी अस्ति। अस्मिन् लाक्षणिक ग्रन्थे जीवविज्ञानः पदार्थ विज्ञानः, आचारशास्त्रः, प्रमाणः, नयः, सप्रभंगी आदयः विशदरूपेण व्याख्यायिताः सन्ति। जैनन्याय कृते आचार्यश्री तुलसिना ' भिक्षु न्याय कर्णिका ' विरचिता। इयं अधुनातन – संस्कृत – लाक्षणिक, ग्रन्थः अस्ति

योगः–साधना– पद्धति क्षेत्रेऽपि जैनाचार्यैः प्रभूतं कार्यं कृतम्। समाधि तन्त्रम् योगदृष्टिसमुच्चयः, योग बिन्दुः, योगशास्त्रः, अध्यात्म रहस्यः, ज्ञानार्णवः, योग–चिन्तामणिः, योगदीपिका प्रभृति ग्रन्थाः लिखिताः सन्ति। आचार्यश्री तुलसिना रचितः ' मनोऽनुशासनम्' सर्वेषां मार्गदर्शनं करोति। सहजानुशासितः मनः एव जाग्रतमनः अस्ति। मनोऽनुशासने प्रेक्षाध्यानस्य पृष्ठभूमिरस्ति।

खण्ड काव्याः – गद्यपद्यात्मक शैलीषु खण्डकाव्याः विरचिताः सन्ति। ' अश्रुवीण' 'रत्नपाल – चरितम्' 'प्राकृत काश्मीरम्' आदि काव्याः उल्लेख्याः सन्ति। एतेषु अश्रुवीणा' मन्दाक्रान्ता छन्दे लिखिता खण्डकाव्यः अस्ति। भगवतः महावीरस्य जीवनस्य करूणाप्लावितः अयम्। प्राकृतकाश्मीरे सुललितं सौन्दर्यं प्रकटितम्– यथा

राजीवशुभ्रवसना कुहचित् तुषारैः।
युरोपयोषिदुपमा क्वचिदर्धनग्ना
नग्नाकुहाप्युभयतो वनमानुषीव,
नेत्यल्पतामुपगता तटिनी नदीव।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(अमरनाथ के नीचे से बहती हुई शुभवसना अमरावती नदी कहीं श्वेत कमलों जैसी, बर्फ से पूर्णरूप से ढकी हुई है, तो कहीं यूरोपियन महिलाओ की तरह अधनंगी दिखाई देती है। बल्कि कहीं कहीं तो वह जंगली औरतों की तरह बिल्कुल नग्न सी दिखाई दे रही है। वास्तव में नदी तटिनी से जरा भी कम नहीं दिखाई देती है।)

एतादृशमेव, प्रकीर्णक काव्यानि, संगीतकाव्यानि, स्तोत्रकाव्यानि विरचितानि सन्ति। आचार्य श्री महाप्रज्ञस्य, युवाचार्य श्री महाश्रमणस्य नेतृत्वे संस्कृतभाषा सुरम्या समृद्धा च भविष्यति।

श्रावणी–2007 **गिरिजाशंकर मिश्रः**

कठिन शब्दार्थाः

महर्षि पाणिना लिखितम्– महर्षि पाणिनि द्वारा लिखित, प्रभूतम्–अधिक, मार्गदर्शनम्– दिशा–निर्देश, सहजानुशासितम्– स्वाभाविक रूप से अनुशासित, प्रेक्षा ध्यान्– भलीभाँति देखकर (किसी देवता की प्रतिमा को देखकर– मन में उस रूप को उतारकर) ध्यान लगाना। करूणाप्लावितः– करुणा से भरा हुआ, कारुणिक, सुललित – अति सुन्दर,

राजीवशुभ्रवसना – श्वेत कमल के समान सफेद वस्त्रों वाला,
यूरोपयोषिदुपमा – यूरोपीय महिला से उमपा देती हुई।
वनमानुषीव – जंगली औरतो की तरह, तटिनी – नदी।
नेत्यल्पतामुपगता – जरा भी कम दिखाई नहीं देती है।
तेरापंथ – श्वेताम्बर जैनधर्म की तीन शाखायें है– तेरापन्थ, स्थानकवासी, मूर्तिपूजक।

व्याकरण

साहित्येऽवदानम् – साहित्ये + अवदानम् = पूर्वरुपसन्धि
शब्दानुशासनम् – शब्द + अनुशासनम् = दीर्घ सन्धि
जैनाचार्यैः – जैन + आयार्यैः = दीर्घ सन्धि
सहजानुशासित – सहजा + अनुशासित = दीर्घ सन्धि
प्रसिद्धिंगतः – प्रसिद्धिम् + गतः = अनुस्वार सन्धि
करुणाप्लावितः – करुणा + आप्लावितः = दीर्घ सन्धि

1. निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग करते हुये संस्कृत वाक्य रचना कीजिये –
   1. आचार्य श्री तुलसी
   2. महाश्रमणः
   3. पाणिना
   4. जैनाचार्यः
   5. सुरम्या
   6. नेतृत्वे
   7. प्रकीर्णकाव्याः
   8. व्याख्यायिताः

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिये –

1. तेरापन्थ– संस्कृत साहित्य नौ भागों में विभक्त है।
2. महर्षि पाणिनी द्वारा लिखित व्याकरण अधिक प्रसिद्ध है।
3. जैनेन्द्र व्याकरण के लेखक देवनन्दी है।
4. पल्यकीर्ति के द्वारा शाकटायन व्याकरण लिखा गया है।
5. 'तुलसी– प्रभा' मुनिश्री सोहनलाल द्वारा विरचित है।
6. जैन सिद्धान्त दीपिका के रचयिता आचार्य श्री तुलसी हैं।
7. मनोनुशासन सभी का मार्ग–दर्शन करता है।
8. प्राकृत–काश्मीर में सुललित सौन्दर्य प्रकटित है।
9. अश्रुवीणा मन्दाक्रान्ता छन्द में लिखित खण्ड काव्य है।
10. आचार्य श्री महाप्रज्ञ के नेतृत्व में संस्कृत भाषा समृद्ध होगी ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर दीजिये –

1. आचार्य श्री तुलस्याचार्येण कतिग्रन्थाः विरचिताः?
2. तुलसीस्तोत्रम् केन लिखितम् ?
3. वैराग्यमंजरी कस्य रचना अस्ति?
4. साधना–पद्धति–क्षेत्रे जैनाचार्यैः कीदृशं कार्यं कृतम् ?
5. तत्त्वा–दर्शनम् कस्मिन् काव्ये वर्णितः अस्ति ?

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये –

1. एतद् .... व्याकरणमस्ति।
2. जैनधर्मस्य .... अस्ति।
3. आचार्यश्री .... भिक्षुन्यायकर्णिका .... अस्ति।
4. मनोऽनुशासने .... पृष्टभूमिरस्ति।
5. भगवतः .... जीवनस्य .... अयम्।

4. अधोलिखित पदों में धातु, लंकार, पुरूष– वचनों का उल्लेख कीजिये ।

पद	**धातु**	**लंकार**	**पुरूष**	**वचन**
अस्ति	....	....	....	....
भवति	....	....	....	....
सन्ति	....	....	....	....
करोति	....	....	....	....
भविष्यति	....	....	....	....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एकोनविंशः पाठः

सुभाषितानि

अतिथिर्यस्य भग्नाशो, गृहात् प्रतिनिर्वतते।
स दत्ता दुष्कृतंतस्मै, पुण्यमादाय गच्छति।।1।।

अनन्तपारं किल शब्द शास्त्रं, स्वल्पं तथायुर्बहवश्च विघ्नाः।
सारं ततो ग्राह्यमपास्य फल्गु, हंसैर्यथा क्षीरमिवाम्बुमध्यात्।।2।।

अन्यान् परिवदन् साधुर्यथा हि परितप्यते।
तथा परिवदन् अन्यान्, तुष्टो भवति दुर्जनः।।3।।

उत्तमस्यापि वर्णस्य नीचोऽपि गृहमागतः।
पूजनीया यथायोग्यं, सर्वदेवमयोऽतिथिः।।4।।

एकं प्रसूयते माता, द्वितीयं वाक्प्रसूयते।
वाग्जातमधिकं प्रोचुः, सौदर्यादपि बन्धुवत्।।5।।

कामधेनुगुणा विद्या ह्यकाले फलदायिनी।
प्रवासे मातृसदृशी विद्या गुप्तं धनं स्मृतम्।।6।।

गच्छन् पिपीलको याति योजनानां शतान्यपि।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ।।7।।

गर्जति शरदि न वर्षति, वर्षति वर्षासु निःस्वनोमेघः।
नीचो वदति न कुरुते, न वदति सुजनः करोत्येव ।।8।।

चिन्तनीया हि विपदामादावेव प्रतिक्रिया।
न कूपखननं युक्तं, प्रदीप्ते वह्निना गृहे।।9।।

जनिता चोपनेता च, यस्तु विद्यां प्रयच्छति।
अन्नदाता भयत्राता, पञ्चैते पितरः स्मृताः।।10।।

जले तैलं खले गुह्यं पात्रे दानं मनागपि।
प्राज्ञे शास्त्रं स्वयं याति, विस्तारो वस्तु शक्तितः।।11।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम्,
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्,
किम् किं न साधयति कल्पलतेव विद्या।।12।।

दुर्लभं भारतवर्षे, जन्म तस्मान्मनुष्यता।
मानुषे दुर्लभं चापि, स्व स्वधर्मे प्रवर्तिता।।13।।

न वाच्यः परिवादोऽयं, न श्रोतव्यः कथञ्चन।
कर्णावपि पिधातव्यौ, प्रस्थेयं चान्यतो भवेत्।।14।।

प्रियवाक्य–प्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं, वचने का दरिद्रता।।15।।

शब्दार्थ :

भग्नाशः = निराश । दुष्कृतं = पाप । परिवदन् = निन्दा करने वाले । परितप्यते = दुःखी होता है। तुष्टः = प्रसन्न । प्रोचुः = कहा गया । प्रवासे = दूसरे स्थान में (यात्रा में)। पिपीलकः = चींटा । वैनतेय = गरूड़ । जनिता = जन्म देने वाली । उपनेता = उपनयन संस्कार करने वाला। मनाग् = थोड़ा सा । परिवादः = निन्दा । पिधातब्यौ = बन्द कर लेना चाहिए । प्रस्थेयं = चल देना चाहिए।

सन्धयः

अतिथिः + यस्य = अतिथिर्यस्य । भग्न + आशः = भग्नाशः । तथा + आयुः + बहवः + च = तथायुर्बहवश्च । ग्राह्यम् + अपास्य = ग्राह्यमपास्य । हसैः + यथा = हसैर्यथा । नीचः + अपि = नीचोऽपि। वाक् + जातम् + अधिकं = वाक्जातमधिकं । करोति + एव = करोत्येव । च + उपनेता = चोपनेता । मान + उन्नतिं = मानोन्नतिं । कल्पलता + इव = कल्पलतेव । तस्मात् + तत् + एव = तस्मात्तदेव ।

समासाः

उपनेता = उपनयनकर्ता यःसः। बहुब्रीहि
अन्नदाता = अन्नस्य दाता । तत्पुरूष (षष्ठी)
अन्नदाता = अन्नं यच्छति यः सः । बहुब्रीहि
भयत्राता = भयात् त्रातः। तत्पुरूष (पंचमी)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रश्नाः—

1. पुण्यमादाय कः गच्छति ?
2. हंसस्य के गुणाः सन्ति ?
3. दुर्जनः कदा तुष्टो भवति ?
4. नीचोऽपि किमर्थं पूजयेत् ?
5. विद्या गुप्तं धनं किमर्थं स्मृतम् ?
6. कः केवलं वदति न कुरुते ?
7. कूपं खननं कदा युक्तम् ?
8. स्वयं विस्तारः कानि वस्तूनि प्राप्यन्ते ?
9. धियो किम् करोति ?
10. प्रिय—वाक्य प्रदानेन किं भवति ?

निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर संस्कृत में लिखिये—

1. भग्नाशः अतिथिः किम् करोति?
2. साधुः कदा परितप्यते?
3. शरदि मेघः किम् करोति?
4. गच्छन् पिपीलका कां स्थितिं प्राप्नोति?
5. कम् दानं दातव्यम्?
6. पापमपाकरोति कः?

निम्नलिखित श्लोक को पूर्णकर हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

1. अनन्तपारं ....क्षीरमिवाम्बुमध्यात्।
2. एकं प्रसूते ....बन्धुवत्।
3. चिन्तनीया ....बह्निनागृहे।
4. जाड्यं धियो ....कल्पलतेव विद्या।

संस्कृत में अनुवाद कीजिए –

1. आयु अल्प है तथा बाधायें बहुत है।
2. सभी अतिथि देव के समान होते हैं।
3. कामधेनु के समान विद्या फलदायिनी होती है।
4. जल में तेल स्वयं फैल जाता है।
5. यात्रा में विद्या माता के समान होती है।
6. प्रिय बोलने मे ंक्या दरिद्रता।
7. दूसरे की निन्दा नहीं करनी चाहिए।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

1. भग्नाशः अतिथिः पुण्यमादाय गच्छति।
2. अनन्तपारं किल शब्दशास्त्रम्।
3. विद्या गुप्तधनं स्मृतम्।
4. यः विद्यां प्रयच्छति सः पितरः स्मृतः।
5. विद्या कल्पलतेव किं किं न साधयति।

संस्कृत में वाक्य लिखिये–

1. विघ्नाः, 2. दुर्जनः, 3. पूजनीयः, 4. माता, 5. कूपं, 6. भयत्राता, 7. धियः, 8. सुजनः, 9. दुर्लभः 10. प्रियवाक्य ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

व्याकरण पाठाः

प्रथमः अध्यायः

सन्धि प्रकरण

उच्चारण के समय दो वर्णों के मेल या समीप आने से उनमें जो परिवर्तन होता है, उसे संधि कहते हैं।

सन्धि तीन प्रकार की होती है– स्वर सन्धि व्यञ्जन सन्धि ओर विसर्ग संधि। जहॉं स्वरों में परिवर्तन होता है वहॉं स्वर संधि, जहॉं व्यञ्जन में परिवर्तन होता है वहां व्यञ्जन संधि होती है और जहॉं विसर्ग में परिवर्तन होता है वहॉं विसर्ग सन्धि होती है।

1. स्वर संधि

"जब दो स्वर वर्णों के मेल से विकार उत्पन्न होता है, तो उसे स्वर संधि कहते हैं।"

उदाहरण – पुस्तक + आलयः = पुस्तकालयः

यहॉं पर अ +आ वर्ण का मेल हुआ है, दोनों ही स्वर वर्ण हैं, अतः यहॉं पर स्वर संधि हुई है।

स्वर संधि के प्रकार

स्वर संधि के छः प्रकार है–(1) दीर्घ स्वर संधि, (2) गुण स्वर संधि, (3) यण स्वर संधि, (4) अयादि स्वर संधि, (5) वृद्धि स्वर संधि और (6) पूर्वरूप स्वर संधि ।

(1) दीर्घ स्वर संधि – जब समान स्वर वर्णों लघु (ह्रस्व) या गुरु (दीर्घ) का मेल होता है तो दोनो मिलकर 'दीर्घ' हो जाते हैं । जैसे–

पुस्तक	+	आलयः	=	पुस्तकालयः(अ + आ = आ)
महा	+	आदेशः	=	महादेशः (आ + आ = आ)
गिरि	+	इन्द्रः	=	गिरीन्द्रः (इ + इ = ई)
गिरि	+	ईशः	=	गिरीशः (इ + ई = ई)
भानु	+	उदयः	=	भानूदयः (उ + उ = ऊ)

(2) गुण स्वर संधि – इ, ई का 'ए', उ, ऊ का 'ओ' ऋ, ॠ का 'अर्' तथा ऌ का 'अल्' हो जाता है, यदि इनके पूर्व अ या आ स्वर होता है। ए, ओ, 'अर्' तथा 'अल्' को ही गुण कहते हैं। जैसे–

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

गण	+	ईशः	=	गणेशः (अ+ई=ए)
महा	+	इन्द्रः	=	महेन्द्रः (आ+इ=ए)
चन्द्र	+	उदयः	=	चन्द्रोदयः (अ+उ=ओ)
महा	+	ऋषिः	=	महर्षिः (आ+ऋ=अर्)
तव	+	लृकारः	=	तवल्कारः (अ+लृ=अल्)

(3) यण् स्वर संधि – इ,ई का 'य', उ, ऊ का 'व,' ऋ का 'र्' तथा लृ का 'ल्' हो जाता है, यदि इनके पश्चात् कोई भिन्न स्वर होता है । जैसे–

प्रति	+	एकम्	=	प्रत्येकम् (इ+ए=ये)
इति	+	आदि	=	इत्यादि (इ+आ=या)
अनु	+	अयः	=	अन्वयः (उ+अ=व)
पितृ	+	आज्ञा	=	पित्राज्ञा (ऋ+आ=रा)
लृ	+	आकारः	=	लाकारः (लृ+आ=ला)

(4) अयादि स्वर संधि – 'ए' का 'अय्', 'ओ' का 'अव्' 'ऐ' 'आय्' तथा 'औ' का 'आव्' हो जाता है, यदि बाद में कोई स्वर होता है, (पदान्त ए या ओ के बाद आ होगा तो नहीं) जैसे–

ने	+	अनम्	=	नयनम् (ए+अ=अय)
शे	+	अनम्	=	शयनम् (ए+अ=अय)
नै	+	अकः	=	नायकः (ऐ+अ=आय)
गै	+	अनम्	=	गायनम् (ऐ+अ=आय)
पो	+	अनः	=	पवनः (ओ+अ=अव)
भो	+	अनम्	=	भवनम् (ओ+अ=अव)
पौ	+	अकः	=	पावकः (औ+अ=आव)।

(5) वृद्धि स्वर संधि – ए तथा 'ऐ' का 'ऐ' ओ तथा औ का 'औ' हो जाता है, यदि इनके पूर्व अ या आ स्वर होता है। जैसे–

एक	+	एकः	=	एकैकः (अ+ए=ऐ)
सदा	+	एव	=	सदैव (आ+ए=ऐ)
राज	+	ऐश्वर्यम्	=	राजैश्वर्यम् (अ+ऐ=ऐ)
जल	+	ओधः	=	जलौधः (अ+ओ=औ)
महा	+	ओषधिः	=	महौषधिः (आ+ओ=औ)
देव	+	औदार्यम्	=	देवौदार्यम् (अ+औ=औ)

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(6) पूर्व रूप स्वर संधि – पद के अन्त में 'ए' या 'ओ' के बाद यदि ह्रस्व 'अ' स्वर आता है तो उसका पूर्व रूप (अर्थात् ए या ओ जैसे रूप) हो जाता है तथा 'अ' का लोप हुआ है, इस बात की सूचना के लिये 'अ' के स्थान पर अवग्रह (ऽ) चिन्ह लगा देते हैं। जैसे–

लोके	+	अस्मिन्	=	लोकेऽस्मिन्
हरे	+	अत्र	=	हरेऽत्र
लोको	+	अयम्	=	लोकोऽयम्
विष्णो	+	अयम्	=	विष्णोऽयम्

2. व्यञ्जन संधि

जब संधि के कारण व्यञ्जनों में परिवर्तन होता है, तो उसे व्यञ्जन संधि कहते हैं। जैसे–

(1) सकार और तवर्ग (त्, थ्, द्, ध्, न्,) के पास (पहले या पीछे) यदि शकार और च वर्ग (च्, छ्, ज्, झ्, ञ्,) हो, तो सकार और तवर्ग के स्थान पर क्रमशः शकार और चवर्ग हो जाता है। जैसे–

1. रामस् + शेते = रामश्शेते
2. सत् + चित् = सच्चित्
3. महान् + जयः = महाञ्जयः
4. उत् + चारणम् = उच्चारणम्
5. सत् + जनः = सज्जनः
6. सत् + चरित्रम् = सच्चरित्रम्

(2) सकार और तवर्ग के पास यदि षकार और टवर्ग हो, तो वे षकार और टवर्ग में बदल जाते हैं। जैसे–

1. तत् + टीका = तट्टीका
2. उत् + डीनः = उड्डीनः
3. धनुस् + टंकारः = धनुष्टंकारः।

(3) स्वर अथवा वर्ग का तृतीय वर्ण (ग्, ज्, ड्, द्, ब्) आगे रहने पर वर्ग के प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तृतीय वर्ण हो जाता है। जैसे–

1. वाक् + ईशः = वागीशः
2. सत् + आचारः = सदाचारः
3. सम्राट् + अपि = सम्राडपि
4. तत् + एव = तदेव
5. दिक् + गजः = दिग्गजः
6. तत् + दानम् = तद्दानम्।

(4) त् के आगे ल् होने पर, त् के स्थान पर ल् हो जाता है। जैसे–

1. तत् + लीनः = तल्लीनः
2. तत् + लक्षणम् = तल्लक्षणम्
3. भवत् + लाभः = भवल्लाभः।

(5) पद के अंत में यदि म् के आगे व्यञ्जन हो, तो म् के स्थान पर अनुस्वार हो जाता है। जैसे–

1. हरिम् + वन्दे = हरिं वन्दे
2. सज्जनानाम् + सेवा = सज्जनानां सेवा।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(6) वर्ग के पहले या तीसरे (क्, ग्, च्, ज्, ट्, ड्, त्, द्, प्, ब्) के आगे पंचम वर्ण (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्,) हो तो उनके स्थान पर भी पंचम वर्ण हो जाता है। जैसे–

1. वाक् + मयम् = वाङ्.मयम् 2. दिक् + नागः = दिङ्.नागः
3. छिद् + नः = छिन्नः 4. जगत् + नाथः = जगन्नाथः।

(7) पदान्त न् के परे यदि च् हो तो न् और च् को मिलाकर श्च् एवं अनुस्वार हो जाता है। जैसे–

1. कस्मिन् + चित् = कस्मिंश्चित् 2. कान् + चित् = कांश्चित्।

(8) अपदान्त अनुस्वार के आगे उष्म (श्, ष्, स्, ह्,) वर्णों को छोड़कर कोई व्यञ्जन आवे तो अनुस्वार के स्थान पर अगले वर्ण का पंचम वर्ण हो जाता है। जैसे–

1. अं + कितः = अङ्.कतः 2. शां + तः = शान्तः
3. सायं + कालः = सायङ्.कालः 4. सं + निधिः = सन्निधिः।

(9) यदि त् के आगे श् हो तो दोनों को मिलाकर च्छ् हो जाता है। जैसे–

1. तत् + शिवः = तच्छिवः 2. सत् + शास्त्रम् = सच्छास्त्रम्
3. भगवत् + शरणम् = भगवच्छरणम्।

(10) यदि ह्रस्व स्वर के आगे न् हो तो, उसके आगे कोई स्वर वर्ण होने पर न् का द्वित्व हो जाता है। जैसे–

1. तस्मिन् + एव = तस्मिन्नेव 2. सन् + अन्तः = सन्नन्तः
3. अस्मिन् + इति = अस्मिन्निति।

(11) यदि ह्रस्व स्वर के बाद छ् हो तो उसके स्थान पर च्छ् हो जाता है। जैसे–

1. परि + छेदः = परिच्छेदः 2. तरु + छाया = तरुच्छाया
3. वृक्ष + छाया = वृक्षच्छाया।

3 विसर्ग संधि

जब संधि के कारण विसर्ग में विकार उत्पन्न हो तो उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। जैसे–

(1) विसर्ग के आगे वर्ग के प्रथम, द्वितीय वर्ण या स्, श्, ष्, हो तो विसर्ग का स् हो जाता है। जैसे–

1. नरः + तरति = नरस्तरति 2. इतः + ततः = इतस्ततः

किन्तु यदि विसर्ग के आगे ष् या ट् वर्ग हो तो ष् हो जाता है । जैसे–

1. धनुः + टंकार = धनुष्टंकारः 2. ततः + षष्ठी = ततषष्ठी।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(2) अ को छोड़कर यदि स्वर के आगे विसर्ग हो, तो र् हो जाता है। जैसे–

1.	कविः + अयम्	=	कविरयम्	2.	भानुः + उदितः	=	भानुरुदितः
3.	तैः + उक्तम्	=	तैरुक्तम्।				

(3) यदि विसर्ग के पहले ह्रस्व अ हो और बाद में भी ह्रस्व अ स्वर आये तो विसर्ग पूर्व अ और विसर्ग दोनों को मिलाकर ओ तथा बाद में आने वाले अ के स्थान पर अवग्रह (ऽ) हो जाता है। जैसे–

1.	रामः + अयम्	=	रामोऽयम्	2.	सः + अपि	=	सोऽपि।

(4) यदि विसर्ग के पहले ह्रस्व अ हो और बाद में वर्ग का तृतीय, चतुर्थ या पंचम वर्ण या य्, र्, ल्, व्, ह्, हो तो विसर्ग और अ मिलाकर ओ हो जाता है। जैसे–

1.	शिवः + वन्द्यः	=	शिवोवन्द्यः	2.	मनः + रथः	=	मनोरथः।

(5) आ के आगे विसर्ग हो और उसके आगे कोई स्वर या वर्ग के तृतीय वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे–

1.	देवाः + आगताः	=	देवाआगताः	2.	नराः + यान्ति	=	नरायान्ति
3.	जनाः + गताः	=	जनागताः।				

(6) अ को छोड़कर अन्य कोई स्वर या व्यञ्जन विसर्ग के आगे रहने पर सः और एषः के विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे–

1.	सः + गतः	=	स गतः	2.	एषः + पक्षी	=	एष पक्षी
3.	सः + रावणः	=	स रावणः	4.	एषः + रामः	=	एष राम।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

द्वितीय अध्यायः

समास प्रकरण

समास का अर्थ है, सम् + अस् = संक्षेप में कहना। ''दो या दो से अधिक पदों को मिलाकर जो शब्द बनता है, उसे समास कहते है।'' अर्थात् संक्षेप में कहना ही समास है। समास छः प्रकार के होते हैं–

तत्पुरुष समास

जिसमें पहला शब्द दूसरे शब्द के अर्थ को निश्चित करे अथवा विशेष बतलाए। तत्पुरुष समास के ऐसे सम्बन्ध को व्यक्त करने के लिए विग्रह करने पर द्वितीया से लेकर सप्तमी विभक्ति तक पहले शब्द में विभक्तियॉ लगती हैं। इन विभक्ति के विचार से तत्पुरुष के छः भेद हैं–

द्वितीया तत्पुरुष	कृष्णं आश्रितः	=	कृष्णाश्रितः।
	दुःखम् आपन्नः	=	दुःखापन्नः।
तृतीया तत्पुरुष	अग्निना दग्धः	=	अग्निदग्धः।
	बाणेन हतः	=	वाणहतः।
चतुर्थी तत्पुरुष	दीनाय दानम्	=	दीनदानम्।
	भूतेभ्यः बलिः	=	भूतबलिः।
पंचमी तत्पुरुष	दुःखात् त्रातः	=	दुःखत्रात्।
	चौरात् भयम्	=	चौरभयम्।
	श्येनात् भयम्	=	श्येनभयम्।
षष्ठी तत्पुरुष	राज्ञः पुरुषः	=	राजपुरुषः।
	परेषां उपकारः	=	परोपकारः।
सप्तमी तत्पुरुष	व्यवहारे कुशलः	=	व्यवहार कुशल।
	सभायां पण्डितः	=	सभापण्डितः।

द्विगु समास

संख्यावाचक शब्द पहले रहने पर द्विगु समास होता है, जैसे–

त्रयाणां पथाम् समाहारः	–	त्रिपथम्
पंचानां रात्रीणां समाहारः	–	पञ्चरात्रम्
सप्त च ते ऋषयः	–	सप्तर्षयः

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

द्वन्द्व समास

इसमें दो या दो से अधिक समानाधिकरण पद होते हैं, जिनका सम्बन्ध 'च' से प्रकट होता है। जैसे–

रामश्च लक्ष्मणश्च	–	रामलक्ष्मणौ।
हेमन्तश्च शिशिरश्च वसन्तश्च	–	हेमन्तशिशिरवसन्ताः।

कर्मधारय समास

इसमें प्रथम पद विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य। जैसे–

घन इव श्यामः	–	घनश्यामः।
नीलम् उत्पलम्	–	नीलोत्पलम्।
महान् चासौ पुरुषः	–	महापुरुषः।

बहुब्रीहि समास

बहुब्रीहि समास उन दो या अधिक पदों का होता है, जो मिलकर किसी अन्य पद का अर्थ व्यक्त करते हैं और जिनके विग्रह 'यत्' सर्वनाम का अवश्य प्रयोग होता है। जैसे–

सागरः मेखला यस्या सा	–	सागरमेखला।
पीतं अम्बरं यस्य सः	–	पीताम्बरः।
व्यक्तं सर्वस्वयं येन सः	–	व्यक्तसर्वस्वः।

अव्ययी भाव समास

अव्ययों और अन्य पदों के मेल से अव्ययी भाव समास होता है, और वह क्रिया विशेषण की तरह नपुंसक लिंग में प्रयुक्त होता है। जैसे–

शक्तिम् अनतिक्रम्य	–	यथाशक्ति।
गंगायाः समीपम्	–	उपगंगम्।
शरदः समीपम्	–	उपशरदम्।
आत्मनि इति	–	अध्यात्मम्।

नञ् तत्पुरूष समास

तत् न अर्थात् न (जिसका अर्थ है नहीं) का पदों के साथ समास होता है। इस समास को नञ् तत्पुरूष कहते हैं । यदि न के आगे स्वरादि शब्द हो तो न के स्थान पर अन् हो जाता है। जैसे–

न ब्राह्मणः	–	अब्राह्मणः।
न सत्	–	असत्।
न चतुरः	–	अचतुरः।
न उचितम्	–	अनुचितम्।
न अर्थः	–	अनर्थः।
न ऐक्यम्	–	अनैक्यम्।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

समासान्त

कुछ समस्त शब्दों के आगे प्रत्यय भी लगते हैं, जिसमें शब्दों के अंतिम भाग में परिवर्तन हो जाता है, यथा–

महान् राजा	–	महाराजः।
इन्द्रस्य सखा	–	इन्द्रसखः।
सप्तानां अहनां समाहारः	–	सप्ताहः।
दीर्घे अक्षिणी यस्य सः	–	दीर्घाक्षिः।
द्वौ मूर्धानौ यस्य सः	–	द्विमूर्धः।
शोभनः पन्थाः	–	सुपथम्।

यहॉ – राजन्, सखि, अहन्, मूर्धन् व पथिन् शब्द–अकारान्त बन गये हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तृतीयोऽध्यायः

प्रत्ययानि

कृदन्त प्रकरण

अब कृत् प्रत्यय लगाने वाले सूत्र बतलाये जा रहे हैं, जिन्हें लगाकर पूर्व में बतलाये हुये सूत्रों के अनुसार धातु+प्रत्यय को मिलाकर कृदन्त शब्द तैयार कर लेना चाहिये । इनके अतिरिक्त जो भी अन्य सूत्र लगेंगें वे प्रयोग के स्थल पर बतलाये जायेंगें। प्रक्रिया में इत् संज्ञकों का सभी जगह 'तस्यलोपः' से लोप कर लेना चाहिये। अतः प्रक्रिया में यह सूत्र बार–बार नहीं बताया गया है।

तब्यत् प्रत्यय–

सूत्र–तव्यत्तव्यानीयर – धातुओं से भाव तथा कर्म अर्थ में तव्यत् तव्य तथा अनीयर् प्रत्यय होते हैं।

उदाहरण – उपर्युक्त सूत्र से तव्यत् प्रत्यय लगाकर	=	चि + तव्यत्
'हलन्त्यम्' सूत्र से त् की इत् संज्ञा होकर	=	चि + तव्य
सार्वधतुकार्धधातुकयोः सूत्र से इ को गुण होकर	=	चे + तव्य=चेतव्य
उदाहरण–	=	एध् + तव्यत्
'हलन्त्यम्' सूत्र से त् की इत् संज्ञा होकर	=	एध् + तव्य
आर्धधातुकस्येड् बलादेः सूत्र से इट् का आगम होकर	=	एध् + इट + तव्य
ट् की इत् संज्ञा होकर	=	एधितव्य

अनीयर् प्रत्यय– (सूत्र वही) = तव्यत्तव्यानीयरः।

उदाहरण–		चि + अनीयर्
हलन्त्यम् सूत्र से र् की इत् संज्ञा होकर –		चि + अनीय = चयनीयः

ण्यत् प्रत्यय–

सूत्र–ऋहलाण्र्यत्– ऋकारान्त तथा हलन्त धातुओं से ण्यत् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–	=	कृ + ण्यत्
हलन्त्यम् सूत्र से ण् की तथा चुटू सूत्र से ण् की इत् संज्ञा करके	=	कृ + य
अचो ञ्णिति सूत्र से अन्त को वृद्धि करके	=	कार् + य = कार्य
ण्वुल प्रत्यय–	=	लिख् + ण्वुल्
चुटू से ण् की तथा हलन्त्यम् से ल् की इत् संज्ञा करके	=	लिख् + वु

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

युवोरनाकौ सूत्र से वु को अक आदेश करके = लिख् + अक

पुगन्तलघूपधस्य च से उपधा को गुण करके = लेख + अक = लेखक

तृच् प्रत्यय– सूत्र वही (ण्वुल्तृचौ)

उदाहरण– = कृ+तृच्

हलन्त्यम् से च् की इत् संज्ञा करके = कृ+तृ

सार्वधातुकार्धधातुकयोः से ऋ को गुण करके = कर्+तृ=कर्तृ

क्त्वा प्रत्यय–

सूत्र–समानकर्तृकयोः पूर्वकाले – जब एक ही कर्ता के द्वारा दो क्रियाएँ की जायें तो उस क्रिया से क्त्वा प्रत्यय किया जाता है जो पूर्वकाल में (पहिले) की गई हो। बालक खाकर जाता है। यहाँ बालक ही खाने तथा जाने की क्रिया का कर्ता है उनमें से पूर्वकालिक क्रिया खाना (भुज्) है अतः उससे क्त्वा प्रत्यय लगेगा।

उदाहरण– = भुज्+क्त्वा

लशक्वतद्धिते से क् की इत् संज्ञा होकर = भुज्+त्वा

सूत्र–चोः कुः– पदान्त चवर्ग को कवर्ग होता है अतः चवर्ग के ज् स्थान पर कवर्ग का ग् हो जाता है। = भुग्+त्वा

सूत्र–खरि च– झल् को चर् होता है खर् परे होने पर इस सूत्र से झल् (ग्) के स्थान पर चर् (क्) होकर = भुक्+त्वा

उदाहरण– = भुक्त्वा

= गम्+क्त्वा

लशक्वतद्धिते से क् की इत् संज्ञा होकर = गम्+ त्वा

सूत्र–अनुदात्तोपदेशवनतितनोत्यादीनामनु – नासिकलोपो झलिक्डि.ति– अनुदात्तोपदेश, वनति, तनोति आदि धातुओं के अनुनासिक का लोप होता है झलादि कित् डि.त् प्रत्यय परे होने पर – इस सूत्र से गम् के अनुनासिक म् का लोप होकर = ग+त्वा

उदाहरण– = गत्वा

= कृ+क्त्वा

लशक्वतिद्धते से क् की इत् संज्ञा होकर = कृ+त्वा

विशेष–क्त्वा प्रत्यय के इन सभी उदाहरणों में ध्यान देने योग्य है कि क्त्वा प्रत्यय के कित् होने के कारण कहीं भी गुण आदि कार्य नहीं हुए।

उदाहरण = पठ्+क्त्वा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लशक्वतिद्धते से क् की इत् संज्ञा होकर	= पठ्+त्वा
आर्धधातुकस्येड् वलादेः से इट् का आगम होकर	= पठ्+इट्+त्वा
हलन्त्यम् से ट् की इत् संज्ञा होकर	= पठ्+इ+त्वा
	= पठित्वा

ल्यप् प्रत्यय–

सूत्र–'समासेऽनञ्पूर्वे क्त्वोर्ल्यप्'– समास में (अर्थात् यदि धातु के पूर्व में उपसर्ग आदि हो) तो क्त्वा प्रत्यय को ल्यप् आदेश हो जाता है।

उदाहरण–	= प्र+कृ+ल्यप्
'लशक्वतद्धिते' से ल् की तथा हलन्त्यम् से प् की इत् संज्ञा होकर	= प्र+कृ+य
'स्वस्य पिति कृति तुक्' सूत्र से तुक का आगम होकर	= प्र+कृ+तुक्+य
'उपदशेऽजनुनासिक इत्' से उ की तथा हलन्त्यम् से क् की इत् संज्ञा होकर	= प्र+कृ+त्+य
	= प्रकृत्य

ल्युट् प्रत्यय–

सूत्र–ल्युट् च – भाव अर्थ में धातुओं से ल्युट् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–	= पठ्+ल्युट्
लशक्वतद्धिते से ल् की तथा हलन्त्यम् से ट् की इत् संज्ञा होकर	= पठ्+यु
युवोरनाकौ से यु को अन होकर	= पठ्+अन=पठन
उदाहरण–	= लिख्+ल्युट्
लशक्वतद्धिते से ल् की तथा हलन्त्यम् से ट् की इत् संज्ञा होकर	= लिख्+यु
युवोरनाकौ से यु को अन होकर	= लिख+अन
पुगन्तलघूपधस्य च से उपधा के इ को गुण होकर	= लेख्+ अन
	= लेखन

निष्ठा प्रत्यय– (क्त–क्तवतु)

क्त तथा क्तवतु प्रत्यय को निष्ठा प्रत्यय कहते हैं।

सूत्र–निष्ठा– भूतकाल अर्थ मे ंधातुओं से निष्ठा प्रत्यय अर्थात् क्त तथा क्ववतु प्रत्यय होते हैं।

उदाहरण–	= कृ+क्त
लशकवतद्धिते सूत्र से क् की इत् संज्ञा होकर	= कृ+त= कृत

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उदाहरण–	=	गम्+क्त
लशक्वतद्धिते सूत्र से क् की इत् संज्ञा होकर	=	गम्+त
अनुदात्तोपदेश–सूत्र से म् का लोप होकर	=	ग+त=गत
उदाहरण–	=	पठ्+क्त
तशकवतद्धिते सूत्र से क् की इत् संज्ञा होकर	=	पठ्+त
आर्धधातुकस्येड् वलादेः सूत्र से इट् का आगम होकर	=	पठ्+इट्+त
हलन्त्यम् सूत्र से ट् की इत् संज्ञा होकर	=	पठ्+इ+त
	=	पठित
उदाहरण–	=	भिद्+क्त
लशक्वतद्धिते सूत्र से क् की इत् संज्ञा करके	=	भिद्+त
सूत्र–रदाभ्यां निष्ठातो नः पूर्वस्य च दः – यदि र्, द् के बाद निष्ठा प्रत्यय आया हो तो उस निष्ठा प्रत्यय के त को न हो जाता है तथा धातु के द् को भी न् हो जाता है।		
अतः इस सूत्र से द् को न् होकर	=	भिन्+न= भिन्न
उदाहरण–	=	जॄ+क्त= जीर्णः
सूत्र– ॠ इद् धातोः– धातु के ॠ का इ हो जाता है।		
क्तवतु प्रत्यय–		
सूत्र–(वही)–निष्ठा		
उदाहरण–	=	कृ+क्तवतु
लशक्वतद्धिते से क् की तथा उपदेशेऽजनुनासिक इत् सूत्र से उ की इत् संज्ञा होकर	=	कृ+तवत् = कृतवत्

विशेष– इसी प्रकार गत के समान प्रक्रिया से गतवत्, पठित के समान प्रक्रिया से पठितवत्, भिन्न के समान प्रक्रिया से भिन्नवत् जीर्ण के समान प्रक्रिया से जीर्णवत् रूप बनेंगे।

अभी तक जो भी 13 कृत् प्रत्यय बताये गये हैं, तब्यत्, अनीयर, यत्, क्यप्, ण्यत्, तुमुन, ण्वुल्, तृच्, क्त्वा, ल्यप्, त्युट्, क्त, और क्तवतु, इन प्रत्ययों में यह स्पष्ट हुआ कि इनमें से किसी में भी श् की इत् संज्ञा नहीं हुई है। अतः ये प्रत्यय शित् न होने के कारण आर्धधातुकं शेषः सूत्र के अनुसार आर्धधातुक प्रत्यय है।

अब जो शतृ शानच् प्रत्यय कहे जा रहे हैं उन दोनों में श् की इत् संज्ञा होने के कारण वे सार्वधातुक हैं। अब हमें यह जानना है कि यह दो प्रकार का भेद क्यों किया गया है। ऐसे कौन से कार्य हैं जो सार्वधातुक प्रत्यय लगने पर किये जाते हैं और आर्धधातुक प्रत्यय लगने पर नहीं किये जाते है?

जब भी प्रत्यय शित् होता है तो सार्वधातुक कहलाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

शतृ प्रत्यय

सूत्र–लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे–लट् लकार के स्थान पर शतृशानच् का प्रयोग होता है।

उदाहरण	= गच्छ् + शतृ
लशक्वतद्धिते सूत्र से श् की तथा उपदेशेऽनुनासिक इत् सूत्र से ऋ की इत् संज्ञा करके	= गच्छ् + अत्
कर्तरि शप् से शप् (विकरण) का आगम करके	= गच्छ्+शप्+अत्
लशक्वतद्धिते सूत्र से श् तथा हलन्त्यम् से प् की इत् संज्ञा करके	= गच्छ्+अ+अत्
सूत्र–अतो गुणे– अ को पररूप होता है, गुण परे होने पर। अतः अ से परे दूसरा अ, जो कि गुण है, उसके परे होने पर, पूर्व अ को पररूप हो जायेगा अर्थात् यह जाकर अगले अ का ही रूप बनकर उसमें विलीन हो जायेगा ।	= गच्छ्+अत्+गच्छत्

शानच् प्रत्यय –

सूत्र वही (लटः शतृशानचावप्रथमासमानाधिकरणे।)

उदाहरण	= वन्द्+शानच्
हलन्त्यम् सूत्र से च् तथा लशक्वतद्धिते सूत्र से श् की इत् संज्ञा करके	= वन्द्+आन
कर्तरि शप् का आगम करके	= वन्द्+शप्+आन
लशक्वतद्धिते सूत्र से श् की तथा हलन्त्यम् से प् की इत् संज्ञा करके	= वन्द्+अ+आन
सूत्र–आने मुक् – अदन्त अङ्ग को मुक् का आगम होता है (अङ्ग उसे कहते हैं जिससे प्रत्यय लगाया जाता है)	= वन्द्+अ+मुक्+आन
उपदेशेऽजनुनासिक इत् से उ की तथा हलन्त्यम् सूत्र से क् की इत् संज्ञा होकर	= वन्द्+अ+म्+आन
	= वन्दमान

तद्धित प्रकरण

अभी तक जो भी प्रत्यय हमने पढ़े वे हमारे प्रत्यय धातुओं से लगने के कारण कृत् प्रत्यय थे। अब जो प्रत्यय बतलाये जा रहे हैं वे धातुओं से न लगकर अन्य किन्हीं भी सार्थक शब्दों (प्रातिपदिकों) से लगेंगें, अतः उन्हें तद्धित प्रत्यय कहा जायेगा।

तद्धित प्रत्ययों को लगाने के लिये पिछले कृत् प्रत्ययों में पढ़े हुए नियमों के अतिरिक्त कुछ नियम और लगेंगें, उन्हें जान लेना आवश्यक है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(1) अपत्यार्थक तद्धित प्रत्यय – यहाँ जो भी तद्धित प्रत्यय बतलाये जा रहे है, वे अपत्य (सन्तान) अर्थ में होंगें जैसे–दक्षस्य अपत्यं दाक्षिः दक्ष का पुत्र दाक्षि। यहाँ इ प्रत्यय लगा है। इस प्रकार अपत्य अर्थ में यहाँ चार प्रत्यय बतलायें जायेंगें । अण्, इञ्, ण्य, ढ़क्।

अण् प्रत्यय –

सूत्र–तस्यापत्यम् – प्रातिपदिकों से अपत्य अर्थ में अण् आदि होते हैं ।

उदाहरण–

अश्वपतेः अपत्यम् आश्वपतम्	= अश्वपति+अण्
हलन्त्यम् से ण् की इत् संज्ञा करके	= अश्वपति+अ
तद्धितेष्वचामादेः से आदि अच्, अ की वृद्धि करके	= आश्वपति+अ
यस्येति च सूत्र से अंतिम इ का लोप करके	= अश्वपत्+अ
	= आश्वपतम्

उदाहरण–

उपगोः अपत्यम्– औपगवः	= उपगु+अण्
चुटू से आदि टवर्ग, ण् की इत् संज्ञा करके	= उपगु+अ
तद्धितेष्वचामादेः सूत्र से आदि अच् उ को वृद्धि करके	= औपगु+अ
ओर्गणः सूत्र से अन्तिम उ को गुण करके	= औपगो +अ
एचोऽयवायावः सूत्र से ओ को अव् आदेश करके	= ओपगव्+ अ
	= औपगव

इञ् प्रत्यय–

सूत्र–अत–इञ्– अदन्त प्रातिपादिकों से
अपत्य अर्थ में इ०् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–

दक्षस्य अपत्यम्	= दक्ष+इञ्
हलन्त्यम् सूत्र से ञ् की इत् संज्ञा होकर	= दक्ष+इ
तद्धितेष्वचामादेः सूत्र से आदि स्वर अ को वृद्धि होकर	= दाक्ष +इ
यस्येति च से अन्तिम अ का लोप होकर	= दाक्ष्+इ=दाक्षि

ढक् प्रत्यय–

सूत्र–स्त्रीम्यो ढक् – स्त्रीप्रत्ययान्त प्रातिपादिकों से अपत्य अर्थ में ढक् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–

विनतायाः अपत्यम्–वैनतेयः	= विनता+ढक्
हलन्त्यम् सूत्र से क् की इत् संज्ञा करके	= विनता+ ढक्
आयनेयीयियः फढखछघां प्रत्ययादीनां सूत्र से ढ को एय करके	= विनता+एय

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तद्धितष्वचामादेः सूत्र से आदि अच् को वृद्धि करके	= वैनता+एय
यस्येति च सूत्र से अन्तिम अच् आ का लोप करके	= वैनत्+एय=वैनतेय

(2) भावार्थक तद्धित प्रत्यय – किसी भी पदार्थ में रहने वाला धर्म (गुण) उसका भाव कहलाता है। उस भाव अर्थ में प्रातिपदिकों से जो प्रत्यय लगाये जाते हैं उन्हें भावार्थक प्रत्यय कहते हैं। उनमें से चार मुख्य प्रत्यय यहाँ बतलाये जा रहे हैं। = ष्यञ्, त्व, तल्, इमनिच्।

ष्यञ् प्रत्यय–

सूत्र–वर्णदृढादिभ्यः ष्यञ् च – वर्णवाची तथा दृढादि प्रातिपदिकों से भाव अर्थ में ष्यञ् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–

शुक्लस्य भावः– शौक्ल्यम्	= शुक्ल+ष्यञ्
षः प्रत्ययस्य सूत्र से ष् की इत् संज्ञा करके तथा	
हलन्त्यम् सूत्र से ञ् की इत् संज्ञा करके	= शुक्ल+य
तद्धितेष्वचामादेः सूत्र से आदि अच् की वृद्धि करके	= शौक्ल+य
यस्येति च सूत्र से अन्तिम अ का लोप करके	= शौक्ल+य= शौक्ल्य

त्व प्रत्यय–

सूत्र– तस्य भावस्त्वतलौ – भाव अर्थ में प्रातिपदिकों से त्व प्रत्यय होता है।

उदाहरण –

गौर्भावः–गोत्वम्	= गो+त्व=गौत्व
इसी प्रकार	= गुरु+त्व=गुरुत्व
	= लघु+त्व=लघुत्व
	= महत्+त्व= महत्व

आदि शब्द समझना चाहिये।

तरप् प्रत्यय–

सूत्र–द्विवचनविभज्योपपदे तरबोयसुनौ – जब किन्हीं दो गुणचाचक प्रत्ययों में से किसी एक का प्रकर्ष या अतिशय बतलाया जाये तो तरप् या ईयसुन् का प्रयोग होता है ।

उदाहरण –

अयम् अनयोः अतिशयेन लघुः–लघुतरः	= लघु+तरप्
हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत् संज्ञा होकर	= लघु+तर
	= गुरुतर
	मृदु+तरप् = मृदुतर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दृढ़+तरप् = दृढ़तर

सुकुमार+तरप् = सुकुमारतर

तमप् प्रत्यय –

सूत्र–अतिशायने तमविष्ठनौ – जब दो से अधिक गुणवाचकों में परस्पर तुलना की जाकर किसी एक का प्रकर्ष या अतिशय बतलाया जावे वहाँ तमप् या इष्ठत् प्रत्यय होते हैं।

उदाहरण–

अयम् एषाम् अतिशयेन लघुः–लघुतमः	= लघु+तमप्
हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत् संज्ञा होकर	= लघु+तम
	= लघुतम
इसी प्रकार	गुरु + तमप्=गुरुतम
	मृदु+तमप्=मृदुतम
	पटु+तमप्=पटुतम
	मूर्ख+तमप्=मूर्खतम

तल् प्रत्यय – "तस्य भावस्त्वतलौ"

सूत्र (1)–ग्रामजनबन्धुभ्यस्तल्

वार्तिक (2) गजसहायाभ्यां चेति वक्तव्यम्–ग्राम, जन तथा बन्धु शब्दों से समूह में तल् प्रत्यय होता है तथा गज और सहाय शब्दों से भी समूह अर्थ में यह प्रत्यय होता है । तलन्तं स्त्रियां के अनुसार यह प्रत्यय जब भी होगा वहाँ स्त्रीलिंग का वाचक टाप् प्रत्यय अवश्य लगेगा। क्योंकि तल् प्रत्यय से बने हुए शब्द सदा स्त्रीलिंग में ही होते हैं।

उदाहारण–

ग्रामाणां समूहः–ग्रामता	= ग्राम+तल्
हलन्त्यम् सूत्र से ल् की इत् संज्ञा करके	= ग्राम+त
स्त्रीलिंग में टाप् प्रत्यय करके	= ग्रम+त+टाप्
चुटू सूत्र से ट् की इत् संज्ञा तथा हलन्त्यम् में	
प् की इत् संज्ञा करके	= ग्राम+त+आ
संधि सूत्र अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ आदेश करके=ग्रामता	

उदाहरण –

जनानां समूहः–जनता	= जन+तल्
हलन्त्यम् सूत्र से ल् की इत् संज्ञा करके	= जन+त
स्त्रीलिंग में टाप् प्रत्यय लगाकर	= जन+त+आ
पूर्ववत् दीर्घ सन्धि करके	= जनता

(5) मत्वर्थीय तद्धित प्रत्यय – मत्वर्थीय प्रत्यय वे प्रत्यय कहलाते हैं जिसका प्रयोग किसी पदार्थ सेयुक्त होने के अर्थ में किया जाता है– जैसे वुद्धि से युक्त बुद्धिमान्, धन युक्त धनवान, गायों से युक्त गौमान् आदि । इस अर्थ में लगने वाले दो प्रत्यय यहाँ बतलाते हैं– मतुप् तथा इनि।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सुत्र– तस्यास्त्यस्मिन्निति मतुप्– तद् अस्मिन् अस्ति (वह पदार्थ इसमें है) इस अर्थ में प्रातिपदिकों से मतुप् प्रत्यय होता है।

उदाहरण– = गौ+ मतुप्

हलन्त्यम् सूत्र से प् की तथा उपदेशेऽजनुनासिक इत्
सूत्र से उ की इत् संज्ञा होकर = गौ+मत्= गौमत्

उदाहरण–

बुद्धिः अस्मिन् अस्ति– बुद्धिमान् = बुद्धि+मतुप= बुद्धिमत्

इतच् प्रत्यय–

सूत्र– तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतच्–

तद् अस्य सञजातम् इस अर्थ में तारक आदि शबदों से इतच् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–

तारकः सञजाताः अस्मिन् तारकितं नभः = तारक+इतच्
हलन्त्यम् सूत्र से च् की इत् संज्ञा होकर = तारक+ इत
यस्येति च सूत्र से अ का लोप होकर = तारक्+इत = तारकित

उदाहरण–

पण्डा (सद्विवेकिनी बुद्धि)
संजाता अस्य पण्डितः = पण्डा+इतच्
हलन्त्यम् सूत्र से च् की इत् संज्ञा होकर = पण्डा+इत
यस्येति च सूत्र से आ का लोप होकर = पण्ड्+इत = पण्डित
इसी प्रकार = लज्जा+ इतच्= लज्जित
= पुष्प+ इतच्= पुष्पित
= पुलक+ इतच्= पुलकित
= रोमाञ्च+इतच्=रोमाञ्चित

आदि शब्दों की रचना समझना चाहिये।

इनि प्रत्यय–

तद् अस्मिन् अस्ति इस धर्म में इनि और इन् प्रत्यय भी होते हैं।

उदाहरण– = दण्ड+इनि
उपदेशेऽजनुनासिक इत् से इ की इत् संज्ञा करके = दण्ड+इन्
यस्येति च से अ का लोप करके = दण्ड+इन्=दण्डिन्

उदाहरण– = पक्ष+ इनि

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उपदेशेऽजनुनासिक इत् से इ की इत् संज्ञा करके	= पक्ष + इन्
यस्येति च से अ का लोप करके	= पक्ष+इन=पक्षिन्
इसी प्रकार	= सन्यास+इनि= सन्यासिन्
	= योग+इनि=योगिन्

आदि शब्दों की रचना भी समझना चाहिये।

स्त्री प्रत्यय प्रकरण

अभी तक कृत् प्रकरण में जो कारक आदि तथा तद्धित प्रकरण में जो औपगव आदि रूप तैयार किये गये उनके रूप स्त्रीलिंग में क्या होंगे? औपगव का स्त्रीलिंग औपगवी होगा या औपगवा ? यह प्रश्न सहज उठता हे। हंस का स्त्रीलिंग हंसी होगा या हंसा ? मयूर का स्त्रीलिंग मयूरी होगा या मयूरा? इस जिज्ञासा का समाधान स्त्री प्रत्यय में किया जायेगा।

टाप् प्रत्यय–

सूत्र–अजाद्यतष्टाप् – अजा आदि तथा अदन्त प्रादिपदिकों से स्त्रीत्व विवक्षा में टाप् प्रत्यय होता है।

उदाहरण –

अजत्वविशिष्टास्त्री	= अज+टाप्
चुटू सूत्र के ट् की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प् की इत् संज्ञा होकर सन्धि सूत्र अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ आदेश होकर	= अज+आ= अजा

उदाहरण–

अश्वत्वविशिष्टा स्त्री अश्वा	= अश्व+टाप्
चुटू सूत्र से ट् की तथा हलन्त्यम् से प् की इत् संज्ञा होकर	= अश्व+ आ
अकः सवर्णे दीर्घः से दीर्घ आदेश होकर	= अश्वा

इसी प्रकार एडका, चटका, मूषिका, आदि शब्दों की रचना समझना चाहिये।

ड़ीप् प्रत्यय–

सूत्र – टिड्ढाणञ् द्वयसज्दघ्नञ् मात्रच्तयप्ठक्ठञ् कञ्क्वरपः।

हमने कृदन्त आदि तद्धित में जो भी शब्द बनाये, उनमें से जो शब्द टित् प्रत्ययों से बने हैं, जो शब्द अण् प्रत्यय से बने हैं, उनसे स्त्री लिंग बनाने के लिये ङ़ीप् प्रत्यय लगता है। इसी प्रकार द्वयसच्, ददनच्, मात्रच्, तयप्, ठक्, ठा् का, तथा क्वरप् आदि प्रत्ययों से बने हुए शब्दों के स्त्रीलिंग बनाने के लिए भी ङ़ीप् प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उदाहरण— = कुरुचर+ङीप्

लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ्. की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प्

की इत् संज्ञा करके = कुरुचर्+ई

यस्येति च सूत्र से अन्तिम अ का लोप करके = कुरुचर्+ई

= कुरुचरी

उदाहरण— = औपगव+ङीप्

लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ्.की तथा हलन्त्यम् सूत्र से प्

की इत् संज्ञा करके = औपगव+ई

यस्येति च सूत्र से अन्तिम अ का लोप करके = औपगव्+ई

= औपगवी

ङ़ीष् प्रत्यय—

सूत्र—षिद्गौरादिभ्यश्च— षित् प्रत्ययों से बने हुए जो भी प्रातिपदिक हैं उनसे स्त्रीलिंग में ङ़ीष् प्रत्यय होता है, तथा गौर आदि प्रातिपदिकों से भी स्त्रीत्वद्योतन में ङ़ीष् प्रत्यय होता है।

उदाहरण— = नर्तक+ ङीष्

लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ्.की तथा हलन्त्यम् सूच से

ष् की इत् संज्ञा होकर = नर्तक+ई

यस्येति च सूत्र से अ का लोप होकर = नर्तक+ई

= नर्तकी

संधि सूत्र इको यणचि से उ को व् होकर = मृद्व्+ई

= मृद्वी

सूत्र—बह्वादिभ्यश्च — बहु आदि प्रतिपदिकों से भी ङीष् प्रत्यय होता है।

उदाहरण—

लशक्वतद्धिते सूत्र से ङ्. की तथा हलन्त्यम् सूत्र से ष्

की इत् संज्ञा होकर = बह् व्+ई

= बह् वी

सूत्र—पुंयोगादाख्यायाम् — पुरूष के संबंध से स्त्रीत्व अर्थ बताने के लिये ङीष् प्रत्यय होता है।

उदाहरण—गोपस्य स्त्री गोपी = गोप+ङीष्

लशक्वद्धिते सूत्र से ङ्. की तथा हलन्त्यम् सूत्र से ष् की

इत् संज्ञा होकर = गोप+ई

यस्तेति च सूत्र से अ का लोप करके = गोप्+ई

= गोपी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सूत्र–जातेरस्त्रीविषयादयोपधात् – जातिवाची प्रातिपदिकों से स्त्रीलिंग में ड.ीष् प्रत्यय होता है

उदारहण	= हंस+ड.ीष्
लशक्वतद्धिते से ड्. की तथा हलन्त्यम् सूत्र से	
ष् की इत् संज्ञा होकर	= हंस+ई
तस्येति च सूत्र अ लोप करके	= हंस+ई+हंसी
उदाहरण	= मयूर+ड.ीष्
लशक्वतद्धिते सू. से ड्. की तथा हलन्त्यम् सूत्र से	
ष् की इत् संज्ञा होकर	= मयूर+ई
यस्तेति च सू. से अ का लोप करके	= मयूर+ई=मयूरी
उदाहरण –	
लशक्वतद्धिते सूत्र से ड्. की तथा हलन्त्यम् सूत्र से ष् की इत्	
की इत् संज्ञा होकर	= वृषल+ई
यस्येति च सू. से अ का लोप करके	= वृषल्+ई=वृषली

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

चतुर्थः अध्यायः

सुबन्त–प्रकरण (शब्द रूपाणि)

संस्कृत भाषा में लिंग तीन हैं–पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग। ये सदा अर्थ के अनुसार नहीं होते हैं, अपितु पहले से ही निश्चित हैं। उदाहरणर्थ–पत्नी, अर्थ में 'भार्या' शब्द स्त्रीलिंग है तो 'दारा' शब्द पुल्लिंग में तथा 'कलत्र' शब्द नपुंसकलिंग में होता है । ऐसे ही 'काया' और 'देह' शब्द पुल्लिंग में है, तो 'शरीर' नपुंसकलिंग में होता है। प्रत्येक लिंग में कुछ शब्द स्वर से अन्त होते हैं, तथा कुछ व्यंजन से संस्कृत में तीन वचन होते हैं–एकवचन, द्विवचन, बहुवचन।

(क) स्वरान्त शब्दों के रूप

अकारान्त पुल्लिङ्ग राम शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पञ्चमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोंः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः!

इकारान्तपुल्लिङ्ग मुनि शब्द

प्रथमा	मुनिः	मुनी	मुनयः
द्वितीया	मुनिम्	मुनी	मुनीन्
तृतीया	मुनिना	मुनिभ्याम्	मुनिभिः
चतुर्थी	मुनये	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
प०चमी	मुनेः	मुनिभ्याम्	मुनिभ्यः
षष्ठी	मुनेः	मुन्योंः	मुनीनाम्
सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
सम्बोधन	हे मुने!	हे मुनी!	हे मुनयः

उकारान्त पुल्लिङ्ग भानु शब्द

प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भनुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पञ्चमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो!	हे भानू!	हे भानवः!

उकारान्त पुल्लिङ्ग स्वयं भू शब्द

प्रथमा	स्वयम्भूः	स्वयम्भूवौ	स्वयम्भुवः
द्वितीया	स्वयम्भुवम्	स्वयम्भुवौ	स्वयम्भुवः
तृतीया	स्वयम्भुवा	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभिः
चतुर्थी	स्वयम्भुवे	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभ्यः
पञ्चमी	स्वयम्भुवः	स्वयम्भूभ्याम्	स्वयम्भूभ्यः
षष्ठी	स्वयम्भुवः	स्वयम्भुवोः	स्वयम्भुवाम्
सप्तमी	स्वयम्भुवि	स्वयम्भुवो	स्वयंभूषु
सम्बोधन	हे स्वयम्भूः!	हे स्वयम्भुवौ !	हे स्वयम्भुवः!

ऋकारान्त पुल्लिङ्ग पितृ शब्द

प्रथमा	पिता	पितरौ	पितरः
द्वितीया	पितरम्	पितरौ	पितृन्
तृतीया	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
चतुर्थी	पित्रे	पितृभ्याम	पितृभ्यः
पञ्चमी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृम्यः
षष्ठी	पितुः	पित्रोः	पितृणाम्
सप्तमी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः !	हे पितरौ!	हे पितरः!

अकारान्त स्त्रीलिंग लता शब्द

प्रथमा	लता	लते	लताः
द्वितीया	लताम्	लते	लताः
तृतीया	लतया	लताभ्याम्	लताभिः
चतुर्थी	लतायै	लताभ्याम्	लताभ्यः
पञ्चमी	लतायाः	लताभ्याम्	लताभ्यः
षष्ठी	लतायाः	लतयोः	लतानाम्
सप्तमी	लतायाम्	लतयोः	लतासु
सम्बोधन	हे लते!	हे लते!	हे लताः!

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

इकारान्त 'स्त्री' (स्त्रीलिङ्ग)

प्रथमा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
द्वितीया	स्त्रियम् (स्त्रीम्)	स्त्रियौ	स्त्रियः (स्त्रीः)
तृतीया	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः
चतुर्थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
पञ्चमी	स्त्रियाः	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
षष्ठी	स्त्रियाः	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
सप्तमी	स्त्रियाम्	स्त्रियोंः	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्री!	हे स्त्रियोः!	हे स्त्रियः

ऋकारान्त स्वसृ शब्द (स्त्रीलिङ्ग)

विभक्ति	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथमा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
द्वितीया	स्वसारम्	स्वसारौ	स्वसृः
तृतीया	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभिः
चतुर्थी	स्वस्रे	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
पञ्चमी	स्वसुः	स्वसृभ्याम्	स्वसृभ्यः
षष्ठी	स्वसुः	स्वस्रोः	स्वसृणाम्
सप्तमी	स्वसरि	स्वस्रोः	स्वसृषु
सम्बोधन	हे स्वसः	हेस्वसारौ	हे स्वसारः

अकारान्त फल शबद (नपुंसकलिङ्ग)

प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल	हे फले	हे फलानि

इकारान्त 'वारि' (नपुंसकलिङ्ग)

प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	हे वारि (वारे)	हे वारिणी	हे वारीणी

उकारान्त 'मधु' (नपुंसकलिङ्ग)

प्रथमा	मधु	मधुनी	मधूनि
द्वितीया	मधु	मधुनी	मधूनि
तृतीया	मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः
चतुर्थी	मधुने	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
पञ्चमी	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः
षष्ठी	मधुनः	मधुनोः	मधुनाम्
सप्तमी	मधुनि	मधुनोः	मधुषु
सम्बोधन	हे मधो (मधु)	हे मधुनी	हे मधूनि

(ख) ब्यजनान्त शब्दो के रूप

तकारान्त पुंल्लिङ्ग भवत् शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
द्वितीया	भवन्तम्	भवन्तौ	भवतः
तृतीया	भवता	भवद्भ्याम्	भवद्भिः
चतुर्थी	भवते	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
पञ्चमी	भवतः	भवद्भ्याम्	भवद्भ्यः
षष्ठी	भवतः	भवतोः	भवताम्
सप्तमी	भवति	भवतोः	भवत्सु
सम्बोधन	हे भवन्	हे भवन्तौ	हे भवन्तः

तकारान्त पुल्लिङ्ग गच्छत् शब्द

प्रथमा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
द्वितीया	गच्छन्तम्	गच्छन्तौ	गच्छतः
तृतीया	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
चतुर्थी	गच्छते	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
पञ्चमी	गच्छतः	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः
षष्ठी	गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
सप्तमी	गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन्!	हे गच्छन्तौ!	हे गच्छन्तः

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नकारन्त पुल्लिङ्ग राजन् शब्द

प्रथमा	राजा	राजानौ	राजानः
द्वितीया	राजानम्	राजानौ	राज्ञः
तृतीया	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
चतुर्थी	राज्ञे	राजभ्याम्	राजभ्यः
पञ्चमी	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः
षष्ठी	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्
सप्तमी	राज्ञि, राजनि	राज्ञोः	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्!	हे राजनौ!	हे राजानः

चकारान्त स्त्रीलिङ्ग वाच् शब्द

प्रथमा	वाक्, वाग्	वाचौ	वाचः
द्वितीया	वाचम्	वाचौ	वाचः
तृतीया	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
चतुर्थी	वाचे	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
पञ्चमी	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः
षष्ठी	वाचः	वाचोः	वाचाम्
सप्तमी	वाचि	वाचोः	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक्, हे वाग्!	हे वाचौ!	हे वाचः!

शकारान्त स्त्रीलिङ्ग दिश् शब्द

प्रथमा	दिक्, दिग्	दिशौ	दिशः
द्वितीया	दिशम्	दिशौ	दिशः
तृतीया	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
चतुर्थी	दिशे	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
पञ्चमी	दिशः	दिग्भ्याम्	दिग्भ्यः
षष्ठी	दिशः	दिशोः	दिशाम्
सप्तमी	दिशि	दिशोः	दिक्षु
सम्बोधन	हे दिग्, हे दिक्!	हे दिशौ!	हे दिशः!

हलन्त स्त्रीलिङ्ग तकारान्त 'सरित्' शब्द

प्रथमा	सरित्	सरितौ	सरितः
द्वितीया	सरितम्	सरितौ	सरितः
तृतीया	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिदिः
चतुर्थी	सरिते	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः
पञ्चमी	सरितः	सरिद्भ्याम्	सरिद्भ्यः

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

षष्ठी	सरितः	सरितोः	सरिताम्
सप्तमी	सरिति	सरितोः	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित्	हे सरितौ	हे सरितः

दकारान्त 'सम्पद्' शब्द

प्रथमा	सम्पत्, सम्पद्	सम्पदौ	सम्पदः
द्वितीया	सम्पदम्	समपदौ	सम्पदः
तृतीया	सम्पदा	सम्पद्भ्याम्	समपद्भिः
चतुर्थी	सम्पदे	सम्पद्भ्याम्	सम्पद्भ्यः
पञ्चमी	सम्पदः	सम्पद्भ्याम्	सम्पद्भ्यः
षष्ठी	सम्पदः	सम्पदोः	सम्पदाम्
सप्तमी	सम्पदि	समपदोः	सम्पत्सु
सम्बोधन	हे सम्पद्	हे सम्पदौ	हे सम्पदः

हलन्त नपुंसकलिङ्ग नकारन्त 'नामन्' शब्द

प्रथमा	नाम	नामनी	नामानि
द्वितीया	नाम	नामनी	नामानि
तृतीया	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
चतुर्थी	नाम्ने	नामभ्याम्	नामभ्यः
पञ्चमी	नाम्नः	नामभ्याम्	नामभ्यः
षष्ठी	नाम्नः	नाम्नोः	नाम्नाम्
सप्तमी	नाम्नि (नामनि)	नाम्नोः	नामसु
सम्बोधन	हे नाम	हे नामनी	हे नामानि

(ग) सर्वनाम शब्दों के रूप

दकारान्त अस्मद् शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पञ्चमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः	अस्मासु

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दकारान्त युष्मद् शब्द

प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्, त्वा	युवाम्, वाम्	युष्मान्, वः
तृतीया	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
चतुर्थी	तुभ्यम्, ते	युवाभ्याम्,वाम्	युष्मभ्यम्, वः
पञ्चमी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
षष्ठी	तव, ते	युवयोः वाम्	युष्माकम्, वः
सप्तमी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

दकारान्त पुल्लिङ्ग तद् शब्द

प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्
तृतीया	तेन	ताभ्याम्	तैः
चतुर्थी	तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः
पञ्चमी	तस्मात्	ताभ्याम्	तेभ्यः
षष्ठी	तस्य	तयोः	तेषाम्
सप्तमी	तस्मिन्	तयोः	तेषु

दकारान्त स्त्रिलिङ्ग तद् शब्द

प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः
तृतीया	तया	ताभ्याम्	ताभिः
चतुर्थी	तस्यै	ताभ्याम्	ताभ्यः
पञ्चमी	तस्याः	ताभ्याम्	ताभ्यः
षष्ठी	तस्याः	तयोः	तासाम
सप्तमी	तस्या	तयोः	तासु

नपुंसकलिङ्ग 'तद' शब्द

प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्,	ते	तानि

'किम्' शब्द पुल्लिङ्ग

प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्
तृतीया	केन	काभ्याम्	कैः
चतुर्थी	कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पञ्चमी	कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः
षष्ठी	कस्य	कयोः	केषाम्
सप्तमी	कस्मिन्	कयोः	केषु

'किम्' शब्द स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः
तृतीया	कया	काभ्याम्	काभिः
चतुर्थी	कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः
पञ्चमी	कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः
षष्ठी	कस्याः	कयोः	कासाम्
सप्तमी	कस्याम्	कयोः	कासु

'किम्' शब्द नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

नोटः— शेष विभक्तियों में पुल्लिंग के समान रूप होंगे।

'इदम्' शब्द पुल्लिङ्ग

प्रथमा	अयम्	इमौ	इमे
द्वितीया	इमम्	इमौ	इमान्
तृतीया	अनेन	आभ्याम्	एभिः
चतुर्थी	अस्मै	आभ्याम्	एभ्यः
पञ्चमी	अस्मात्	आभ्याम्	एभ्यः
षष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
सप्तमी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

'इदम्' शब्द स्त्रीलिङ्ग

प्रथमा	इयम्	इमे	इमाः
द्वितीया	इमाम्	इमे	इमाः
तृतीया	अनया	आभ्याम्	आभिः
चतुर्थी	अस्यै	आभ्याम्	आभ्यः
पञ्चमी	अस्याः	आभ्याम्	आभ्यः
षष्ठी	अस्याः	अनयोः	आसाम्
सप्तमी	अस्याम्	अनयोः	आसु

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

'इदम्' शब्द नपुंसकलिङ्ग

प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
द्वितीया	इदम्, एनम्	इमे,एने	इमानि, एनानि

नोट – शेष रूप पुल्लिङ्ग की तरह चलेगा।

संख्याएँ (गिनती)

(एक से पचास तक संस्कृत में संख्याएँ)

1.	एकः, एका, एकम्	2.	द्वौ, द्वे
3.	त्रयः, तिस्रः, त्रीणि	4.	चत्वारः, चतस्रः, चत्वारि
5.	पञ्च	6.	षट्
7.	सप्त	8.	अष्ट, अष्टौ
9.	नव	10.	दश
11.	एकादश	12.	द्वादश
13.	त्रयोदश	14.	चतुर्दश
15.	पञ्चदश	16.	षोडश
17.	सप्तदश	18.	अष्टादश
19.	नवदश, एकोनविंशतिः	20.	विंशतिः
21.	एकविंशतिः	22.	द्वाविंशतिः
23.	त्रयोविंशतिः	24.	चतुर्विंशतिः
25.	पञ्चविंशतिः	26.	षड्विंशतिः
27.	सपतविंशतिः	28.	अष्टाविंशतिः
29.	नवविंशतिः, एकोनत्रिंशत्	30.	त्रिंशत्
31.	एकत्रिंशत्	32.	द्वात्रिंशत्
33.	त्रयस्त्रिंशत्	34.	चतुस्त्रिंशत्
35.	पंचत्रिंशत्	36.	षट्त्रिंशत्
37.	सप्तत्रिंशत्	38.	अष्टात्रिंशत्
39.	नवत्रिंशत्, एकोनचत्वारिंशत्	40.	चत्वारिंशत्
41.	एकचत्वारिंशत्	42.	द्वाचत्वारिंशत, द्विचत्वारिंशत्
43.	त्रयश्चत्वारिंशत्	44.	चतुश्चत्वारिंशत्
45.	पंचचत्वारिंशत्	46.	षट्चत्वारिंशत्
47.	सप्तचत्वारिंशत्	48.	अष्टचत्वारिंशत्, अष्टाचत्वारिंशत्
49.	नवचत्वारिंशत्, एकोनपञ्चाशत्	50.	पञ्चाशत्
60.	षष्टिः	70.	सप्ततिः

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

80.	अशीतिः	90.	नवतिः
100.	शतम्	1000.	सहस्रम्
100000.	लक्षम्	10000000.	कोटिः

संख्यावाचक शब्दों के शब्द रूप

1. 'एक' शब्द के रूप

विभक्ति	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	एकः	एका	एकम्
द्वितीया	एकम्	एकाम्	एकम्
तृतीया	एकेन	एकया	एकेन
चतुर्थी	एकस्मै	एकस्यै	एकस्मै
पंचमी	एकस्मात्	एकस्याः	एकस्मात्
षष्ठी	एकस्य	एकस्याः	एकस्य
सप्तमी	एकस्मिन्	एकस्याम्	एकस्मिन्

विशेष – एक शब्द के रूप तीनों लिंगों में मात्र एकवचन में ही चलते हैं।

2. 'द्वि' शब्द के रूप

विभक्ति	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	द्वौ	द्वे	द्वे
द्वितीया	द्वौ	द्वे	द्वे
तृतीया	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
चतुर्थी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
पंचमी	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्	द्वाभ्याम्
षष्ठी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः
सप्तमी	द्वयोः	द्वयोः	द्वयोः

विशेष – द्वि शब्द के रूप तीनों लिंगों में मात्र द्विवचन में ही चलते हैं।

3. 'त्रि' शब्द के रूप

विभक्ति	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	त्रयः	तिस्रः	त्रीणि
द्वितीया	त्रीन्	तिस्रः	त्रीणि
तृतीया	त्रिभिः	तिसृभिः	त्रिभिः
चतुर्थी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः
पंचमी	त्रिभ्यः	तिसृभ्यः	त्रिभ्यः

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

षष्ठी	त्रयाणाम्	तिसृणाम्	त्रयाणाम्
सप्तमी	त्रिषु	तिसृपु	त्रिषु

विशेष – त्रि शब्द के रूप तीनों लिंगों में मात्र बहुवचन में ही चलते हैं।

4. 'चतुर' (चार) शब्द के रूप

विभक्ति	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
प्रथमा	चत्वारः	चतस्रः	चत्वारि
द्वितीया	चतुरः	चतस्रः	चत्वारि
तृतीया	चतुर्भिः	चतसृभिः	चतुर्भिः
चतुर्थी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
पञ्चमी	चतुर्भ्यः	चतसृभ्यः	चतुर्भ्यः
षष्ठी	चतुर्णाम्	चतसृणाम्	चतुर्णाम्
सप्तमी	चतुर्षु	चतसृषु	चतुर्षु

विशेष – चतुर शब्द के रूप तीनों लिंगों में मात्र बहुवचन में ही चलते हैं। तथा पॉच से दस तक की संख्याओं के रूप तीनां लिंगों में समान होते हैं और बहुवचन में ही होते हैं।

5. 'पञ्च' 'षट्','सप्त' (पॉच छः सात) शब्द के रूप

विभक्ति	पञ्चन (पॉच)	षट् (छः)	सप्तम् (सात)
प्रथमा	पञ्च	षट्, षड्	सप्त
द्वितीया	पञ्च	षट्,षड्	सप्त
तृतीया	पञ्चभिः	षड्भिः	सप्तभिः
चतुर्थी	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः
पञ्चमी	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	सप्तभ्यः
षष्ठी	पंञ्चानाम्	षण्णाम्	सप्तानाम्
सप्तमी	पञ्चसु	षट्सु, षटत्सु	सप्तषु

6. 'अष्ट' 'नव','दश' (आठ, नौ, दस) शब्द के रूप

विभक्ति	अष्टन् (आठ)	नवन् (नौ)	दशन् (दस)
प्रथमा	अष्ट, अष्टौ	नव	दश
द्वितीया	अष्ट, अष्टौ	नव	दश
तृतीया	अष्टभि, अष्टाभिः	नवभिः	दशभिः
चतुर्थी	अष्टभ्यः,अष्टाभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
पञ्चमी	अष्टभ्यः,अष्टाभ्यः	नवभ्यः	दशभ्यः
षष्ठी	अष्टानाम्	नवानाम्	दशानाम्
सप्तमी	अष्टसु, अष्टासु	नवसु	दशसु

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

संख्यावाची शब्द

एक से दश तक क्रमवाची सार्वनाकि विशेषण–पद के रूप

मूल पद	पुंल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
एक	प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
द्वि	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
त्रि	तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
चतुर्	चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
पञ्च	पञ्चमः	पञ्चमी	पञ्चमम्
षष्	षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
सप्त	सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
अष्ट	अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
नव	नवम	नवमी	नवमम्
दश	दशमः	दशमी	दशमम्

'एक' से 'शत' तक संख्यावाचक सर्वनाम–पद

संख्या	पुल्लिंङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग	हिन्दी शब्द
1	एकः	एका	एकम्	एक
2	द्वौ	द्वे	द्वि	दो
3	त्रयः	तिस्त्रः	त्रीणि	तीन
4	चत्वारः	चतस्त्रः	चत्वारि	चार
5	पञ्च	पञ्च	पञ्च	पाञ्च
6	षट्, षड्	षट्	षट्	छह
7	सप्त	सप्त	सप्त	सात
8	अष्ट, अष्टौ	अष्ट	अष्ट	आठ
9	नव	नव	नव	नौ
10	दश	दश	दश	दस
11	एकादश	एकादश	एकादश	ग्यारह
12	द्वादश	द्वादश	द्वादश	बारह
13	त्रयोदश	त्रयोदश	त्रयोदश	तेरह
14	चतुर्दश	चतुर्दश	चतुर्दश	चौदह
15	पञ्चदश	पञ्चदश	पञ्चदश	पन्द्रह
16	षोडश	षोडश	षोडश	सोलह

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

17	सप्तदश	सप्तदश	सप्तदश	सतरह
18	अष्टादश	अष्टादश	अष्टादश	अठारह
19	नवदश, ऊनविंशति	नवदश	नवदश	उन्नीस
20	विंशतिः	विंशतिः	विंशति	बीस
21	एकविंशति	एकविंशति	एकविंशति	इक्कीस
22	द्वाविंशतिः	द्वाविंशतिः	द्वाविंशतिः	बाईस
23	त्रयोविंशतिः	त्रयोविंशतिः	त्रयोविंशतिः	तेईस
24	चतुर्विंशतिः	चतुर्विंशतिः	चतुर्विंशतिः	चौबीस
25	पञ्चविंशतिः	पञ्चविंशतिः	पञ्चविंशतिः	पच्चीस
26	षड्विंशति	षड्विंशति	षड्विंशति	छब्बीस
27	सप्तविंशतिः	सप्तविंशतिः	सप्तविंशतिः	सत्ताईस
28	अष्टाविंशति	अष्टाविंशति	अष्टाविंशति	अट्ठाईस
29	नवविंशतिः	नवविंशतिः	नवविंशतिः	उनतीस
30	त्रिंशत्	त्रिंशत्	त्रिंशत्	तीस
31	एकत्रिंशत्	एकत्रिंशत्	एकत्रिंशत्	एकतीस
32	द्वात्रिंशत्	द्वात्रिंशत्	द्वात्रिंशत्	बत्तीस
33	त्रयत्रिंशत्	त्रयत्रिंशत्	त्रयत्रिंशत्	तैंतीस
34	चतुस्त्रिंशत्	चतुस्त्रिंशत्	चतुस्त्रिंशत्	चौंतीस
35	पञ्चत्रिंशत्	पञ्चत्रिंशत्	पञ्चत्रिंशत्	पैंतीस
36	षट्त्रिंशत्	षट्त्रिंशत्	षट्त्रिंशत्	छत्तीस
37	सप्तत्रिंशत्	सप्तत्रिंशत्	सप्तत्रिंशत्	सैंतीस
38	अष्टात्रिंशत्	अष्टात्रिंशत्	अष्टात्रिंशत्	अड़तीस
39	नवत्रिंशत् ऊनचत्वारिंशत्, एकोनचत्वारिंशत्	नवत्रिंशत्	नवत्रिंशत्	उनचालीस
40	चत्वारिंशत्	चत्वारिंशत्	चत्वारिंशत्	चालीस
41	एकचत्वारिंशत्	एकचत्वारिंशत्	एकचत्वारिंशत्	इकतालीस
42	द्विचत्वारिंशत् द्वाचत्वारिंशत्	द्विचत्वारिंशत्	द्विचत्वारिंशत्	बयालीस
43	त्रिचत्वारिंशत् त्रयश्चत्वारिंशत्	त्रिचत्वारिंशत्	त्रिचत्वारिंशत्	तैंतालीस
44	चतुश्चत्वारिंशत्	चतुश्चत्वारिंशत्	चतुश्चत्वारिंशत्	चौआलीस
45	पञ्चचत्वारिंशत्	पञ्चचत्वारिंशत्	पञ्चचत्वारिंशत्	पैंतालीस
46	षट्चत्वारिंशत्	षट्चत्वारिंशत्	षट्चत्वारिंशत्	छियालीस
47	सप्तचत्वारिंशत्	सप्तचत्वारिंशत्	सप्तचत्वारिंशत्	सैंतालीस

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

48	अष्टचत्वारिंशत् अष्टाचत्वारिंशत्	अष्टचत्वारिंशत्	अष्टचत्वारिंशत्	अड़तालीस
49	नवचत्वारिंशत् ऊनपञ्चाशत् एकोनपञ्चाशत्	नवचत्वारिंशत्	नवचत्वारिंशत्	उनचास
50	पञ्चाशत्	पञ्चाशत्	पञ्चाशत्	पचास
51	एकपञ्चाशत्	एकपञ्चाशत्	एकपञ्चाशत्	इक्यावन
52	द्विपञ्चाशत् द्वापञ्चाशत्	द्विपंञ्चाशत्	द्विपञ्चाशत्	बावन
53	त्रिपञ्चाशत् त्रयपञ्चाशत्	त्रिपञ्चाशत्	त्रिपञ्चाशत्	तिरपन
54	चतुःपञ्चाशत्	चतुःपञ्चाशत्	चतुःपञ्चाशत्	चौवन
55	पंञचपञ्चाशत्	पञ्चपञ्चाशत्	पञ्चपञ्चाशत्	पचपन
56	षड्पञ्चाशत्	षड्पञ्चाशत्	षड्पञ्चाशत्	छप्पन
57	सप्तपञ्चाशत्	सप्तपञ्चाशत्	सप्तपञ्चाशत्	सत्तावन
58	अष्टपञ्चाशत् अष्टापञ्चाशत्	अष्टपञ्चाशत्	अष्टपञ्चाशत्	अट्ठावन
59	नवपंञ्चाशत् ऊनषष्टिः एकानेषष्टिः	नवपंञ्चाशत्	नवपञ्चाशत्	उनसठ
60	षष्टिः	षष्टिः	षष्टिः	साठ
61	एकषष्टिः	एकषष्टिः	एकषष्टिः	इकसठ
62	द्विषष्टिः द्वाषष्टिः	द्विषष्टिः	द्विषष्टिः	बासठ
63	त्रिषष्टिः त्रयःषष्टिः	त्रिषष्टिः	त्रिषष्टिः	तिरसठ
64	चतुःषष्टिः	चतुःषष्टिः	चतुःषष्टिः	चौंसठ
65	पञ्चषष्टिः	पञ्चषष्टिः	पंञ्चषष्टिः	पैंसठ
66	षट्षष्टिः	षट्षष्टिः	षट्षष्टिः	छियासठ
67	सप्तषष्टिः	सप्तषष्टिः	सप्तषष्टिः	सड़सठ
68	अष्टषष्टिः अष्टाषष्टिः	अष्टषष्टिः	अष्टषष्टिः	अड़सठ
69	नवषष्टिः ऊनसप्ततिः एकोनसप्ततिः	नवषष्टिः	नवषष्टिः	उनहत्तर
70	सप्ततिः	सप्ततिः	सप्ततिः	सत्तर

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

71	एकसप्ततिः	एकसप्ततिः	एकसप्ततिः	इकहत्तर
72	द्विसप्ततिः द्वासप्ततिः	द्विसप्ततिः	द्विसप्ततिः	बहत्तर
73	त्रिसप्ततिः त्रयःसप्ततिः	त्रिसप्ततिः	त्रिसप्ततिः	तिहत्तर
74	चतुःसप्ततिः	चतुःसप्ततिः	चतुःसप्ततिः	चौहत्तर
75	पञ्चसप्ततिः	पञ्चसप्ततिः	पञ्चसप्ततिः	पचहत्तर
76	षट्सप्ततिः	षट्सप्ततिः	षट्सप्ततिः	छिहत्तर
77	सप्तसप्ततिः	सप्तसप्ततिः	सप्तसप्ततिः	सतहत्तर
78	अष्टसप्ततिः अष्टासप्ततिः	अष्टसप्ततिः	अष्टसप्ततिः	अठहत्तर
79	नवसप्ततिः ऊनाशीतिः	नवसप्ततिः	नवसप्ततिः	उन्नासी
80	अशीतिः	अशीतिः	अशीतिः	अस्सी
81	एकाशीतिः	एकाशीतिः	एकाशीतिः	इक्यासी
82	द्वयशीतिः	द्वयशीतिः	द्वयशीतिः	बयासी
83	त्र्यशीतिः	त्र्यशीतिः	त्र्यशीतिः	तिरासी
84	चतुरशीतिः	चतुरशीतिः	चतुरशीतिः	चौरासी
85	पञ्चाशीतिः	पञ्चाशीतिः	पञ्चाशीतिः	पचासी
86	षडशीतिः	षडशीतिः	षडशीतिः	छियासी
87	सप्ताशीतिः	सप्ताशीतिः	सप्ताशीतिः	सत्तासी
88	अष्टाशीतिः	अष्टाशीतिः	अष्टाशीतिः	अट्ठासी
89	नवाशीतिः ऊननवतिः एकोननवतिः	नवाशीतिः	नवाशीतिः	नवासी
90	नवतिः	नवतिः	नवतिः	नब्बे
91	एकनवतिः	एकनवतिः	एकनवतिः	इक्यानबे
92	द्विनवतिः द्वानवतिः	द्विनवतिः	द्विनवतिः	बयानबे
93	त्रिनवतिः त्रयोनवतिः	त्रिनवतिः	त्रिनवतिः	तिरानबे
94	चतुर्नवतिः	चतुर्नवतिः	चतुर्नवतिः	चौरानबे
95	पञ्चनवतिः	पञ्चनवतिः	पञ्चनवतिः	पंचानबे
96	षण्णवतिः	षण्णवतिः	षण्णवतिः	छियानबे
97	सप्तनवतिः	सप्तनवतिः	सप्तनवतिः	सत्तानबे
98	अष्टनवतिः	अष्टनवतिः	अष्टनवतिः	अट्ठानबे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

	अष्टानवतिः			
99	नवनवतिः	नवनवतिः ऊनशतम् एकोनशतम्	नवनवतिः	निन्यानबे
	100	शतम्	शतम्	शतम् सौ

ध्यातव्य – उपर्युक्त तालिका में किसी–किसी संख्या के सामने के पुंल्लिंग–रूप में जो एकाधिक रूप दिये गए हैं वे स्त्रीलिंग और नपुंसकलिंग में भी होते हैं।

शत् (सौ) से उत्तरोत्तर दसगुनी संख्यावाले पद

संख्या	संस्कृत शब्द	हिन्दी शब्द
100	शतम्	एक सौ
1000	सहस्रम्	एक हजार
10000	अयुतम्	दस हजार
100000	लक्षम्	एक लाख
1000000	नियुतम्	दस लाख
10000000	कोटिः	एक करोड़
100000000	आकोटिः	दस करोड़
1000000000	अर्बुदम्	एक अरब
10000000000	वृन्दः	दस अरब
100000000000	खर्वः	खरब
1000000000000	निखर्वः	दस खरब
10000000000000	शङ्.कः	नील
100000000000000	आशङ्कुः	दस नील
1000000000000000	पद्मः	पद्म
10000000000000000	सागरः	दस पद्म
100000000000000000	अन्त्यम्	शंख
1000000000000000000	मध्यम्	दस शंख
10000000000000000000	परार्धम्	महाशंख

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

पंचमः अध्यायः

धातु रूपाणि

1. भू (भव्) होना

लट्–लकार (परस्मैपदी)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु, भवतात्	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

2. पठ् (पढ़ना)

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठतु	पठताम्	पठन्तु
मध्यम पुरुष	पठ	पठतम्	पठत
उत्तम पुरुष	पठानि	पठाव	पठाम

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठेत्	पठेताम्	पठेयुः
मध्यम पुरुष	पठेः	पठेतम्	पठेत
उत्तम पुरुष	पठेयम्	पठेव	पठेम

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपठत्	अपठताम्	अपठन्
मध्यम पुरुष	अपठः	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरुष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

3. अस् (होना)

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	अस्वः	अस्मः

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
मध्यम पुरुष	एधि	स्तम्	स्त
उत्तम पुरुष	असानि	असाव	असाम

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	स्यात्	स्याताम्	स्युः
मध्यम पुरुष	स्याः	स्यातम्	स्यात
उत्तम पुरुष	स्याम्	स्याव	स्याम

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	आसीत्	आस्ताम्	आसन्
मध्यम पुरुष	आसीः	आस्तम्	आस्त
उत्तम पुरुष	आसम्	आस्व	आस्म

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

4. कृ (करना)

लट्–लकार

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यम पुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लङ्.–लकार

पुरूष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

5. शक् (सकना/होना)

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
मध्यम पुरुष	शक्नोषि	शक्नुथः	शक्नुथ
उत्तम पुरुष	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नोतु	शक्नुताम्	शक्नुवन्तु
मध्यम पुरुष	शक्नुहि	शक्नुतम्	शक्नुत
उत्तम पुरुष	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्नुयात्	शक्नुयाताम्	शक्नुयुः
मध्यम पुरुष	शक्नुयाः	शक्नुयातम्	शक्नुयात
उत्तम पुरुष	शक्नुयाम्	शक्नुयाव	शक्नुयाम

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अशक्नोत्	अशक्नुताम्	अशक्नुवन्
मध्यम पुरुष	अशक्नोः	अशक्नुतम्	अशक्नुत
उत्तम पुरुष	अशक्नवम्	अशक्नुव	अशक्नुम

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	शक्ष्यसि	शक्ष्यथः	शक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	शक्ष्यामि	शक्ष्यावः	शक्यामः

6. पा–पिब् (पीना)

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबति	पिबतः	पिबन्ति
मध्यम पुरुष	पिबसि	पिबथः	पिबथ
उत्तम पुरुष	पिबामि	पिबावः	पिबामः

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबतु	पिबताम्	पिबन्तु
मध्यम पुरुष	पिबः	पिबतम्	पिबत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पिबेत्	पिबेताम्	पिबेयुः
मध्यम पुरुष	पिबेः	पिबेतम्	पिबेत
उत्तम पुरुष	पिबानि	पिबाव	पिबाम

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपिबत्	अपिबताम्	अपिबन्
मध्यम पुरुष	अपिबः	अपिबतम्	अपिबत
उत्तम पुरुष	अपिबम्	अपिबाव	अपिबाम

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पास्यति	पास्यतः	पास्यन्ति
मध्यम पुरुष	पास्यसि	पास्यथः	पास्यथ
उत्तम पुरुष	पास्यामि	पास्यावः	पास्यामः

7. गम् – गच्छ (जाना)

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

8. खाद् (खाना)

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादति	खादतः	खादन्ति
मध्यम पुरुष	खादसि	खादथः	खादथ
उत्तम पुरुष	खादामि	खादावः	खादामः

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादतु	खादताम्	खादन्तु
मध्यम पुरुष	खाद	खादतम्	खादत
उत्तम पुरुष	खादानि	खादाव	खादाम

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादेत्	खादेताम्	खादेयुः
मध्यम पुरुष	खादेः	खादेतम्	खादेत
उत्तम पुरुष	खादेयम्	खादेव	खादेम

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अखादत्	अखादताम्	अखादन्
मध्यम पुरुष	अखादः	अखादतम्	अखादत
उत्तम पुरुष	अखादम्	अखादाव	अखादाम

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	खादिष्यति	खादिष्यतः	खादिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	खादिष्यसि	खादिष्यथः	खादिष्यथ
उत्तम पुरुष	खादिष्यामि	खादिष्यावः	खादिष्यामः

9. पच् (पकाना)

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचति	पचतः	पचन्ति
मध्यम पुरुष	पचसि	पचथः	पचथ
उत्तम पुरुष	पचामि	पचावः	पचामः

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचतु	पचताम्	पचन्तु
मध्यम पुरुष	पच	पचतम्	पचत
उत्तम पुरुष	पचानि	पचाव	पचाम

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पचेत्	पचेताम्	पचेयु:
मध्यम पुरुष	पचे:	पचेतम्	पचेत
उत्तम पुरुष	पचेयम्	पचेव	पचेम

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपचत्	अपचताम्	अपचन्
मध्यम पुरुष	अपच:	अपचतम्	अपचत
उत्तम पुरुष	अपचम्	अपचाव	अपचाम

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पक्ष्यति	पक्ष्यत:	पक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पक्ष्यसि	पक्ष्यथ:	पक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	पक्ष्यामि	पक्ष्याव:	पक्ष्याम:

10. प्रच्छ– पृच्छ (पूँछना)

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छति	पृच्छत:	पृच्छन्ति
मध्यम पुरुष	पृच्छसि	पृच्छथ:	पृच्छथ
उत्तम पुरुष	पृच्छामि	पृच्छाव:	पृच्छाम:

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छतु	पृच्छताम्	पृच्छन्तु
मध्यम पुरुष	पृच्छ	पृच्छतम्	पृच्छत
उत्तम पुरुष	पृच्छानि	पृच्छाव	पृच्छाम

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पृच्छेत्	पृच्छेताम्	पृच्छेयु:
मध्यम पुरुष	पृच्छे:	पृच्छेतम्	पृच्छेत
उत्तम पुरुष	पृच्छेयम्	पृच्छेव	पृच्छेम

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपृच्छत्	अपृच्छताम्	अपृच्छन्
मध्यम पुरुष	अपृच्छ:	अपृच्छतम्	अपृच्छत
उत्तम पुरुष	अपृच्छम्	अपृच्छाव	अपृच्छाम

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	प्रक्ष्यति	प्रक्ष्यत:	प्रक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	प्रक्ष्यसि	प्रक्ष्यथ:	प्रक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	प्रक्ष्यामि	प्रक्ष्याव:	प्रक्ष्याम:

11. पत् (गिरना)

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पतति	पतत:	पतन्ति
मध्यम पुरुष	पतसि	पतथ:	पतथ
उत्तम पुरुष	पतामि	पताव:	पताम:

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पततु	पतताम्	पतन्तु
मध्यम पुरुष	पत	पततम्	पतत
उत्तम पुरुष	पतानि	पताव	पताम

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पतेत्	पतेताम्	पतेयु:
मध्यम पुरुष	पते:	पतेतम्	पतेत
उत्तम पुरुष	पतेयम्	पतेव	पतेम

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अपतत्	अपतताम्	अपतन्
मध्यम पुरुष	अपतः	अपततम्	अपतत
उत्तम पुरुष	अपतम्	अपताव	अपताम

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पतिष्यति	पतिष्यतः	पतिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पतिष्यसि	पतिष्यथः	पतिष्यथ
उत्तम पुरुष	पतिष्यामि	पतिष्यावः	पतिष्यामः

12. नश् (नष्ट होना)

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्यति	नश्यतः	नश्यन्ति
मध्यम पुरुष	नश्यसि	नश्यथः	नश्यथ
उत्तम पुरुष	नश्यामि	नश्यावः	नश्यामः

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्यतु	नश्यताम्	नश्यन्तु
मध्यम पुरुष	नश्य	नश्यतम्	नश्यत
उत्तम पुरुष	नश्यानि	नश्याव	नश्याम

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः
मध्यम पुरुष	नश्येः	नश्येतम्	नश्येत
उत्तम पुरुष	नश्येयम्	नश्येव	नश्येम

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अनश्यत्	अनश्यताम्	अनश्यन्
मध्यम पुरुष	अनश्यः	अनश्यतम्	अनश्यत
उत्तम पुरुष	अनश्यम्	अनश्याव	अनश्याम

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	नशिष्यति / नंक्ष्यति	नशिष्यतः / नंक्ष्यतः	नशिष्यन्ति / नंक्ष्यन्ति
मध्यम पुरुष	नशिष्यसि / नंक्ष्यसि	नशिष्यथः / नंक्ष्यथः	नशिष्यथ / नंक्ष्यथ
उत्तम पुरुष	नशिष्यामि / नंक्ष्यामि	नशिष्यावः / नंक्ष्यावः	नशिष्यामः / नंक्ष्यामः

13. चुर् (चुराना)

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयसि	चोरयथः	चोरयथ
उत्तम पुरुष	चोरयामि	चोरयावः	चोरयामः

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयतु	चोरयताम्	चोरयन्तु
मध्यम पुरुष	चोरय	चोरयतम्	चोरयत
उत्तम पुरुष	चोरयाणि	चोरयाव	चोरयाम

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयेत्	चोरयेताम्	चोरयेयुः
मध्यम पुरुष	चोरयेः	चोरयेतम्	चोरयेत
उत्तम पुरुष	चोरयेम्	चोरयेव	चोरयेम

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अचोरयत्	अचोरयताम्	अचोरयन्
मध्यम पुरुष	अचोरयः	अचोरयतम्	अचोरयत
उत्तम पुरुष	अचोरयम्	अचोरयाव	अचोरयाम

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	चोरयिष्यसि	चोरयिष्यथः	चोरयिष्यथ
उत्तम पुरुष	चोरयिष्यामि	चोरयिष्यावः	चोरयिष्यामः

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

आत्मनेपदी

14. रम् (रमण करना)

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रमते	रमेते	रमन्ते
मध्यम पुरुष	रमसे	रमेथे	रमध्वे
उत्तम पुरुष	रमे	रमावहे	रमामहे

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रमताम्	रमेताम्	रमन्ताम्
मध्यम पुरुष	रमस्व	रमेथाम्	रमध्वम्
उत्तम पुरुष	रमै	रमावहै	रमामहै

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रमेत	रमेयाताम्	रमेरन्
मध्यम पुरुष	रमेथाः	रमेयाथाम्	रमेध्वम्
उत्तम पुरुष	रमेय	रमेवहि	रमेमहि

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अरमत	अरमेताम्	अरमन्त
मध्यम पुरुष	अरमथाः	अरमेथाम्	अरमध्वम्
उत्तम पुरुष	अरमे	अरमावहि	अरमामहि

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रंष्यते	रंष्येते	रंष्यन्ते
मध्यम पुरुष	रंष्यसे	रंष्येथे	रंष्यध्वे
उत्तम पुरुष	रंष्ये	रंष्यावहे	रंष्यामहे

आत्मनेपदी

15. लभ् (पाना)

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभते	लभेते	लभन्ते

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मध्यम पुरुष	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उत्तम पुरुष	लभे	लभावहे	लभामहे

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
मध्यम पुरुष	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उत्तम पुरुष	लभै	लभावहै	लभामहै

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
मध्यम पुरुष	लभेथाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उत्तम पुरुष	लभेथ	लभेवहि	लभेमहि

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
मध्यम पुरुष	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उत्तम पुरुष	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
मध्यम पुरुष	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उत्तम पुरुष	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

16. सेव (सेवा करना) आत्मनेपदी

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवते	सेवेते	सेवन्ते
मध्यम पुरुष	सेवसे	सेवथे	सेवध्वे
उत्तम पुरुष	सेवे	सेवावहे	सेवामहे

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवताम्	सेवेताम्	सेवन्ताम्
मध्यम पुरुष	सेवस्व	सेवेथाम्	सेवध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवै	सेवावहै	सेवामहै

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेवेत	सेवेयाताम्	सेवेरन्
मध्यम पुरुष	सेवेथाः	सेवेयाथाम्	सेवेध्वम्
उत्तम पुरुष	सेवेय	सेवेवहि	सेवेमहि

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	असेवत	असेवेताम्	असेवन्त
मध्यम पुरुष	असेवथाः	असेवेथाम्	असेवध्वम्
उत्तम पुरुष	असेवे	असेवावहि	असेवामहि

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सेविष्यते	सेविष्येते	सेविष्यन्ते
मध्यम पुरुष	सेविष्यसे	सेविष्येथे	सेविष्यध्वे
उत्तम पुरुष	सेविष्ये	सेविष्यावहे	सेविष्यामहे

17. वृध् (बढ़ना) आत्मनेपदी

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्धते	वर्धेते	वर्धन्ते
मध्यम पुरुष	वर्धसे	वर्धेथे	वर्धध्वे
उत्तम पुरुष	वर्धे	वर्धावहे	वर्धामहे

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्धताम्	वर्धेताम्	वर्धन्ताम्
मध्यम पुरुष	वर्धस्व	वर्धेथाम्	वर्धध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्धै	वर्धावहै	वर्धामहै

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्धेत	वर्धेयाताम्	वर्धेरन्
मध्यम पुरुष	वर्धेथाः	वर्धेयाथाम्	वर्धेध्वम्
उत्तम पुरुष	वर्धेय	वर्धेवहि	वर्धेमहि

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अवर्धत	अवर्धेताम्	अवर्धन्त
मध्यम पुरुष	अवर्धथाः	अवर्धेथाम्	अवर्धध्वम्
उत्तम पुरुष	अवर्धे	अवर्धावहि	अवर्धामहि

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	वर्धिष्यते	वर्धिष्येते	वर्धिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	वर्धिष्यसे	वर्धिष्येथे	वर्धिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	वर्धिष्ये	वर्धिष्यावहे	वर्धिष्यामहे

इसी तरह वृतृ – वर्तने रहना – वृध के समान

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष लट्	वर्तते	वर्तेते	वर्तन्ते
प्रथम पुरुष लोट	वर्तताम्	वर्तेताम्	वर्तन्ताम्
प्रथम पुरुष लिङ.	वर्तेत	वर्तेयाताम्	वर्तेरन्
प्रथम पुरुष लङ.	अवर्तत	अवर्तेताम्	अवर्तन्त
प्रथम पुरुष लृट	वर्तिष्यते	वर्तिष्येते	वर्तिष्यन्ते

18. रूच् (चमकना रूचना) आत्मनेपदी

लट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रोचते	रोचेते	रोचन्ते
मध्यम पुरुष	रोचसे	रोचेथे	रोचध्वे
उत्तम पुरुष	रोचे	रोचावहे	रोचामहे

लोट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रोचताम्	रोचेताम्	रोचन्ताम्
मध्यम पुरुष	रोचस्व	रोचेथाम्	रोचध्वम्
उत्तम पुरुष	रोचै	रोचावहै	रोचामहै

लिङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	रोचेत	रोचयाताम्	रोचेरन्

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मध्यम पुरुष	रोचेथाः	रोचेयाथाम्	रोचेध्वम्
उत्तम पुरुष	रोचेय	रोचेवहि	रोचेमहि

लङ्.–लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	अरोचत	अरोचेताम्	अरोचन्त
मध्यम पुरुष	अरोचथाः	अरोचेथाम्	अरोचेध्वम्
उत्तम पुरुष	अरोचे	अरोचावहि	अरोचामहि

लृट्–लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	रोचिष्यते	रोचिष्येते	रोचिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	रोचिष्यसे	रोचिष्येथे	रोचिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	रोचिष्ये	रोचिष्यावहे	रोचिष्यामहे

19. जन् – प्रादुर्भावे आत्मनेपदी

लट्–लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	जायते	जायेते	जायन्ते
मध्यम पुरुष	जायसे	जायेथे	जायध्वे
उत्तम पुरुष	जाये	जायावहे	जायामहे

लोट्–लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	जायताम्	जायेताम्	जायन्ताम्
मध्यम पुरुष	जायस्व	जायेथाम्	जायध्वम्
उत्तम पुरुष	जायै	जायावहै	जायामहै

लिङ्.–लकार

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्
मध्यम पुरुष	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
उत्तम पुरुष	जायेय	जायेवहि	जायेमहि

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

लङ्.–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त
मध्यम पुरुष	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम्
उत्तम पुरुष	अजाये	अजायावहि	अजायामहि

लृट्–लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	जनिष्यते	जनिष्येते	जनिष्यन्ते
मध्यम पुरुष	जनिष्यसे	जनिष्येथे	जनिष्यध्वे
उत्तम पुरुष	जनिष्ये	जनिष्यावहे	जनिष्यामहे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

षष्ठः अध्यायः

कारक प्रकरण

कारक – क्रिया के साथ जिसका अन्वय अर्थात् सम्बन्ध रहता है, उसको कारक कहते हैं। यथा–तीर्थक्षेत्रे राजा स्वहस्तेन कोषात् दरिद्राय धनं यच्छति। इस वाक्य में –

कः यच्छति ?– राजा–कर्ता, प्रथमा विभक्ति।
किं यच्छति ?– धनम्–कर्म, द्वितीया विभक्ति।
केन यच्छति ?– स्वहस्तेन–करण, तृतीया विभक्ति
कस्मै यच्छति ?– दरिद्राय–सम्प्रदान, चतुर्थी विभक्ति
कस्मात् यच्छति ?– कोषात्–अपादान, पंचमी विभक्ति
कुत्र यच्छति ?– तीर्थक्षेत्रे–अधिकरण,सप्तमी विभक्ति

इस प्रकार राज, धन, स्वहस्त, दरिद्र, कोष और तीर्थ क्षेत्र इन छः पदों का क्रिया के साथ अन्वय है। अतः ये कारक हैं । संबंध पद और संबोधन पद कारक नहीं माने जाते । यथा–

रामस्य पुत्रः गच्छति–इसमें गच्छति क्रिया पद के साथ रामस्य पद का कोई संबंध न होकर पुत्रः (कर्ता) के साथ है। इसी प्रकार भगवन्! भीतान् रक्ष–इसमें भी रक्ष क्रिया पद के साथ भगवन् का कोई संबंध नहीं है । संबंध पद में षष्ठी और संबोधन में प्रथमा विभक्ति होती है ।

कारक के छः भेद हैं – कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान और अधिकरण।

कर्ता :– क्रिया–सम्पादन में जो स्वतंत्र अर्थात् प्रधान भाव से विवक्षित होता है (अर्थात हो अन्य किसी कारक के अधीन न होकर स्वयं क्रिया–निष्पादन करता है) उसे कर्ताकारक कहते हैं । यथा :–

हरिः पठति – यहॉ पठन क्रिया का व्यापार हरि के अधीन है।
राजा यच्छति – यहॉ यच्छ (देना) क्रिया का व्यापार राजा के अधीन है ।
अतः हरिः और राजा कर्ताकारक हैं ।

कर्म :– कर्ता की क्रिया द्वारा जो आक्रान्त होता है, उसे कर्म कहते हैं । यथा :–

राजा धनं यच्छति, बालः चंद्रं पश्यति

यहॉ राजा (कर्ता) की यच्छ क्रिया द्वारा आक्रांत धन है और बाल की दृश् क्रिया द्वारा आक्रांत है, चंद्र।

अधि–पूर्वक शी, स्था, आस्, धातु और अधि तथा आ पूर्वक वस् धातु के अधिकरण कारक की कर्मसंज्ञा होती है । यथा :– (अधि+शी) शय्यायां शेते=शय्याम् अधिशेते, (अधि+स्था) गृहे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तिष्ठति=गृहम् अधितिष्ठति, (अधि+आस्) आसने आस्ते=आसनम् अध्यास्ते, (अधि+वस्) नगरे वसति=नगरम् अधिवसति (आ+वस्) गुरोरालयम् आवसति।

दुह्, याच् चि, प्रच्छ, नी, मन्थ् आदि कुछ धातुओं के दो कर्म रहते हैं। एक को मुख्य अथवा प्रधान कर्म और दूसरे को गौण अथवा अप्रधान कर्म कहते हैं । क्रिया के साथ प्रधान भाव से जिसका अन्वय होता है, उसको प्रधान कर्म और अप्रधान भाव से जिसका अन्वय होता है, उसको अप्रधान कर्म कहते है। यथा–गोपः गां पयः दोग्धि, दरिद्रः, नृपं, धनं याचते, शिष्यः गुरुं धनं याचते, शिष्यः गुरुं धर्म पृच्छति–यहाँ पय, धन और धर्म प्रधान कर्म तथा गौ नृप और गुरु अप्रधान कर्म हैं । अप्रधान कर्म को 'अकथित्' या 'अविवक्षित' कर्म भी कहते है । अर्थात् दोनो कर्मो के बीच में किसी अन्य कारक की प्रवृत्ति की संभावना रहती है, पर वक्ता की इच्छा के अभाव से उन सब कारकों की पवृत्ति न होकर कर्मकारक की प्रवृत्ति होती है उसे ही 'अकथित, अविवक्षित या अप्रधान कर्म' कहते हैं। पूर्वोक्त उदाहरणों में गो आदि की कर्म संज्ञा हुई है परन्तु विवक्षता रहने से गोः पयः दोग्धि, नृपाद् धनं याचते, गुरोर्धर्मं पृच्छति इसी प्रकार अपादान आदि कमों की प्रवृत्ति हो सकती थी।

अवशिष्ट द्विकर्मक धातुओं के उदाहरणः– मालाकारो वृक्षं पुष्पं चिनोति पिता पुत्रं गृहं नयति, देवा जलधिममृतं ममन्थुः पुत्रं नीतिं ब्रूते वदति वा, तण्डुलान् ओदनं पचति शत्रुं राज्यं जयति, दुष्टान् शतं दण्डयति राजा, बालं गृहं रूणद्धि चौरः साधुं धनं मुष्णाति, शिष्यं धर्म शास्ति, ग्रामम् अजां कर्षति, हरति, वहति वा।

करण :– कर्ता की क्रिया सिद्धि में जो अत्यन्त उपकारक हो उसे करणकारक कहते हैं। यथाः– रामः दण्डेन श्वानं हन्ति। लेखन्या लिखति इत्यादि।

सम्प्रदान :– दानकर्म के उद्देश्य भूत जो कारक अर्थात् कर्ता जिसके उद्देश्य से स्वत्वत्यागपूर्वक कोई वस्तु दान करता है उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। यथाः– विप्राय दक्षिणां ददाति, शिष्याय विद्यां ददाति।

जिसे उद्देश्य करके किसी क्रिय का अनुष्ठान किया जाता है उसकी भी सम्प्रदान संज्ञा होती है। यथाः– युद्धाय सन्नह्यते राजा। (युद्धम् उद्दिश्य अभिप्रत्य इत्यर्थः) ज्ञानाय विद्यामधीते शिष्यः (ज्ञानार्थमित्यर्थः) नृपायोपहारं प्रजाः प्रेषयन्ति इत्यादि।

स्पृह धातु के प्रयोग में कर्ता का जो ईप्सित अर्थात् अभिलषित विषय उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है। यथाः– धर्माय स्पृहयति।

धारि धातु के प्रयोग में उत्तमर्ण (जिससे ऋण लिया जाता है) की सम्प्रदान संज्ञा होती है। यथाः– स मह्यं शतं धारयति।

क्रोधार्थक, द्रोहार्थक, ईर्ष्यार्थक और असूयार्थक धातु के प्रयोग में क्रोधादि का जो उद्देश्य हो अर्थात् जिसके प्रति क्रोध, द्रोह, ईर्ष्या आदि होता है– उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है। यथाः– भृत्याय कुध्यतिः शत्रवे द्रुह्यति, प्रतिवेशिने ईर्ष्यति, प्रतिद्वन्द्विने असूयति।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

प्रति–पूर्वक आ–पूर्वक 'श्रु' धातु के प्रयोग में जो याञ्चा करता है उसकी सम्प्रदान संज्ञा होती है। यथाः – भिक्षुकाय वस्त्रं आश्रृणोति वा (वस्त्रं याचमानाय भिक्षुकाय वस्त्रं दातुमङ.गी करोतीत्यर्थः)।

अपादान :– अपाय अर्थात् विश्लेष (अलग होना) के अर्थ में ध्रुव (जिससे कोई चीज अलग या वियुक्त होती है) की अपादान संज्ञा होती है और अपादान में पञ्चमी विभाक्ति होती है। यथाः– वृक्षात् फलं पतति।

भयार्थ और रक्षार्थं धातु के भय–हेतु की अपादान संज्ञा होती है। यथाः– (भयार्थ) साघुः दुर्जनात् विभेति, सज्जनः पापात् त्रस्यति।

उत्पत्ति के कारण शब्द की अपादान संज्ञा होती है। यथाः– बीजादङ.कुरो जायते, मृदो घटो जायते, सुवर्णात् कुण्डलं जायते, दुग्धात् घृतमुत्पद्यते।

भू धातु के प्रयोग में आविर्भाव भूमि अर्थात् आद्य–प्रकाशस्थान की अपादान संज्ञा होती है। यथा हिमवतः गङ.गा प्रभवति (तत्र प्रथमतः उपलभ्यते इत्यर्थः) इत्यादि।

विरामार्थक धातु के प्रयोग में जिससे विराम होता है उसकी अपादान संज्ञा होती है। यथाः – अध्ययनात् विरमति, कलहात् निवर्त्तते इत्यादि।

जुगुप्सार्थक धातु के प्रयोग में जिससे जुगुप्सा होती है उसकी अपादान संज्ञा होती है। यथाः– पापात् जुगुप्सते, नरकात् बीभत्सते।

प्रमादार्थक धातु के प्रयोग में जिस विषय में प्रमाद होता है उसकी अपादान संज्ञा होती है। यथाः –पाठात् प्रमाद्यति, अध्ययनात् अनवधानम्, स्वाधिकारात् प्रमत्तः।

अन्तर्धान अर्थ में जिससे अपने को छिपाना चाहता है उसकी अपादान संज्ञा होती है। यथाः– गुरोः अन्तर्धत्ते, पितुः निलीयते।

वारणार्थक धातु के प्रयोग में निवार्यमाण का (जिसका निवारण किया जाता है – उसका) जो अभिलषित पदार्थ उसकी अपादान संज्ञा होती है। यथाः– यवेभ्यो गां वारयति, अन्नेभ्यः काकं निषेध्यति, व्यसनात् पुत्रं निवारयति।

जिसके पास नियम–पूर्वक अध्ययन किया जाता है जिसके पास सुना जाता है और जिससे लिया अथवा पाया जाता है उसकी अपादान संज्ञा होती है। यथाः– गुरोः शास्त्रम् अधीते, पठति, इदं मया तातात् श्रुतम्, प्रजाभ्यः करम् आदत्ते, गृह्णाति वा, गुरोः ज्ञानं लभते प्राप्नोति वा।

अधिकरण :– कर्त्ता और कर्म द्वारा तन्निष्ठक्रिया का जो आधार अर्थात् क्रियाश्रयभूत कर्त्ता ओर कर्म जिसमें अवस्थान करते हैं उसे अधिकरण कारक कहते हैं। इसमें सप्तमी विभक्ति होती है।

आधार चार प्रकार का होता हैः– 1. आश्लेष (एकदेश–संबंन्धी), 2. विषय, 3. व्याप्ति (सार्वत्रिक सम्बन्ध वाला) और 4. सामीप्यबोधक । यथाः– (1) वने व्याघ्रः प्रतिवसति (वनस्यैकदेश इत्यर्थः) गृहे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

स्वपिति (गृहस्यैकदेश इत्यर्थः) नद्यां स्नाति (नद्याः एकदेशे इतयर्थः)। (2) विद्यायाम् अनुरागः (विद्याविषये इत्यर्थः) भोगे अभिलाषः (भोगविषये इत्यर्थः) सदा धर्म्मे मतिं कुर्यात् (धर्म विषये इत्यर्थः)। (3) तिलेषु तैलं विद्यते (तिलस्य सर्वान् अवयवान् व्याप्य इत्यर्थः) दुग्धे माधुर्यमस्ति (दुग्धस्य सर्वानवयवान् व्याप्येत्यर्थः) वह्नौ दाहिका शक्तिरस्ति (सर्वानवयवान् व्याप्येत्यर्थः) (4) गङ्.गायां घोषः (गड.गायाः समीपे इत्यर्थः) गङ्.गासागरसङ्.गमें कपिलस्य आश्रमः आसीत् (तत्समीपे इत्यर्थः)।

काल की भी अधिकरण संज्ञा होती है। यथाः – आषाढस्य प्रथमदिवसे, शेशवेऽभ्यस्तविद्यानां, योवने विषयैषिणाम्, वार्द्धके मुनिवृत्तीनाम्।

जिस स्थल में जिस कारक का विधान हुआ है वक्ता की इच्छा के अनुसार उसका अन्यथा भाव भी हो सकता है। यथाः– गृहं गच्छति, गृहं प्रविशति– गृहे प्रविशति, पुष्पेभ्यः स्पृहयति पुष्पाणि स्पृहयति, पुष्पेभ्यः स्पृहा– पुष्पेषु स्पृहा, अरये कुप्यति– अरौ कुप्यति, गां दुग्धं दोग्धि, गोभ्यः दुग्धं दोग्धि, शिष्याय विद्यां वितरति, शिष्ये विद्यां वितरति, हिमवतो गङ्.गा प्रभवति, हिमवति गङ्.गा प्रभवति।

एक पद में अनेक कारकों का सन्देह होने से अपादान, सम्प्रदान, करण, अधिकरण, कर्म और कर्ता इस क्रम के अनुसार परवर्ती कारक होते हैं। यथाः– दरिद्रम् आहूय धनं ददाति, गड.गां गतवा स्नाति, गृहं प्रविश्य निःसरति।

अनुवाद संदर्भ

(1)

सत्यकार्य से व्यक्ति का यश सब जगह फैलता है। जो मनुष्य स्वावलम्बी होता है, वही संसार में उन्नति के शिखर पर चढ़ता है। जो दूसरों के आश्रित रहते हैं, वे कभी–भी उन्नति नहीं कर सकते है। पराधीनता में सुख नहीं रहता। अतिथि देवता के सदृश होता है। गुरू से ज्ञान प्राप्त होता है। कौशल्या राम की माता थी। कवियों में कालिदास श्रेष्ठ हैं। मेरा घर विद्यालय से दूर है। मेरी कक्षा में पैंतालिस छात्र हैं।

अनुवाद– सत्यकार्येण नरस्य यशः सर्वत्र प्रसरति।
यः नरः स्वावलम्बी भवति सः एव संसारे उन्नत्याः शिखरम् आरोहति।
यः पराश्रिताः भवन्ति ते कदापि उन्नयितुं न शक्नुवन्ति।
पराधीनतायां सुखम् नास्ति।
अतिथिः देव–सदृशः भवति।
गुरोः ज्ञानं लभते।
कौशल्या रामस्य माता आसीत्।
कविषु कालिदासः श्रेष्ठोऽस्ति।
मम गृहम् विद्यालयात् दूरमस्ति।
मम कक्षायां पञ्चचत्वारिंशत् छात्राः सन्ति।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(2)

ग्रीष्मकाल में सूर्य की किरणें तेज होती है। वर्षा–ऋतु में प्रकृति सब ओर हरी दिखलाई देती है। आकाश को काले बादल ढके रहते हैं। मोर बादलों को देखकर नृत्य करने लगता है। शरद्–ऋतु में आकाश स्वच्छ और निर्मल रहता है। ग्रीष्म–ऋतु में नदी, तालाब आदि का पानी सूख जाता है। सब लोग शीतल हवा और छांह का आश्रय लेते हैं। गाय दूध देती है। बछड़ा, गाय के पीछे भागता है। ग्वाला गाय की सेवा करता है। वह उसका दूध दुहता हैं। दूध से दही, मक्खन और मट्ठा मिलता है।

अनुवाद – ग्रीष्मकाले सूर्यस्य रश्मयः तीव्राः भवन्ति। वर्षा ऋतौ प्रकृतिः सर्वतः हरिता दृश्यते। आकाशं कृष्णघनाः आच्छादयन्ति। मयूरः मेघान् दृष्ट्वा नृत्यति। शरदर्तौ अम्बरः स्वच्छः निर्मलश्च वर्तते। ग्रीष्म–ऋतौ सरोवरादीनां जलम् शुष्यते। सर्वे जनाः शीतलं वायुं छायां च आश्रयन्ति। धेनुः दुग्धं ददाति। वत्सः धेनुं अनुधावति। गोपः धेनुं सेवते। सः ताम् दुग्धं दोग्धि। दुग्धात् दधिः, नवनीतं तक्रम् च लभ्यते।

(3)

वीर मनुष्य युद्ध में पराजित नहीं होते। रात्रि में चन्द्रमा सुशोभित होता है। बुद्धिमान मनुष्य के लिए कुछ भी कठिन नहीं है। गुणी सर्वत्र आदर पाता है। उद्यमी मनुष्य दुःखी नहीं होता। गुरू शिष्य के प्रति पुत्रवत् व्यवहार करता है। छात्र अध्ययन के लिए विद्यालय जाते हैं। आलस्य मनुष्य का महान् रिपु है। बालक प्रतिदिन शाम को खेल के मैदान में खेलते हैं।

अनुवाद – शूराः मनुष्याः युद्धे न पराजयन्ते। रात्रौ चन्द्रः सुशोभते। प्राज्ञाय किमपि कठिनं नास्ति। गुणी सर्वत्र मानं लभते। उद्यमी नरः दुःखी न भवति। गुरूः शिष्यम् प्रति पुत्रवत् व्यवहरति। छात्राः अध्ययनार्थं विद्यालयं गच्छन्ति। आलस्यं मनुष्याणां महान् रिपुः अस्ति। बालकः प्रतिदिने सायंकाले क्रीडाङ्गणे क्रीडन्ति।

(4)

राजकुमार ध्रुव राजा उत्तानपाद का पुत्र था। उसकी माता का नाम सुनीति था। राजा उत्तानपाद की दूसरी पत्नी सुरूचि थी। सुरुचि ने उसे पिता की गोद से हटा दिया। ध्रुव दुःखी हुआ। उसने घर छोड़ दिया। वह जंगल में चला गया। ध्रुव ने ईश्वर की प्रार्थना की। भगवान् प्रसन्न हुए। ध्रुव ने बहुत वर्षों तक राज्य किया। उसने अन्त में स्वर्ग में अचल स्थान प्राप्त किया।

अनुवाद – राजकुमारः ध्रुवः राज्ञः उत्तानपादस्य पुत्रः आसीत्। तस्य मातुः नाम सुनीतिः आसीत्। सुरुचिः राज्ञः उत्तानपादस्य अपरा भार्या आसीत्। सुरूचिः तं पितुः उत्सड.गात् अवरोहयत्। ध्रुवः दुःखितवान्। सः गृहं त्यक्तवान्। सः वनं गतवान्। ध्रुवः ईश्वरं प्रार्थितवान्। ईश्वरः प्रासीदत्। ध्रुवः बहूनि वर्षाणि अशासयत्। सः अन्ते अचलं स्थानं प्राप्तवान्।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(5)

नम्रता एक दिव्य गुण है। दूसरों के साथ शिष्ट व्यवहार का नाम नम्रता है। नम्र व्यक्ति सदा दूसरों का हित चाहता है। वह किसी की भी हानि नहीं करता । वह सदैव बड़ों की आज्ञा का पालन करता है। विद्या मनुष्य को नम्र बनाती है। जिस प्रकार फल आने पर वृक्ष झुक जाता है, उसी प्रकार शिक्षित व्यक्ति का व्यवहार नम्र होता है। नम्रता मनुष्य को लोकप्रिय बनाती है। सभी महापुरूषों मं नम्रता का गुण पाया जाता है।

अनुवाद – नम्रता एकः दिव्यः गुणअस्ति। अन्यैः सह शिष्ट व्यवहारस्य नाम नम्रता अस्ति। नम्रः जनः सर्वदा परेषां हितं वाञ्छति। सः कस्यचिदपि हानिं न करोति। सः सर्वदा गुरूजनानां आज्ञां पालयति। विद्या मनुष्यं नम्र करोति (विद्यया मनुष्यः नम्रः भवति)। यथा फलागमने वृक्ष नमति तथा शिक्षितस्य व्यवहारः नम्रः भवति। नम्रता मनुष्यं लोकप्रियं करोति। सर्वेषु महापुरूषेषु नम्रतायाः गुणः प्राप्यते।

(6)

कवि ने सुनदरताम का वर्णन किया। गुरुम् को नमस्कार कर माली खिले हुए फूल इकट्ठा करता है। जल से प्यास शान्त होता है। कर्तव्यपालन जीवन की आधारशिला है। रामायण उच्च कोटि का महाकाव्य हैं। उपकार द्वारा सुख प्राप्त होता है। कर्म में अधिकार है, फल में नहीं। लौकिक ज्ञान के बिना पण्डित भी उपहास का पात्र बनता है। सज्जन दुष्टों की बातों को सहन करता है।

अनुवाद – कविः सुन्दरतामं अवर्णयत्। गुरुः नमस्कारं कृत्वा मालाकारः विकसितानि पुष्पाणि चिनोति। जलेन् तृषा शाम्यते। कर्तव्यपालनं जीवनस्य आधारोऽस्ति। रामायणम् उच्चकोटेः महाकाव्यमस्ति। उपकारेण सुखं लभते। कर्मणि अधिकारः वर्तते फले नास्ति। लौकिकेन ज्ञानेन बिना पण्डितोऽपि संसारे उपहास्यतां गच्छति। सज्जनः दुष्टानां वचनानि सहते।

(7)

प्राचीन काल में अयोध्या में राजा दशरथ हुए। उनके राम, लक्ष्मण, भरत शत्रुघ्न चार पुत्र थे। राम का विवाह सीता के साथ हुआ। राम वन को गये। युद्ध में राम ने रावण का वध किया। राम का अयोध्या में अभिषेक हुआ। वाल्मीकि ने रामायणम् की रचना की। उन्होंने राम के चरित्र का सुन्दर वर्णन किया।

अनुवाद – पुरा अयोध्यायां नृपः दशरथः अभवत्। तस्य रामः लक्ष्मण, भरतः शत्रुघ्नश्च चत्वारः पुत्राः आसन्। रामेण सह सीतायाः विवाहः अभवत्। रामः वनं गतः। युद्धे रामः रावणं हतवान्। रामस्य अयोध्यायां अभिषेकं अभवत्। वाल्मीकिः रामायणम् अरचयत्। सः रामस्य चरित्रस्य शोभनं वर्णनम् अकरोत्।

(8)

तोता मीठे स्वर में बोलता है। उसका शरीर हरा होता है। गर्दन पर सुंदर रेखा होती है। उसे

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

मिर्च अच्छी लगती है। वह मनुष्य सदृश बोल सकता है। इसलिए लोग इसे पकड़ कर पालते हैं। राम शब्द है। लोग तोते को बोलना सिखाते हैं। पहाड़ी तोते बहुत साफ बोलते हैं। पुरानी कहानियों में तोते बातचीत करते हैं।

अनुवाद – शुकः मधुरेण स्वरेण वदति। तस्य शरीरं हरितं भवति। ग्रीवायां सुंदरी रेखा भवति। तस्मै मर्चिम् रोचते। सः नर इव वक्तुं शक्नोति। अतः जनाः तं गृहीत्वा पालयन्ति। रामः शब्दोऽस्ति। जनाः शुकं वदितुं शिक्षयन्ति। पर्वतीय शुकाः अतिस्पष्टाः वदन्ति। प्राचीन–कथासु शुकाः वार्तालापं कुर्वन्ति।

(9)

रात को चन्द्रमा चमकता है। आकाश में तारे निकल आते हैं। सूर्य का अपना प्रकाश होता है, इसलिए तेज होता है। चन्द्रमा सूर्य से प्रकाश पाता हे। अतः उसका प्रकाश कोमल होता है। चनद्रमा पृथ्वी के चारों ओर घूमता है। एक महीने में उसका चक्कर पूरा होता है। पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा चॉदी की थाली सा गोल दिखता है। उसके बाद घटता है। आधा चॉद बड़ा भला लगता है। भगवान शंकर अर्धचंद्र को मस्तक पर धारण करते हैं। अमावस्या को चन्द्रमा का कोई भाग नहीं दिखाई देता है।

अनुवाद – रात्रौ चन्द्रः भासते। आकाशे तारागणाः आाविर्भवन्ति। सूर्यस्य स्वकीयः प्रकाशो भवति अतः तीक्ष्णो भवति। चन्द्रः सूर्यात् प्रकाशं लभते अतः तस्य प्रकाशो मृदुः भवति। चन्द्रः पृथिवीं प्ररिक्रामति। एकेन मासेन तस्य परिक्रमः पूर्णं भवति। पूर्णिमायां चन्द्रः रजतस्य स्थाल्यामिव वृत्ताकारः दृश्यते। तत्पश्चात् क्षीयते। अर्धचन्द्रः अतिमनभावनः लक्ष्यते। भगवान् शंकरः अध्रचन्द्रं मस्तके धारयति। अमावस्यायां चन्द्रस्य कोऽपि भागः न दृश्यते।

(10)

चार बजे हैं। शाला का काम पूरा हुआ । घंटी बजी। बालक घर लौटे। शाम हो गयी। साथियों ने कहा–खेलने चलो। चोर धन्धे की खोज में चल पड़े। एक लड़के को चोरी की आदत थी। वह प्रतिदिन कुछ चुराकर लाता था। उसकी मॉ ने उसे बुरे काम से कभी नहीं रोका। वह पक्का चोर बन गया। एक पुलिस कर्मचारी ने उसे पकड़ लिया। बुरे कर्म का फल बुरा होता है।

अनुवाद– इदं चत्वारि वादनं बेला अस्ति। शालायाः कार्यं पूर्णमभवत्। घंटिका अवादयत्। बालकाः गृहं न्यवर्तन्त। सायंकालो बभूव। मित्राणि अकथयन् क्रीडितुं चल। चौराः व्यवसायं अन्वेष्टुं चलितवन्तः। एकस्य बालकस्य चौर्यस्य प्रकृतिः आसीत्। सः प्रतिदिनं किंचिदपि चोरयित्वानयति। तस्य माता अस्मात् दुर्व्यसनात् कदापि न न्यवारयत्। सः निपुणः चौरः अभवत्। एकः आरक्षी कर्मकरः तम् गृहीतः। दुष्कर्मणः फलमपि दुष्करो भवति।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

सप्तमः अध्यायः

अपठित गद्यांश

(1)

पृथिव्यां सर्वेषुजीवेषु मानवः श्रेष्ठः। मानवेषु कर्म अधिकृत्य वर्णव्यवस्था वेदेषु वर्णिता। यो जनः अध्ययनादि कर्मणि संलग्नः असौ ब्राह्मणः उच्यते। रक्षाकार्ये संलग्नः क्षत्रिय कथ्यते। व्यवसाये कृषि कर्मणि संलग्नः सन् वैश्य इति उच्यते। सेवाकार्ये संलग्नः शूद्र कथितः। इत्येवं कर्मणा वर्णः न तु जात्या। उक्तमपि ''ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत्।

1. उचितं शीर्षकं लिख्यताम् ?
2. गद्यांशस्य सारांशः लिख्यताम् ?

(2)

भारतीय समाजः धर्म जात्यादीनधिकृत्य विविधतां विद्धाति। भाषाऽपि, अस्मिन् समाजे क्षेत्रीय विशिष्टतया एकाधिका। अस्तु बहु भाषा भाषिणः, धर्मानुसारिणः, जातिमूलकश्च वासिनः अत्र, सांस्कृतिक ऐक्यतां वहन्ति। सर्वत्रापि भारते जन्मतः मृत्युपर्यन्तं यानि संस्काराणि क्रियन्ते, तानि सर्वाणि किंचिद भेदेन सर्वैरपि अनुष्ठीयन्ते। वस्त्राभूषणानि अपि तथैव धारयन्ति सर्वे। तीर्थव्रतान्यपि मन्यन्ते सर्वे। एवं संपूर्ण भरते एकैव सांस्कृतिक धारा प्रवहति।

1. शीर्षक लेखनं करोतु ?
2. सार–अंश लिखतु?

(3)

प्राचीन काले जनाः ग्राम्य क्षेत्रे वसन्तः स्वस्थ जीवनं यापयन्तिस्म। सरलं कर्ममयं जीवनं तेषाम् आसीत्। दुर्व्यसनैः परे सर्वे शान्तिपूर्णं निवसन्ति। अधुना यातायात विस्तारेण, आवागमनं सर्वत्र सुकरं जातम्। वैश्वीकरण भावनाऽपि विस्तृता। सुकरं जीवनम् अधुना विलासपूर्णं जातम्। न शरीरं, न जीवनं शान्तिमयम्। सर्वत्र संघर्षः एव दृश्यते। कुत्रचिदपि न शान्तिः।

1. सारांशलेखनं करोतु?
2. उचित शीर्षकं लिख्यताम्?

(4)

प्राचीन भारते ऋषिमहर्षिणां, महात्मनां च वर्णनम् उपलभ्यते। अस्मिन् वैज्ञानिक युगे जाताः अनेके महापुरूषाः। किन्तु ते सर्वे क्षेत्रविशेषमाश्रित्य एव प्रसिद्धिं प्राप्नुवन्। एक एव जनः स्वकर्मणा, सत्य–अहिंसा व्रतधारणेन भारतीय जनानां कल्याणाय कृत संकल्पः आसीत्। गौराड्.गैः सह, सत्याग्रहेण अहिंसामूलकान्दोलनेन च भारतीय स्वतन्त्रतायै अयुध्यत्। भारतीय स्वतंत्रता नायकोऽयं मोहनदास करमचन्द गांधी महोदयः आसीत्। जनाः अस्य त्यागं दृष्टवा ''महात्मा'' शब्देन अलड.कृतवन्तः।

1. सारांश लिखित्वा शीर्षकं लिखतु ?

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अष्टमः अध्यायः

पत्र लेखनम

1. पितरं प्रति पुस्तकार्थं पत्रम्–

श्रीः

भिलाई नगरम्

23. 10. 2008

परम पूज्यानां पितृचरणानां पादयोः साष्टाङ्.गप्रणामाः।

अत्र अहं कुशली। तत्रापि भवन्तः सर्वेऽपि कुशलिनः इति मन्ये।

अत्र मम पठनं सम्यक् चलति। वार्षिकी परीक्षा निकटा अस्ति। मम पार्श्वे संस्कृतस्य, विज्ञानस्य, मातृभाषायाः पुस्तकानि न सन्ति। अतः अध्ययने कष्टं भवति। भवान् शीघ्रं पुस्तकानि मम कृते प्रेषयतु। विद्यालये शिक्षकाः अपि पुस्तकस्य कृते वदन्ति। मम विद्यालये संस्कृत सम्भाषणवर्गः अभवत्। कृपया भवान् विद्यालयम् आगच्छतु।

मातृचरणयोः अपि मम वन्दनानि। सर्वान् मम कुशलसमाचारं सूचयन्तु। सुरेशं, गीताम् आशीर्वादं सूचयन्तु। पत्रं लिखन्तु।

भवदीयः पुत्रः
इन्दीवरः

2. प्रधानाचार्यस्य कृते प्रार्थना पत्रम् –

सविधे,
श्रीमन्तः प्राचार्यमहोदयाः
शा. उ. मा. विद्यालय ....

विषयः – अवकाशनिमित्तम्।

मान्यवर!

अहं गतदिवसात् शीतज्वरेण पीड़िताऽस्मि। मम शिरोवेदना अस्ति। ज्वरकारणात् बहुदुर्बला जाता कार्श्यमपि प्राप्तवती अस्मि। अतः अद्य विद्यालयम् आगन्तुम् असमर्था। कृपया दिवसद्वयस्यकृते अवकाशं स्वीकृत्य माम् अनुगृहीष्यन्ति श्रीमन्तः एषः मम अचलः विश्वासः अस्ति।

भवताम् आज्ञाकारिणी,
छात्रा–छायारानी
कक्षा–द्वादश 'अ'

दिनाङ्कः
....

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

3. शुल्क – निरसनं हेतु आवेदनपत्रम् –

सेवायाम्
श्रीमन्तः प्राचार्यमहोदयाः
शा. उ. मा. विद्यालय ....
अशोक नगर,

विषयः – शुल्क विषये।

महाशय,

सविनय निवेदनम् अस्ति यत् अहं मुकेश उरॉवः द्वादश वर्गस्य छात्रः अस्मि। अतीव निर्धनः असहायः च छात्रः अस्मि। मम क्रमाङ्.क द्वादश 'ब' मध्ये द्वितीय अस्ति। मम पिता नास्ति। गृहे चतस्त्रः भगिन्यः सन्ति। माता कष्टेन अस्मान् पालयति। विद्यालये मासिकं शुल्कम् अधिकम् अस्ति। अहं तत् शुल्कं दातुं सर्वथा असमर्थः अस्मि। विद्याभारत्याः लक्ष्यमेव अस्ति दीन–हीन गिरिकन्दरासु निवसतां शिक्षाक्षेत्रे सेवा। मम निर्धनतां मनसि निधाय निःशुल्कपठनस्य व्यवस्थां करोतु इति मम करबद्धा प्रार्थना।

अध्ययने मम महती इच्छा अस्ति। कृपया शुल्कमुक्तिं स्वीकृत्य मां कृतार्थयन्तु। अध्ययने सहायतां करोतु। अस्य कृते अहं जीवनपर्यन्तं कृतज्ञः भवानि।

भवताम् आज्ञाकारी
दिनाङ्कः ....
छात्रः–मुकेश उरॉव
कक्षा– द्वादश 'ब'

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. पुस्तकप्रेषणविषये प्रार्थना पत्रम् –

सविधे
मान्यः सम्पादकः,
शिशु मन्दिर प्रकाशन, नाला रोड़
पटना–3

दिनाङ्कः
....

महोदय,

भवतः शिशु मंदिरप्रकाशनस्य पुस्तकानि दृष्टवती। पुस्तकानि अध्ययनस्य कृते अति उपयोगीनि सन्ति। पुस्तकानां कृते गतमासे अहं त्रिंशतं(300/–) रूप्यकाणि प्रेषितवती। तस्य प्राप्तिपत्रम् अपि मम पार्श्वे आगतम्। अद्य पर्यन्तं पुस्तकानि न प्राप्तवती अतः बहु चिन्ता भवति। पुस्तक–प्रेषणे किमर्थं विलम्बः जातः। कृपया मम कृते पूर्व सूचितानि पुस्तकानि शीघ्रं प्रेषयन्तु अन्यानि मित्राणि अपि पुस्तकानि इच्छन्ति। भवान् शीघ्रं पत्रं पुस्तकानि च प्रेषयिष्यतीति विश्वसिमि।

भवतः पत्रोत्तरस्य प्रतीक्षां करोमि।

भवदीया
डॉ.रश्मि प्रसाद
संस्कृत आचार्या
सरस्वती शिशु मन्दिरं कड़्बाग,

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

नवमः अध्यायः

निबन्धाः

संकलित – श्री राजमूर्ति पाण्डेय

(1) अस्माकं विद्यालयः

मम विद्यालयस्य नाम राजकमल सरस्वती विद्यामन्दिरम् अस्ति। विद्यालयस्य भवनं मनोहरम् अस्ति। अत्र एकम् उद्यानम् अपि अस्ति। अस्मिन् विद्यालये शिक्षणव्यवस्था सुदृढ़ा अस्ति। अस्माकं प्रधानाचार्यः सरलः विज्ञः च अस्ति। सर्वे आचार्याः सहृदयाः गुणज्ञाः च सन्ति। अहं द्वादशवर्गे पठामि। मम वर्गे पञ्चचत्वारिंशत् छात्राः सन्ति। मम विद्यालये त्रिसहस्त्र छात्राः सन्ति। विद्यालयस्य परीक्षाफलं प्रतिवर्षम् अतीव श्रेयष्करं भवति। अस्माकं विद्यालये न केवलं गणित–विज्ञान–मातृभाषायाः अध्ययन–अध्यापनस्य व्यवस्था अस्ति अपितु संगणक–ललितकला–संस्कृतभाषायाः कृतेऽपि उत्तमा व्यवस्था अस्ति। अस्मिन् विद्यालये शारीरिक–प्रशिक्षण, योगप्रशिक्षणं, संगीतप्रशिक्षणश्च प्रतिदिनं भवति। नैतिकमूल्याधारितं अस्मिन् विद्यालये छात्राणां सर्वाङ्.गीण विकास हेतवे अहर्निशं चिन्तनं प्रचलति। अस्माकं विद्यालयः नगरस्य एकः आदर्शविद्यालयः अस्ति।

(2) आदर्श छात्रः

छत्रं शीलं यस्य सः छात्रः। अर्थात् छत्रम् इव यस्य छात्रस्य आचरणं भवति स एव छात्रः इति कथ्यते। इदानीं विद्याालयेषु यः कोऽपि पठति तान् एव जनाः छात्राः इति कथ्यन्ते। छत्रं स्वयमेव आतपे तपति, वर्षासु आर्द्रः भवति पर स्वाश्रितानां जनानाम् आतपात् निवारयति, वर्षात् रक्षति। एतादृशम् आचरणं यः आचरति सः एव आदर्शछात्रः भवति। सः मातृभक्तः, पितृभक्तः, गुरूभक्तश्च भवति। तस्य भाषा मधुरा भवति। सः सदाचारी, सत्यभाषी च भवति। आदर्शः छात्रः पापात् विभेति। राष्ट्रसेवापरायणः सः आलस्यं त्यक्त्वा अध्ययने निरतः भवति। अहर्निशं विद्यायाः एव चिन्तनं करोति। तस्य दैनन्दिनकार्यक्रमाः सोत्साहं प्रचलन्ति।

(3) हिमालयः

1. भारतस्य उत्तरस्यां दिशि एकः पर्वतः अस्ति।
2. तस्य नाम हिमालयः अस्ति।
3. हिमालयः पर्वतेषु श्रेष्ठः अस्ति।
4. हिमालयः भरतवर्षं रक्षति।
5. अस्य शिखराणि अतीव उन्नतानि सन्ति।
6. तानि सदा हिमेनाच्छादितानि सन्ति।
7. इत्यर्थम् सः हिमालयः कथ्यते।
8. हिमालये मानसरोवरः वर्तते।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

9. अस्य जलं अतीव स्वच्छम् अस्ति।
10. मानसरोवरे हंसाः विहरन्ति।
11. अस्य पर्वतस्य समीपे वनानि सन्ति।
12. अस्य वनेषु सञ्चारः अतीव दुष्करः अस्ति।
13. हिमालये प्राचीन–गुहाः सन्ति।
14. तस्मिन् योगिनः अद्यापि निवसन्ति।
15. हिमालयात् बहवः नद्यः प्रभवन्ति।
16. हिमालयः औषधीनाम् अपि आलयः अस्ति।
17. हिमालयः भारतभालस्य इव।

(4) अनुशासनम्

1. जीवनस्य विविध क्रियाणां नियंत्राणार्थं अनुशासनस्य आवश्यकता भवति।
2. अतः जीवने अनुशासनस्य महती आवश्यकता भवति।
3. अनुशासन–रहितं जीवनं पशुवत् उच्छृंखलं भवति।
4. मानवसमाजस्य अस्तित्वं शोभा च अनुशासनेन एव भवति।
5. ये जनाः अनुशासनस्य स्वयमेव पालनं कुर्वन्ति ते जीवने श्रेयः लभन्ते।
6. अनुशासनेन जनाः विद्या लभन्ते।
7. अनुशासनेन जनाः अर्थम् लभन्ते।
8. अनुशासनेन जनाः सर्वप्रियाः भवन्ति।
9. अनुशासनेन एव समाजे जनाः सम्माननीयाः भवन्ति।
10. अनुशासनेन एव अहर्निशं श्रमं कृत्वा सफलतां लभते।
11. स्वानुशासनं मानवस्य एकं वैशिष्ट्यं अस्ति।
12 सेनायां अनुशासनस्य अत्यधिकं महत्वं भवति।

(5) सदाचारः

1. आचारः परमो धर्मः।
2. परन्तु सतां आचारः एव सदाचारः भवति।
3. सज्जनाः सदैव सत्यं वदन्ति, सत्कर्माणि च कुर्वन्ति।
4. ते कदापि असत्यं न वदन्ति, असत्कर्माणि च न कुर्वन्ति।
5. सदाचारैः ते यशः सुखं नीरोगतां च लभते।
6. अतएव वयमपि तान् अनुसरणं कुर्यात्।
7. सदाचारिणः गुरूणाम् आदरं सम्मानं च कुर्वन्ति।
8. ते सदा गुरूणाम् आज्ञां पालयन्ति।
9. सदाचारैः एव जनाः संसारे उन्नतिम् कुर्वन्ति।
10. सदाचारी एव कीर्तिं भूतिं च लभते।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

11. सदाचारिणः नराः मानं प्राप्नुवन्ति।
12. सदाचारिणः एव ज्ञानं प्राप्नुवन्ति।
13. ते सदैव सन्मार्गे संलग्नाः भवन्ति।
14. ते सदैव सत्कार्येषु तत्पराः भवन्ति।
15. अतएव जनैः सदाचारः पालनीयः।

(6) कविः – कालिदासः

1. कालिदासः न केवलं भारतस्य अपितु विश्वस्य श्रेष्ठतमः कविः आसीत्।
2. अतएव सः कविकुल गुरूः कथ्यते।
3. तस्य जन्मः कदा कुत्र च अभवत् इति अविदितम्।
4. परन्तु सः उज्जयिन्यां अवसत् इति विदितम्।
5. सः उज्जयिन्याः राज्यस्य राजकविः आसीत्।
6. सः महाराजस्य विक्रमादित्यस्य नवरत्नेषु एकः आसीत्।
7. तस्य भार्यानाम् विद्योतमा आसीत्।
8. सा विदुषी आसीत्।
9. कालिदासेन रचिताः सप्तग्रन्थाः प्रसिद्धाः।
10. तेषु अभिज्ञानशाकुन्तलम् जगत्प्रसिद्धम् अस्ति।
11. अस्याः काव्यसौन्दर्यं अपूर्वम् अस्ति।
12. तस्य रचनाः अत्यन्तसरसाः सन्ति।
13. तस्य रघुवंशम् महाकाव्यं अपि अत्यन्तं शोभनं अस्ति।
14. मेघदूतम् गीतकाव्यं सरसं आह्लादकं च अस्ति।
15. कालिदासस्य उपमा अतीव प्रसिद्धाः सन्ति।

(7) राष्ट्स्य एकतायां संस्कृतस्य महत्वम्

राष्ट्रीयएकतायां संस्कृतस्य महद्योगदानम् अस्ति। भारतराष्ट्रे ये पन्थाः सन्ति याश्च भाषाः सन्ति तेषां मूले संस्कृतमेव मुख्य–सूत्र रूपेण अस्ति। यदि क्षेत्रियाः भाषाः वदामः तर्हि सीमितक्षेत्रपर्यन्तमेव अधिका प्रीतिः भवति। संस्कृतसम्भाषणेन सम्पूर्णभारतराष्ट्रस्य कृते आत्मीयता भवति। एकतायाः मूलसूत्रं संस्कृतादेव निर्गता इति मन्ये।

"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्!
देवा भागो यथा पूर्वो सञ्जानानामुपासते!!"

हे संसारस्य जनाः भवन्तः सार्धं चलन्तु, एकमेव चित्तकाः भवन्तु देवाः एकता कारणादेव सम्पूज्याः जाता। एते एव गुणाः संघटनस्य कृते प्रमुखाः भवन्तीति।

सम्प्रति समाजे, गृहे, ग्रामे, राज्ये, देशे विश्वे च कुत्रापि एकता नैव दृश्यते। किञ्च कारणम् ? कारणम् एकमेव संस्कृतस्य उपेक्षा। संस्कृतं– संस्कृतिं प्रति जागरूकता–नैतिक ज्ञान–आदर्श–चिन्तनम् – एकताभावनायाः विकासः = राष्ट्कल्याणम्। यदा संस्कृतसूर्यस्य उदयः भवति तदा संस्कृतं प्रति

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

जागरूकता भवति, ततः नैतिक ज्ञानं भवति तदा आदर्शचिन्तनं भवति तदैव एकता भावनायाः विकासः भवति। यदा एतस्याः भावनायाः विकासः भवति तदैव राष्ट्रस्य कल्याणं भवति। सम्प्रति भारते अनेकाः समस्याः सन्ति यथा– उच्च–नीच भेदभावः, जातिभेदः, प्रान्तभेदः, भाषाभेदः, उत्तर–दक्षिण भेदः, स्पृश्यापृश्य भेदाः। वयं संस्कृतद्वारा सर्वासां समस्यानां समाधानं कृत्वा भारतस्य एकतां सुदृढ़ां कर्त्तुं शक्नुमः।

(8) दूरदर्शनम्

दूरदर्शनम् आधुनिकविज्ञानस्य एकः अद्भुत आविष्कारः अस्ति। समाचारं, चलचित्रं, सूचनाः क्रीड़ायाः, प्रसारणम्, आदर्शपाठनम्, सरसाः कथाः सम्प्रति दूरदर्शने आनन्देन द्रष्टुं शक्यन्ते। एतत् मनोरञ्जनस्य सर्वोत्तमं साधनं वर्ततेति। अस्य यन्त्रस्य प्रथमः मार्गदर्शकः पालनिपकः आसीत्। ततः जान.एल.वेयर्ड महोदयः एतस्य यन्त्रस्य सफलं प्रयोगं कृतवान्। एतस्य सफलः प्रयोगः आङ्.गलदेशे 1925 तमे वर्षे अभवत्। दूरदर्शनं सञ्चारस्य एकम् उत्तमं साधनम् अस्ति। जीवनस्य सर्वेषु क्षेत्रेषु विशिष्टज्ञानं एतेन प्राप्यते। निखिलस्य संसारस्य समाचारं सचित्रं तत्क्षणं ज्ञातुं शक्यते। सम्प्रति रामायणम्, श्रीकृष्णा, जय हनुमान, शक्तिमान, कैप्टन व्योमादयः उपदेशप्रदाः कथाः सचित्रं प्रदर्श्यन्तेऽति महतः सन्तोषस्य विषयः। अत्र लाभः अस्ति। हानिः अपि अस्ति। दूरदर्शने सम्प्रति अश्लीलचित्राणि अपि प्रदर्श्यन्ते, एतेन विदेशी संस्कृतिः भारते आरोपिताः। दूरदर्शनकारणादेव छात्राः अधिकं दूरदर्शनं पश्यन्ति अतः रूग्णाः, उच्छृड.खलाः, असभ्याः च भवन्ति। अपराधिनः अपि भवन्ति। एतेन एव प्रेरणया समाजे अपराधस्य, दुराचारस्य च सर्वत्र नग्ननर्तनं भवति। भारतीया संसकृतिः एतेन व्यथिता भवति। अतः दूरदर्शने पारिवारिकचित्रं, आदर्श चित्रं कथम् आगच्छेदिति चिन्तनीयम्। तदैव दूरदर्शनं सर्वोत्तं साधनं भवितुं शक्नोति।

(9) पर्यावरण प्रदूषणस्य कारणम्

पर्यावरण शब्दस्य निर्माणम् – परि+आवरणम् शब्देन अभवत्! ''परि'' शब्दस्य अर्थः परितः एवञ्च ''आवरणम्'' शब्दस्य अर्थः आवरणम्। अर्थात् अस्माकं चतुर्षु दिक्षु यतः सम्यक् आवरणम् अस्ति वस्तुतः तदेव पर्यावरणम् इत्युच्यते। अस्मान् सुखस्य कृतं एव प्रकृतिः सर्वत्र एव सुखदस्य आवरण–निर्माणं कृतवती। वयं धनलोलुपाः धनान्धाः मानवाः भौतिके सुखानां अग्निवृष्टौ तं नाशितवन्तः। वाहनानां, यन्त्रागाराणां धूमाः रासायनिकगैस, उच्चाध्वनि, मदिरादयः तं स्वच्छं वातावरणं प्रदूषितां कृतवन्तः। वनस्य कर्तनमपि प्रदूषणस्य एकं प्रमुख कारणम् अस्ति। प्रदूषणस्य प्रमुखतः चत्वारः विभागाः सन्ति वायुप्रदूषणम् जल–प्रदूषणम्, ध्वनिप्रदूषणम्, अणुप्रदूषणंच। सर्वाणि प्रदूषणानि रोगान् वर्धयन्ति एव। जीवनतः सुखशान्ति दूरी करोत्येव।

पुरा प्रदूषणं नासीदेव। अतः जनाः शक्तिशालिनः स्वस्थाः चिरजीविनः भवन्तिस्म। सम्प्रति वयमेव स्वकुकर्मवशात् ध्वनि, जल, वायु, अणु, प्रदूषणं कृत्वा स्वकीयं जीवनं नाशयन्तः स्मः।

सत्यमेव उच्चते–विनाशकाले विपरीत बुद्धिः।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(10) संघे शक्तिः कलौयुगे

एकम् एव उद्देश्यम् लक्ष्यीकृत्य बहूनां जनानाम् एकत्वभावनया कार्यकारणं एव ''संघ'' एकता वा कथ्यते। एकतायाः संघे वा महती शक्तिः भवति। संघशक्त्यैव देशः समाजो लोकश्च उन्नति–पथं प्राप्नुवन्ति। यः देशः शक्ति–संघेण पूर्णः भवति स देशः सम्पूर्ण संसारे सम्माननीयः भवति। अस्माकं देशः एकतायाः संघशक्तेः वा अभावात् एव बहुवर्षाणि पराधीनं जातम्। परं यदा भारतीयेषु एकत्वभावना आगता तदा देशः स्वातंत्र्यमलभत्।

इयं संघशक्तिः न केवलं चेतनेषु अपितु अचेतनेष्वपि महन्महत्वसम्पादिका भवति।
अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्वध्यन्ते मत्तदन्तिनः ।।

यथा एक शक्तियुक्त तृणं क्षुद्रमपि जन्तु बुद्धुं सर्वथा क्षमं भवति किन्तु तृणानां कलापैः समूहैः गुणत्वमापन्नैः मत्ताः गजाः अपि वध्यन्ते। एकः बलवान् वृक्षः, वायुवेगं रोद्धुं न शक्नोति किन्तु वृक्षसमूहाः वृक्षाः तीव्रवायुवेगान् रोद्धन्त्येव। एकः जलबिन्दुः किमपि कर्त्तुं न शक्नोति किन्तु बिन्दुसमूहः सागरः पृथ्वीमपि निमज्जयितुं शक्नोति। यथा एकेन चक्रेण रथः पदात् पदमपि चलितुं न शक्नोति। परं चक्रयुगलेन महता वेगेन प्रधावत्येव । एकया इष्टिकया किमपि न भवति परं इष्टिकाभिः नाकस्पर्धिनः प्रासादाः भवितुं शक्नुवन्ति।

अतएव उच्यते– ''संड्.घे शक्तिः कलौयुगे''।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

दशमः अध्यायः

छन्द परिचय

प्रश्न के विषय में

छन्दों के सम्बन्ध में निम्न प्रकार के प्रश्न पूछे जा सकते हैं–

1. प्रत्येक छन्द में प्रायः कितने चरण (पाद) होते हैं?
2. समवृत्त क्या होता है ?
3. विषमवृत्त क्या होता है ?
4. वर्ण किसे कहते हैं?
5. समान्यतः लघु वर्ण क्या होता है ?
6. गुरूवर्ण क्या होता है ?
7. कब लघु वर्ण को भी गुरु वर्ण मान लिया जाता है ?
8. 'लघु' वर्ण का क्या चिन्ह होता है ?
9. 'गुरु' वर्ण का क्या चिन्ह होता है ?
10. किस गण में सारे वर्ण गुरु होते हैं ?
11. किस गण में सारे वर्ण लघु होते हैं ?
12. 'रमणम्' शब्द में कौन–सा गण है ?
13. शिखरिणी छन्द के प्रत्येक चरण में कितने वर्ण होते हैं ?
14. 'संयमः' शब्द में 'सं' वर्ण लघु है या गुरु ?
15. 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव' इसमें दो लघु वर्ण चिन्हित करो ?
16. रिक्त स्थान पूर्ति करके उक्त छन्द की परिभाषा पूरी करो ?
17. उक्त पंक्ति में कौन–सा छन्द है ?
18. अनुष्टुप छन्द का उदाहरण लिखो ?

आगे इन सब बातों पर विचार किया जा रहा है–

1. पद्य बनाते समय वर्णों (अक्षरों) अथवा मात्राओं की जो निश्चित व्यवस्था होती है, उसे छन्द या वृत्त कहते हैं।
2. प्रत्येक पद्य के प्रायः चार भाग होते हैं। इस प्रत्येक भाग को चरण या पाद कहते हैं। प्रत्येक चरण (पाद) में वर्णों (अक्षरों) अथवा मात्राओं की संख्या और क्रम निश्चित होता है।
3. ये वृत्त या छन्द तीन प्रकार के होते हैं–

   (i) समवृत्त – जिस वृत्त या छन्द के चरणों में वर्णों या मात्राओं की संख्या और क्रम समान हो उसे समवृत्त कहते हैं।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ii) अर्धसमवृत्त– जिस वृत्त या छन्द के प्रथम और तृतीय तथा द्वितीय और चतुर्थ चरणों में वर्णों या मात्राओं की संख्या और क्रम समान हो, उसे अर्धसमवृत्त कहते हैं।

(iii) विषमवृत्त – जिस वृत्त (छन्द) के चारों चरणों में वर्णों या मात्राओं की संख्या असमान होती है उसे विषमवृत्त कहते हैं।

4. पद्य का प्रत्येक चरण वर्ण या मात्राओं से निर्मित होता है। वर्ण शब्द के उतने अंश को कहते हैं जितना कि उच्चारण के एक प्रयत्न से होता है अर्थात् छन्दःशास्त्र में एक या एकाधिक व्यंजनों के सहित या रहित एक स्वर को वर्ण (अक्षर) कहते हैं।

5. ये वर्ण छन्द की दृष्टि से दो प्रकार का होता है– लघु और गुरु! सामान्यतः ह्रस्व स्वर से लघु वर्ण का है और दीर्घ स्वर से गुरु वर्ण का परन्तु निम्न दशाओं में लघु वर्ण को भी गुरु वर्ण मान लिया जाता है –

(i) ह्रस्व स्वर के अनुस्वारयुक्त होने पर लघु वर्ण को भी गुरु वर्ण मान लिया जाता है। जैसे ''रामं'' में 'म' गुरु माना जायेगा।

(ii) ह्रस्व स्वर के विसर्ग–युक्त होने पर लघु वर्ण को गुरु मान लिया जाता है। जैसे– ''रामः'' म वर्ण गुरु माना जाएगा।

(iii) ह्रस्व स्वर के बाद संयुक्त व्यंजन होने पर भी लघु वर्ण को गुरु मान लिया जाता है। जैसे– ''भक्त'' में 'भ' वर्ण गुरु माना जाएगा।

(iv) पद्य के किसी चरण का अन्तिम वर्ण लघु होते हुए भी आवश्यकतानुसार गुरु मान लिया जाता है। गुरु वर्ण के लक्षण के बारे में निम्नलिखित श्लोक प्रसिद्ध है–

> सानुस्वारश्च दीर्घश्च विसर्गी च गुरु र्भवेत्।
> वर्णः संयोगपूर्वश्च तथा पदान्तगोऽपि वा ।।

6. गुरु तथा लघु वर्णों के लिए निम्नलिखित चिन्हों का प्रयोग होता है–

(i) गुरु वर्ण = ऽ अथवा –

(ii) लघु वर्ण = । अथवा –

7. गणव्यवस्था– तीन वर्णों (अक्षरों) के समूह को गण कहते हैं। ये गण आठ होते है – मगण, नगण, भगण, यगण, जगण, रगण, सगण, तगण,। इन गणों की परिभाषा निम्नलिखित पद्य में दी गई है–

> मस्त्रिगुरुस्त्रिलघुश्च नकारो
> आदिगुरुः पुनरादिलघुर्यः।
> जो गुरुमध्यगतो रलमध्यः
> सोऽन्तगुरुः कथितोऽन्तलघुस्तः।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अर्थात् –

1. म (मगण) में तीनों वर्ण गुरू होते है, जैसे– रामाणां = SSS
2. न (नगण) में तीनों वर्ण लघु होते हैं, जैसे– अरिषु = ।।।
3. भ (भगण) में आदि वर्ण गुरू होता है जैसे– व्याधिषु = S।।
4. य (यगण) में आदि वर्ण लघु होता है जैसे– मुनिभ्यां = ।SS
5. ज (जगण) में मध्यवर्ती वर्ण गुरू होता है जैसे– नृपेण = ।S।
6. र (रगण) में मध्यवर्ती वर्ण लघु होता है जैसे– वीँना = S।S
7. स (सगण) में अंतिम वर्ण गुरू होता है जैसे– कपिना = ।।S
8. त (तगण) में अंतिम वर्ण लघु होता है जैसे– रामेषु = SS।

अब नीचे कुछ वैदिक और कुछ लौकिक छन्दों का परिचय दिया जा रहा है।

(क) वैदिक छन्द

1. गायत्री – आठ वर्णों के तीन चरणों वाला समवृत्त।

   लक्षण – गायत्री छन्द में तीन चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण में पाँचवाँ वर्ण लघु और छठा वर्ण गुरू होता है। जैसे–

   पावका नः सरस्वती
   वाजेभिर्वाजिनीवती।
   यज्ञं वष्टु धिया वसुः।।

2. अनुष्टुप्– आठ वर्णों वाला समवृत्त

   लक्षण– अनुष्टुप् छन्द के चार चरण होते है। प्रत्येक चरण में आठ वर्ण होते हैं जिनमें पाँचवाँ वर्ण लघु व छटवाँ वर्ण गुरु होता है। इसके पहले और तीसरे चरण में सातवाँ वर्ण गुरु और दूसरे और चौथे चरण में लघु होता है। जैसे–

   त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
   उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।

नोट – छन्द की पूर्ति के लिए त्रयम्बकं को त्रियम्बकं पढ़ते हैं।

3. त्रिष्टुप्– ग्यारह वर्णों वाला समवृत्त

   लक्षण– इस छन्द में चार चरण होते हैं और प्रत्येक चरण में ग्यारह वर्ण होते हैं। जैसे–

   (i) द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया,
   समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
   तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्ति,
   अनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

(ii) यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय
तथा विद्वान् नामरूपाद् विमुक्तः परात्परं पुरूषमुपैति दिव्यम्।।

(ख) लौकिक छन्द

1. अनुष्टुप् – आठ वर्णों वाला समवृत्त।

लक्षण – श्लोके षष्ठं गुरुर्ज्ञेयं सर्वत्र लघु पंचमम्।
द्विचतुः पदयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः।।

अर्थात् अनुष्टुप् (श्लोक) छन्द के चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण का छठा वर्ण गुरु ओर पाँचवाँ वर्ण लघु होता है। दूसरे और चौथे चरण में सातवाँ वर्ण लघु और पहले एवं तीसरे चरण में सातवाँ वर्ण गुरु होता है। जैसे–

(i) यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते।।

(ii) ययातेरिव शर्मिष्ठा भर्तुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पुरुमवाप्नुहि।।

2. इन्द्र वज्रा – ग्यारह वर्णों वाला समवृत्त । (त त ज ग ग)

लक्षण – स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः।

अर्थात् इन्द्रवज्रा छन्द के चारों चरणों में वर्णों का क्रम निम्नलिखित होता है – दो तगण (ऽऽ।,ऽऽ।), जगण (।ऽ।) और दो गुरू (ऽऽ)। जैसे–

स्वर्गच्युतानामिह जीवलोके, चत्वारि चिन्हानि वसन्ति देहे।
दानप्रसड्.गो मधुरा च वाणी, देर्वाचनं पण्डितत्र्प्रणंच।।

अलंकार– परिचय

अलंकरोतीति अलंकारः अर्थात् अलंकृत करने वाले तत्व को अलंकार कहते हैं। जिस प्रकार आभूषण शरीर की शोभा वृद्धि करते हैं, उसी प्रकार काव्यक्षेत्र में अलंकार काव्य की शोभा में वृद्धि करते हैं, काव्य की शोभा बढ़ाने वाले ये अलंकार तीन प्रकार के होते हैं– शब्दालंकार, अर्थालंकार और उभयालंकार। शब्द पर आश्रित अलंकार शब्दालंकार कहलाते हैं। जैसे– अनुप्रास, यमक आदि । अर्थ पर आश्रित अलंकार अर्थालंकार कहलाते हैं। जैसे– उपमा उत्प्रेक्षा आदि। शब्द और अर्थ दोनों पर आश्रित अलंकार उभयालंकार कहलाते हैं। जैसे– श्लेष । शब्दालंकार शब्द की शोभा को, अर्थालंकार अर्थ की शोभा को और उभयालंकार शब्द और अर्थ दोनों की शोभा को बढ़ाते हैं।

नीचे कुछ अलंकारों का लक्षण और उदाहरण के साथ परिचय दिया जा रहा है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

1. अनुप्रास

लक्षण– (क) अनुप्रासः शब्दसाम्यं वैषम्येऽपि स्वरस्य यत्। (साहित्यदर्पण)

अर्थात् स्वर की विषमता होने पर भी शब्दसाम्य (वर्ण अथवा वर्ण समूह की आवृत्ति) को अनुप्रास कहते है। जैसे निम्न पद्य में अनुप्रास अलंकार है–

वहन्ति वर्षन्ति नदन्ति भान्ति, ध्यायन्ति नृत्यन्ति समाश्वसन्ति।
नद्यो घना मत्तगजा वनान्ताः, प्रियाविहीनाः शिखिनः प्लवंगमाः।।

उपर्युक्त पद्य के पहले दो चरणों में अनुप्रास अलंकार का सुन्दर प्रयोग है, क्योंकि इसमें 'अन्ति' (अ न् त् इ) वर्णसमूह की आवृत्ति है।

(ख) अथवा – वर्णसाम्यमनुप्रासः। (समान वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास कहते हैं) ।

2. यमक

लक्षण – सत्यर्थे पृथगर्थायाः स्वरव्यंजनसंहतेः।
क्रमेण तेनैवावृत्तिर्यमकं विनिगद्यते।। (साहित्यदर्पण 108)

अर्थात् वर्ण–समूह की उसी क्रम से आवृत्ति को यमक कहते हैं परन्तु पुनरावृत्ति वाला वर्ण–समुदाय या तो भिन्नार्थ हो, या अंशतः निरर्थक हो या पूर्णतः निरर्थक हो। जैसे निम्न पद्य में यमक अलंकार है–

प्रकृत्या हिमकोशाढ्यो दूरसूर्यश्च साम्प्रतम्।
यथार्थनामा सुव्यक्तं हिमवान् हिमवान् गिरिः।।

यहाँ पर हिमवान् वर्ण– समूह की उसी क्रम से पुनरावृत्ति हुई है और पुनरावृत्ति वाला यह वर्ण–समूह भिन्नार्थक है, अतः यहाँ यमक अलंकार है।

3. उपमा

लक्षण – (क) साम्यं वाच्यमवैधर्म्यं वाक्यैक्ये उपमा द्वयोः (साहित्यदर्पण)

अर्थात् एक वाक्य में दो (उपमेय और उपमान) के वैधर्म्यरहित सादृश्य को उपमा अलंकार कहते हैं। जैसे निम्न श्लोक में उपमा अलंकार है–

ययातेरिव शर्मिष्ठा भतुर्बहुमता भव।
सुतं त्वमपि सम्राजं सेव पुरुमवाप्नुहि।।

(ख) 'साधर्म्यमुपामभेदे' दो वस्तुओं में भेद रहने पर भी जब उनका साम्य प्रतिपादित किया जाए तो वहॉ उपमा अलंकार होता है।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

4. रूपक

लक्षण– (क) रूपकं रूपितारोपो विषये निरपह्नवे। (साहित्यदर्पण)

न छिपाए गए विषय (उपमेय) में विषयी (उपमान) का आरोप रूपक अलंकार कहा जाता है उदाहरणतः निम्नलिखित श्लोक में रूपक अलंकार है–

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः ।
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता
विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्याविहीनः पशुः ।।

(ख) तद्रूपकम् अभेदो यः उपमानोपमेयपोः।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

एकादशः अध्यायः

संस्कृत साहित्य का इतिहास

प्रश्न– संस्कृत भाषा पर टिप्पणी लिखकर उसके विकास पर प्रकाश डालिए?

उत्तर–विश्व की प्राचीनतम भाषा संस्कृत भारतीय सभ्यता व संस्कृति का कोष है। इसकी प्राचीनता का प्रमाण यह है कि वैदिक काल से आधुनिककाल तक की रचनाएँ सुरक्षित ही नहीं हैं, अपितु उनका उच्चारण क्रम आज भी वैसा ही है। देववाणी गीर्वाणवाणी अथवा सुरभारती नाम से व्यवहृत इस अमरवाणी मे वैज्ञानिक, दार्शनिक किंवा मानवीय सभी पक्षों पर आधारित बहुमुखी साहित्य उपलब्ध है। इसका एक मात्र आदर्श है वसुधैव कुटुम्बकम्।

इसका सम्बन्ध भारत–यूरोपीय भाषाओं से है। ग्रीक, लैटिन अंग्रेजी आदि भी इसी परिवार से सम्बद्ध हैं। इन भाषाओं के पर्याप्त शब्दों की उच्चारण–ध्वनियाँ बहुत समान हैं। यूरोपीय विद्वानों ने तुलनात्मक दृष्टिकोण से इन भाषाओं का अध्ययन किया है। ऐतिहासिक अध्ययन की दृष्टि से संस्कृत का सर्वाधिक महत्व है।

भारत की हिन्दी मराठी, गुजराती, बंगला आदि सभी आधुनिक भाषाएँ तथा दक्षिण भारत की तमिल, तेलगू, मलयालम् आदि भाषाएँ संस्कृत से ही जन्मी है। संस्कृत वस्तुतः एकता का मूल है। अतएव कहा गया है–

उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैवदक्षिणम्।
तद्वर्ष भारतं प्राहुर्भारती यत्र सन्ततिः।

समुद्र के उत्तर और हिमालय के दक्षिण में स्थित देश भारत कहलाता है । वहाँ की प्रजा भारती कहलाती है।

संस्कृत भाषा का विकास–क्रम इस प्रकार है–

(क) प्राचीन आर्य भाषा काल (20000 ई.पूर्व से 500 ई.पूर्व) इस काल में संस्कृत का रूप वैदिक रूप रहा।

(ख) मध्यकालीन आर्य भाषा काल (500 ई. पूर्व से 1000 ई.) संस्कृत से परिवर्तित, पालि, प्राकृत एवं अपभ्रंश के रूप में संस्कृत विकृत हुई और वह शिक्षित समाज की भाषा रही। जन–सामान्य में संस्कृत के प्रति सम्मान पूर्ववत् रहा।

(ग) आधुनिक आर्य भाषा काल (1000 ई. से अब तक) संस्कृत से अपभ्रंश का अपभ्रंश से हिन्दी, मराठी आदि का विकास हुआ। संस्कृत शिक्षित समाज की भाषा बनी रही। प्रादेशिक भाषाओं की रचनाओं में भी संस्कृत लब्धप्रतिष्ठ रही । विदेशी शासन के आगमन से तुर्की, अरबी एवं फारसी के शब्द आर्य भाषाओं में सम्मिलित हुए परन्तु संस्कृत उनसे प्रभावित न हो सकी।

इस प्रकार विकसित होती हुई संस्कृत भाषा शनैः–शनैः परिवर्तित होती रही। पाणिनि (500 ई. पूर्व) ने उसे परिनिष्ठित कर दिया। संस्कृत में भी ग्रन्थ रचे जाते रहे, परंतु अन्य पालि, प्राकृत आदि

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

का साहित्य अधिक विकसित होने लगा। पाणिनि–व्याकरण का अनुसरण करने वाले संस्कृत–साहित्य को लौकिक साहित्य कहते हैं। वैदिक भाषा से भिन्न आर्ष प्रयोगों से युक्त रामायण, महाभारत आदि पाणिनि से पूर्ववर्ती ग्रन्थ भी उसी के अंतर्गत आते हैं । वैदिक भाष के अंतर्गत प्राचीनतम ऋग्वेद की गणना होती है। ऋग्वेद में भी भाषा में एकरूपता का अभाव है। वैदिक संहिताओं की व्याख्या अथवा अनन्तरकालीन साहित्य ब्राम्हण, आरण्यक एवं उपनिषद् कहलाया।

रामायण, महाभारत को वैदिक एवं लौकिक साहित्य का संधि–काल कहा जा सकता है । पाणिनि अपने व्यापक ग्रन्थ अष्टाध्यायी के अनुसार वैदिक भाषा को 'छान्दस्' कहा तथा सामान्य लौकिक संस्कृत को 'भाषा' कहा। पाणिनि का व्याकरण इतना ख्यात हुआ कि अन्य सभी साहित्यकारों ने उनके व्याकरण का अनुगमन कर ही साहित्य की रचना की।

प्रश्न – वैदिक एवं लौकिक संस्कृत का अंतर स्पष्ट कीजिए।

वैदिक संस्कृत	लौकिक संस्कृत
1. संहिताएँ, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् इसके अन्तर्गत हैं।	1. वेदाङ्.ग, रामायण महाभारत, नाटक काव्य साहित्य आयुर्वेद आदि इसके अन्तर्गत हैं।
2. यज्ञ कराने वाले कर्मकाण्ड ग्रन्थ इसके अन्तर्गत हैं ।	2. इस साहित्य में सामाजिक साहित्य ही लिखा गया है।
3. पहले पद्य पुनः गद्य का प्राधान्य रहा	3. पद्य अधिक, गद्य कम रचा गया।
4. छन्दों में भी पृथकता आई।	4. त्रिष्टुप्, जगती आदि वैदिक छन्दों का अभाव रहा।
5. शब्द–रूप अधिक जैसे–गन्तुम्, गन्तवे, गन्तोः आदि (जाने के लिए)	5. शब्द रूप कम जैसे केवल गन्तुम् जाने के लिए।
6. आर्य भाषाओं में इसका अभाव है। अतः वैदिक साहित्य की 500 ई.पू. में ही समाप्ति हो गई।	6. आर्य भाषाओं में इसका प्राधान्य है। संस्कृत से प्राकृत, पालि एवं अपभ्रंश का विकास हुआ। प्राकृत के महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी आदि रूप विकसित हुए। महाराष्ट्री से मराठी, शौरसेनी से हिन्दी अपभ्रंश से पहाड़ी।

प्रश्न – वैदिक साहित्य का परिचय दीजिए।

उत्तर – 2000 ई.पू. से 500 ई.पू. तक रचा गया वैदिक साहित्य मूलतः कर्मकाण्ड से सम्बद्ध धर्मप्रधान साहित्य है। कहीं–कहीं उसमें तात्कालिक सामाजिक जीवन के विविध चित्र भी उभरे दिखाई देते हैं। वैदिक साहित्य के चार रूप हैं–

1. संहिता, 2. बाह्मण, 3. आरण्यक एवं 4. उपनिषद् ।

1. संहिता – वैदिक मन्त्रों को संहिता कहते हैं। ये चार हैं – 1. ऋग्वेद संहिता, 2. यजुर्वेद संहिता, 3. सामवेद संहिता तथा 4. अथर्ववेद संहिता। ये चारों संहिताएँ यज्ञ कराने वाले ऋत्विजों के

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

कारण भिन्न हैं। जैसे – 1. होता यज्ञ में देवताओं की स्तुति करता है। इसका सम्बन्ध यजुर्वेद और ऋग्वेद से है। 2. अध्वर्यु यज्ञ का विधिवत् सम्पादन करता है। इसका सम्बन्ध ऋग्वेद से लिए गये तथा मूल रूप में विद्यमान सामवेद से है। 3. ब्रह्मा यज्ञ में होने वाली त्रुटियों का निराकरण करता है। सभी संहिताओं से सम्बद्ध होते हुए भी इसका अधिक सम्बन्ध अथर्ववेद से है। अनेक शाखाओं का परिगणन होते हुए भी आज कुछ संहिताएँ ही उपलब्ध हैं।

2. ब्राह्मण – वैदिक संहिताओं के मन्त्रों की व्याख्या ही ब्राह्मण कहलाती है। व्याख्या के साथ–साथ उनमें नैतिक सामाजिक तथा राजनीतिक चर्चाओं का समावेश भी हो गया। प्रत्येक वेद का पृथक् – पृथक् ब्राह्मण है।

3. आरण्यक – अरण्य (वन) में रचे जाने से इन्हें आरण्यक कहते हैं। उनमें वैदिक कर्मकाण्ड, अनुष्ठान की उत्पत्ति एवं महत्व वर्णित हैं । प्रत्येक वेद का आरण्यक भी पृथक्–पृथक् है। इसमें संन्यास की प्रधानता दी गई है।

4. उपनिषद् – दर्शन शास्त्र के विवेचन–ग्रन्थों को उपनिषद् कहते हैं। इनमें मुख्यतः गुरु एवं शिष्य के संवाद हैं । उनमें आत्मा, ब्रह्मा एवं संसार के रहस्यों का प्रकाशन किया गया है। वैदिक साहित्य का अंतिम भाग होने से इन्हें वेदान्त भी कहते हैं ।

प्रश्न – वेदांगों के स्वरूप का परिचय देकर इनके भेद बताइए।

उत्तर – वैदिक साहित्य के विविध पक्षों की व्याख्या करने वाले साहित्य को वेदांग कहते हैं। इनके छः भेद हैं– 1. शिक्षा (मन्त्रों के उच्चारण की विधि), 2. कल्प (कर्मकाण्ड तथा आचार), 3. छन्द (अक्षरों की गणना के अनुसार पद्यात्मक मंन्त्रों का नामकरण), 4. निरुक्त (वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति एवं व्याख्या), 5. व्याकरण (शब्दों की सिद्धि का प्रकार), तथा 6. ज्योतिष (यज्ञ के समय का निरूपण तथा तिथि, ऋतु, नक्षत्र आदि का ज्ञान) ।

यह सभी वेदांग सूत्रात्मक हैं। कर्मकाण्ड से सम्बद्ध कल्प ग्रन्थों को इनसे भिन्न सूत्र साहित्य के अन्तर्गत रखा जाता है। सूत्र ग्रन्थ भी चार प्रकार के हैं । 1. श्रौतसूत्र–इनमें वैदिक यज्ञों की प्रक्रिया का निरूपण हैं, 2. गृह्यसूत्र–इनके अंतर्गत पारिवारिक कर्मकाण्ड का निरूपण हैं। 3. धर्मसूत्र–इनमें धार्मिक नियमों, कर्तव्यों एवं अधिकारों का वर्णन किया गया है । 4. शुल्वसूत्र–इनमें यज्ञवेदिका संबंधी विवरण दिया गया है ।

प्रश्न– ऋग्वेद पर टिप्पणी लिखिए ।

उत्तर – सप्तसिन्धु प्रदेश के आर्यो की धार्मिक एवं दार्शनिक भावना का संग्रह ही ऋग्वेद कहलाता है। ऋग्वैदिक सांस्कृतिक चेतना अद्यावधि विद्यमान है। इसके रचना–काल के संबंध में निर्णय करना बहुत कठिन है । भारतीय परम्परा अनुसार ऋग्वेद अपौरुषेय एवं अनादि हैं। विदेशी विद्वान् इस मत से सहमत नहीं है, परन्तु किसी एक काल–निर्णय पर वे नहीं पहुँच पाये हैं। कतिपय विद्वान् इसका समय 6000 ई. पूर्व से 1300 ई.पूर्व का स्वीकार करते हैं। कतिपय इससे असहमत होकर अधिकाधिक 2000 ई.पू. को इसका उत्पत्तिकाल मानते हैं। ऐसा स्वीकार किया जाता है कि सिन्धु घाटी

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

के वासियों के साथ आर्यों का युद्ध हुआ था। जो पणि, दास या अरि कहलाते थे। विभिन्न परिवारों में बिखरे मन्त्रों का संग्रह ही ऋग्वेद में उपलब्ध है। ऋचाओं का संग्रह होने से ही इसे ऋग्वेद कहते हैं ।

ऋग्वेद 10 मण्डलों में विभक्त हैं, 1028 सूक्त हैं। ऋचाओं के संग्रह को सूक्त कहते हैं। एक मण्डल में एक ही ऋषि द्वारा संगृहीत मन्त्र है। कुछ मण्डल इसका अपवाद हैं। ऋषिकाओं ने भी मन्त्रों का संग्रह किया है, जिनमें लोपामुद्रा, अपाला, रोमशा, प्रमुख हैं। इसमें कुछ 10580 ऋचाएँ हैं। सभी मण्डलों में प्रथम एवं दशम बड़े हैं। इनमें छोटे वशों के ऋषिओं की रचनाएँ हैं। इन्हें बाद की रचना माना जाता है, क्योंकि इनमें दार्शनिक, लौकिक विचारों की अभिव्यक्ति हुई है । इनकी अनेक शाखाओं में से केवल शाकल शाखा ही उपलब्ध है। इसमें आर्यों की परम्परागत धार्मिक, सामाजिक एवं दार्शनिक विचारधाराओं का निरूपण हैं। देवताओं की कल्पना भी आर्यो ने की थी, जिनमें अग्नि एवं इन्द्र प्रमुख हैं। अन्य देवताओं में सविता, रुद्र, मित्र, वरूण सूर्य एवं उषा का वर्णन हैं इन सभी देवताओं का नियामक ईश्वर एक ही हैं, जिसे हिरण्यगर्भ कहते हैं। पर्वत एवं समुद्र आदि भी उसी हिरण्यगर्भ के अनुशासन का पालन करते हैं।

जिन लौकिक विषयों का यहाँ वर्णन है, वे हैं–द्यूतक्रीडा, मण्डूकों की ध्वनि, विवाह की विधि एवं दान की महिमा आदि। उषा संबंधी लालित्यपूर्ण सूक्तों को गीतिकाव्य का स्तोत्र कहा जाता है।

यहाँ पुरुष–सूक्त में सृष्टि–प्रक्रिया का, नासदीय सूक्त में सृष्टि की रहस्यात्मकता का वर्णन हैं। कुछ संवाद–सूक्त भी हैं। जैसे–पुरूरवा–उर्वशी एवं यमयमी संवाद आदि जो नाटकों का स्त्रोत माने जाते हैं। इस प्रकार ऋग्वेद प्राचीन संस्कृत एवं सभ्यता का एक अद्भुत ग्रंथ हैं।

प्रश्न – यजुर्वेद पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर – अनुष्ठान–विषयक् मंत्रों के संग्रह को यजुर्वेद कहते हैं। इसकी 101 शाखाएँ थीं। इसके दो भाग हैं कृष्ण एवं शुक्ल। कृष्णयजुर्वेद की मुख्य संहिता हैं– तैत्तरीयसंहिता, शुक्लयजुर्वेद की वाजसनेयी। दक्षिण भारत में प्रचारित कृष्णयजुर्वेद की शाखाएँ हैं– मैत्रायणी काठक एवं कपिष्ठल। वाजसनेयी संहिता में 40 अध्याय हैं। इनमें दर्शपूर्णमास, अग्निहोत्र, चातुर्मास एवं अश्वमेध आदि यज्ञों का वर्णन है। इसके जाने माने 16वें अध्याय में रूद्र के विविध रूप को नमस्कार किया गया है। 34वें में शिवसंकल्प की प्रार्थना है। 35वें में पितरों की प्रार्थना हैं। 40वें अध्याय को ईशावास्योपनिषद् कहा जाता है, इसमें ईश्वर को संसार का नियामक कहा गया है ।

यजुर्वेद में गद्य एवं पद्य दोनों रूप हैं । पद्यात्मक मन्त्रों में राष्ट्रीय भावना को मुखरित किया गया हैं । पद्यात्मक मन्त्र कर्मकाण्ड से सर्वाधिक उपयोगी हैं । अतः अधिकतर भाष्यकारों ने यजुर्वेद पर भाष्य किया है।

प्रश्न – सामवेद एवं अथर्ववेद पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर – (क) सामवेद में मंत्रों के द्वारा उद्‌गाता देवताओं का आवाह्न करता हैं। अतः सामवेद का गान किया जाता है, पाठ नहीं। इसकी 1000 शाखाओं में से केवल तीन–चार उपलब्ध हैं। कौथुम शाखा ही सर्वाधिक लोकप्रिय है। सामवेद छन्दोबद्ध है। इसमें केवल 75 मंत्रों को छोड़ सभी मन्त्र ऋग्वेद से लिये गए हैं। इसके दो भाग है, 1. पूर्वार्चिक तथा 2. उत्तरार्चिक। अग्नि, इन्द्र, पवमान

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

तथा आरण्य के रूप में मंत्रों का विभाजन किया गया है । उत्तरार्चिक में दशरात्र संवत्सर एवं एकाह के विषय है। उसमे ग्रामगेय की संख्या अधिक है। अरण्यगान में संकटपूर्ण एवं वर्जित रागों का संकलन है। उहगान तथा उह्यगान में यज्ञ कार्यों में सामगान की क्रमबद्धता का वर्णन है। सामवेद में संगीत की प्रधानता है। इसके रागों का विकास धार्मिक एवं सांस्कृतिक है।

(ख) अथर्ववेद – इसमें यज्ञ से भिन्न विषयों का संकलन है। इसको अथर्वाड्ि.गरस् वेद कहा जाता था। इसके रचयिता दो हैं– अथर्वा एवं अंड्ि.गरा। अथर्वा ने शान्तिपरक जनकल्याणकारी मन्त्रों का संग्रह किया है, तो अड्ि.गरा ने हानिकारक मन्त्रों का। इसमें 20 काण्ड हैं, जिनमें 731 सूक्त एवं 5849 मन्त्र हैं। 1200 मन्त्र ऋग्वेद के ही हैं। प्रारम्भिक काण्डों का संकलन क्रमशः विस्तारपरक है। उत्तरोत्तर काण्डों का आकार लघु होता गया है। इसमें लौकिक विषयों को प्रधानता दी गई है। इसमें मारण, मोहन एवं उच्चाटन, शत्रुनाश, इष्टवस्तु का लाभ, पितृपूजा आदि का विवेचन किया गया है, ब्रह्मचर्य के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

इसमें ब्रह्म, तपस् एवं असत् आदि दार्शनिक विचारों का भी वर्णन है। लोक–प्रचलित विश्वासों का प्रतिपादक होने के नाते इसका स्वतंत्र अस्तित्व है।

प्रश्न– ब्राह्मण–ग्रन्थों का संक्षिप्त परिचय दीजिये ।

उत्तर – भारतीय परम्परानुसार ब्राह्मण भी वेद ही हैं, परन्तु आधुनिक विद्वान, ब्राह्मणों को वेद नहीं कहते । वेदों की कर्मकाण्डपरक व्याख्या को ब्राह्मण कहते हैं। इनमें धार्मिक, सामाजिक तथा दार्शनिक विषयों का समावेश है। सृष्टि से सम्बद्ध पौराणिक कथाएँ भी इनमें उपलब्ध होती हैं। मत्स्य द्वारा सृष्टि की रक्षा (मत्स्योपाख्यान) शुनःशेप की बलि से रक्षा (शुनःशेपाख्यान) आदि यहाँ वर्णित है। प्रत्येक वेद का पृथक ब्राह्मण है। ऋग्वेद से सम्बद्ध ब्राह्मण हैं– ऐतरेय एवं कौषीतकि। इनमें सोमयाग, राजसूय, राज्याभिषेक का विवरण है। ऐतरेय के लेखक हैं– ऐतरेय महीदास और कौषीतकि के लेखक हैं– कहोड़ कौषीतकि। दोनों ब्राह्मण गद्य में है।

शुक्ल यजुर्वेद की दोनों शाखाओं का ब्राह्मण शतपथ ब्राह्मण है, परन्तु दोनों का स्वरूप पृथक–पृथक है। माध्यन्दिन शतपथ में 15 काण्ड एवं 100 अध्याय हैं। काण्वशतपथ में 17 काण्ड तथा 104 अध्याय हैं। इनमें दर्शपूर्णमास, पितृयज्ञ, उपनयन, स्वाध्याय आदि का वर्णन है। याज्ञवल्क्य सबसे प्रामाणिक ऋषि हैं, जिन्होंने सूर्योपासना से शुक्लयजुर्वेद की प्राप्ति की थी। कृष्णयजुर्वेद का ब्राह्मण तैत्तिरीय ब्राह्मण है। इसमें तीन काण्ड हैं, जिनमें अग्न्याधान, गवानयन तथा सौत्रामणि यज्ञों का वर्णन है।

सामवेद के कई ब्राह्मण हैं – ताण्ड्य, षडिवंश, जैमिनीय आदि! ताण्ड्य में लोक–कथाओं का वर्णन है। षड्विंश में चमत्कार एवं शकुनों का, जैमिनीय में वैज्ञानिक सामग्री का वर्णन है। इन ब्राह्मणों से भिन्न दैवत, आर्षेय, सामविधान, वंश छान्दोग्य भी सामवेद के ब्राह्मण हैं।

अथर्ववेद से सम्बद्ध गोपथ ब्राह्मण में सृष्टि, ब्रह्मा, ब्रह्मचर्य, गायत्री एवं (ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव) का वर्णन हैं।

प्रश्न– आरण्यकों पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर – अरण्य (वन) में रचे जाने से आरण्यक कहलाते हैं। इनमें कर्मकाण्ड से भिन्न

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

अध्यात्मवाद की चर्चा की गई। इन्हीं से मीमांसा, धर्मशास्त्र तथा कर्मवाद का विकास हुआ। आजकल सात आरण्यक उपलब्ध हैं। ऋग्वेद के आरण्यक हैं–ऐतरेय एवं कौषीतकि, यजुर्वेद के बृहदारण्यक, तैत्तरीयारण्यक, मैत्रायणी आरण्यक, सामवेद के जैमिनीय एवं छान्दोग्य है। सभी आरण्यकों में अपनी शाखाओं से सम्बद्ध वर्णनों के साथ–साथ संन्यास धर्म के महत्व पर प्रकाश डाला गया है।

प्रश्न – उपनिषदों का परिचय देकर उनकी विषय–वस्तु पर प्रकाश डालिए ।

उत्तर – उपनिषद् दार्शनिक महत्व के कारण भारत एवं विदेशों में सर्वाधिक लोकप्रिय हैं। दाराशिकोह ने इनसे प्रभावित होकर फारसी में इनका अनुवाद किया था। फ्रांसीसी दार्शनिक 'शापेनहावेर' ने इनका महत्व बताते हुए कहा है–''उपनिषद् मेरे जीवन एवं मृत्यु में सान्त्वनादायक है।'' उपनिषद् मूल रूप में 12–13 थे, समयानुसार इनकी संख्या 100 तक पहुँच गई। वैदिक शास्त्रों से सम्बद्ध उपनिषद् इस प्रकार है :–

ऋग्वेद – ऐतरेय, कौषीतकि।

कृष्णयजुर्वेद – कठ, श्वेताश्वतर, मैत्रायणी तथा तैत्तरीय।

शुक्लयजुर्वेद – ईश, बृहदारण्यक।

सामवेद – छान्दोग्य, केन।

अर्थर्ववेद – प्रश्न, मुण्डक तथा माण्डूक्य।

उपनिषदों में गुरू–शिष्य संवादों के द्वारा प्राणादि की प्रतिष्ठा, सृष्टि की उत्पत्ति, विद्या एवं अविद्या का अंतर, जगत् एवं आत्मा तथा ब्रह्म–तत्व आदि विषयों को रोचक शैली में समझाया गया है। इनमें दृष्टान्तों का सहारा लिया गया है। इनमें गद्य, पद दोनों का प्रयोग है। बृहदारण्यक तथा छान्दोग्य का आकार बड़ा है। माण्डूक्योपनिषद् में केवल 12 तथा ईश में केवल 17 मंत्र हैं। कठोपनिषद् में यम एवं नचिकेता के संवाद द्वारा आत्मा के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। सभी उपनिषदों में ब्रह्मज्ञान का महत्व बताते हुए जीव–जगत् एवं ब्रह्म में अभेद्य स्थापित किया गया है। उपनिष्दों में विदुषी मैत्रेयी तथा गार्गी के ज्ञान से स्त्रियों का भी पता चलता है। उपनिषदों के आधार पर जहाँ बादरायण व्यास ने ब्रह्मसूत्र की रचना की, वहॉ महाभारत के भीष्मपर्व में गीता के रूप में कर्म, ज्ञान का प्रतिपादन किया गया। सत्, चित् एवं आनन्द की सरल व्याख्या उपनिषदों का परम विषय रहा है। शंकराचार्य ने मुख्य 11 उपनिषदों पर भाष्य रचकर अद्वैतवाद की स्थापना की। वस्तुतः उपनिषद् दर्शन–शास्त्र के अमूल्य रत्न हैं।

प्रश्न – रामायण पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर – आदि कवि 'वाल्मीकि', 'रामायण' के रचयिता हैं। अनुश्रुति के अनुसार, वाल्मीकि ने व्याध द्वारा पुल्लिंग क्रौञ्च पक्षी को मारे जाते देखा, तो सहसा उनके मुख से यह श्लोक निस्सृत हुआ –

मा निषाद! प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौञ्चामिथुनादेकमवधीः काममोहितम्।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उन्होंने तभी विधाता की प्रेरणा से रामायण (रामचरित) लिखने का निर्णय ले लिया। रामायण में प्रकृति की अलौकिक छटा एवं कल्पना–शक्ति की उर्वरता के दर्शन होते हैं ।

रामायण में कुल सात काण्ड हैं–बालकाण्ड, अध्योध्याकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, युद्धकाण्ड एवं उत्तरकाण्ड। प्रत्येक काण्ड में सर्गों द्वारा कथानक की समृद्धि की गई है। इसमें 24 हजार श्लोक हैं। इस महाकाव्य की लोकप्रियता विश्व–साहित्य में बेजोड़ हैं। अनुसन्धाताओं के अनुसार मूल रामायण में पाँच काण्ड ही थे, प्रथम एवं उत्तरकाण्ड बाद में प्रक्षिप्त अंशों के रूप में जोड़े गए हैं। पाठ–भेद, श्लोक संख्या–भेद, सर्ग–भेद के आधार पर रामायण के तीन संस्करण आज उपलब्ध हैं :–

1. उत्तर एवं दक्षिण भारत में प्रचलित लोकप्रिय संस्करण, 2. बंगला संस्करण तथा, 3. उत्तर–पश्चिम–भारत संस्करण। बडौदा से तीन संस्करणों की समीक्षा द्वारा रामायण का शुद्ध संस्करण तैयार किया है।

रामायण के रचनाकार के संबंध में भी अनेक मतों की समीक्षा के पश्चात् यही निष्कर्ष निकाला जाता है कि महाभारत में रामोपाख्यान का वर्णन होने से रामायण की रचना महाभारत के पूर्व हो चुकी थी। जैन तथा बौद्ध ग्रंथों में भी रामकथा के शुद्ध संकेत उपलब्ध हैं। अतः रामायण की रचना पाँचवी शताब्दी ई.पू. तक हो चुकी थी। वाल्मीकि ने अपनी रचना में राजा, प्रजा, पिता, माता, पुत्र सभी के आदर्श चरित्रों को उपस्थित किया है। अपने चरितनायक राम की सत्यवादिता, दृढसंकल्प, विद्वत्ता, शक्तिशालिता एवं धीरता आदि गुणों का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। सीता का पातिव्रत्य, राम का भ्रातृप्रेम, भरत का आदर्श भ्रातृत्व सभी यहाँ सशक्त रूप से चित्रित हैं।

वाल्मीकि का प्रकृति वर्णन एवं उपमा हृदयग्राही है। इस काव्य के आधार पर ही दण्डी आदि ने सर्वप्रथम महाकाब्य का लक्षण निर्धारित किया। कालिदास, भारवि एवं माघ ने महाकाव्यों की रचना की। भास, भवभूति आदि ने नाटकों की रचना की। संस्कृत भाषा के ही नहीं आधुनिक भारतीय भाषाओं के कवियों ने भी वाल्मीकि से रामकथा लिखने की प्रेरणा प्राप्त की ।

प्रश्न – महाभारत का संक्षिप्त परिचय दीजिए ।

उत्तर – संस्कृत वाड्.मय में महाभारत के समान अन्य विशालकाय ग्रन्थ उपलब्ध नहीं हैं। एक लाख श्लोक होने से इसे शतसाहस्त्री संहिता भी कहते हैं। कौरवों एवं पाण्डवों की गाथा वाले इस ग्रन्थ में युग–गुगान्तर की समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया गया है। इसे धर्मग्रंथ तथा पंचमवेद भी कहते हैं। विश्व–समादृत भगवद्गीता भी महाभारत का ही अंश है। इसके विषय में कहा जाता है–धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष के विषय में जो कुछ यहाँ उपलब्ध है वही अन्यत्र हैं, जो यहाँ नहीं है, वह अन्यत्र भी नहीं हैं।

महाभारत के रचयिता महर्षि वेद व्यास हैं। इन्हें कृष्ण द्वैपायन भी कहते हैं। महर्षि व्यास ने प्राचीन काल की गाथाओं का संग्रह कर इसकी रचना की थी । यह तीन चरणों में विकसित होकर वर्तमान रूप को प्राप्त हुआ है। (1) सर्वप्रथम 'जय' नामक संस्करण में 8800 श्लोक थे, जिसमें पाण्डवों की विजय का वर्णन किया है । (2) 'भारत' नामक दूसरे चरण में उपाख्यानों के न होने से 24000 श्लोक थे। इसमें युद्ध–वर्णन की ही प्रधानता थी । (3) शनैः–शनैः इसमें पूर्ववर्ती इतिहास अथवा

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

उपाख्यानों के सम्मिश्रण से इसे एक लाख श्लोकों का विश्वकोष बना दिया गया, जिसका नाम 'महाभारत' पड़ा।

महाभारत के उत्तर एवं दक्षिण के दो पाठ उपलब्ध हैं। इनमें श्लोक संख्या, अध्यायो के क्रम तथा आख्यानों के क्रम में पर्याप्त अंतर है। महाभारत का संशोधित संस्करण 'पूना' से प्रकाशित हुआ है । महाभारत में अठारह पर्व हैं–आदि, सभा, वन, विराट, आदि। इसमें कौरवों तथा पाण्डवों की उत्पत्ति से उनके स्वर्ग जाने तक का वर्णन है। बीच–बीच में पाण्डवों का विराट के यहाँ रहना, द्यूतक्रीडा, द्रौपदी का अपमान आदि रोचक प्रसंगों को समाविष्ट किया गया है ।

महाभारत का रचनाकाल ईस्वी सन् से 400 वर्ष पूर्व स्वीकार किया जाता है। ज्योतिष की गणना के आधार पर कलियुग के आरंभ में 3102 ई.पू. में इसकी रचना हुई। आश्वलायन गृह्यसूत्र (400 ई.पू.) में सर्वप्रथम इसका उल्लेख हुआ है । सांस्कृतिक दृष्टि से इस ग्रन्थ का अलौकिक महत्व हैं । बाण की दृष्टि से व्यास कव्य के निर्माता थे। मानव के धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष की प्रक्रिया महाभारत में सर्वाधिक सुन्दर प्रकार से बताई गई है।

महाभारत का कथानक इस प्रकार है–कौरव–पाण्डव चचेरे भाई थे। पाण्डव कौरवों से अपना आधा राज्य प्राप्त कर राजसूय यज्ञ करते हैं। कौरव छल से पाण्डवों को जुए में परास्त कर, शर्त के अनुसार उन्हें 13 वर्ष के लिए वन भेज देते हैं । अंतिम वर्ष अज्ञातवास का था। पाण्डव अपनी शर्त पूरी कर लौटकर आधा राज्य माँगते हैं, परंतु कौरव–पाण्डवों को राज्य में हिस्सा देने से इन्कार कर दिया। अतः महाभारत का युद्ध प्रारंभ होता है। अठारह दिनों के युद्ध में कौरव नष्ट हो जाते हैं। युद्ध के प्रारंभ में अर्जुन अपने सगे–संबंधियों को सामने देख जब युद्ध नहीं करना चाहता, तो भगवान श्री कृष्ण कर्म की प्रेरणास्त्रोत जिस गीता का अद्भुत उपदेश उसे प्रदान करते है, वह विश्व में बेजोड है, अकल्पनीय है।

इस प्रकार महाभारत स्वयं में सम्पूर्ण साहित्य का रूप लिए हुए, सांस्कृतिक दृष्टि से एक अद्वितीय विश्वकोष हैं ।

प्रश्न – पुराणों का का संक्षिप्त परिचय देकर उनके महत्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर – पुराणों में प्राचीन गाथाओं का वर्णन पाया जाता है । तीसरी शताब्दी ई. पू. में पुराणों का जन्म प्रारंभ हो चुका था। इनका वर्ण्य विषय अत्यंत विस्तृत है। इनमें सभी विषयों का अतिशयोक्तिपूर्ण अतिरंजित वर्णन है। आलंकारिक होते हुए भी उनकी भाषा सरल है। कहीं–कहीं इनमें महाभारत के समय के गद्य का प्रयोग हुआ है। इनमें सबसे अधिक अनुष्टुप् छन्द का प्रयोग हुआ है। पुराण की परिभाषा इस प्रकार है :–

सर्गश्चप्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणिच।
वंशानुचरितं पुराणं पञ्च लक्षणम् ।।

अर्थात् सृष्टि, प्रलय के पश्चात् पुनः सृष्टि, राजाओं एवं ऋषियों के वंशों, मन्वन्तर (एक युग की सृष्टि का वर्णन) तथा प्रतापी राजाओं के वंशों का वर्णन पुराणों में प्राप्त हुआ है ।

परंतु सभी पुराणों में वर्ण्यविषय की समता का अभाव है । उपर्युक्त विषयों से भिन्न वर्णाश्रम

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

Downloaded from https:// www.studiestoday.com

धर्म, कर्मकाण्ड, व्रत, तीर्थ, नदी आदि के माहात्म्य का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन भी इनमें उपलब्ध होता है । पुराणों की शैली पर जैन एवं बौद्धों ने भी अपने ग्रन्थों की रचना की है । व्यास ही सभी पुराणों के रचयिता माने जाते हैं, परंतु सूर्यवंशी राजाओं के गुरु वशिष्ठ के समान इन पुराणों की रचना पृथक्–पृथक् युगों में हुई हैं । पुराण अठारह तथा उप पुराण भी अठारह हैं। पुराणों की तीन कोटियाँ– (1) ब्रह्मा से सम्बन्धित, (2) विष्णु से सम्बन्धित, तथा (3) शिव से संबंधित ।

1. **ब्रह्मा से सम्बद्ध** – ब्रह्म, ब्रह्माण्ड, ब्रह्मवैवर्त, मार्कण्डेय, भविष्य एवं वामन।
2. **विष्णु से सम्बद्ध** – विष्णु, भागवत, नारद, गरूड एवं वराह।
3. **शिव से सम्बद्ध** – शिव, लिंग, स्कन्द, अग्नि, मत्स्य एवं कूर्म।

उपपुराणों का नामकरण भिन्न–भिन्न हैं । कुछ प्रसिद्ध उप पुराण हैं–नृसिंह, नारद, कालिका, साम्ब, पराशर एवं सूर्य ।

सभी पुराण आगामी लेखकों के लिये प्रेरणास्त्रोत बने हैं । प्राचीन भारत के राजनैतिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक ज्ञान के लिए पुराणों का अध्ययन अनिवार्य है । विदेशी विद्वान् पार्जिटर ने पुराणों के गहन अनुसन्धान से वंशावलियों की खोज की है। इन पुराणों ने ही भारत के जन–जन में धार्मिक विश्वासों को उत्पन्न किया है। स्वर्ग एवं नरक की परिकल्पना से मानव मात्र को पुराण–साहित्य ने ही सदाचार एवं शिष्टचार की शिक्षा दी है। एल.टी. सी. (अवकाश–यात्रा की छूट) के समान पुराणों ने तीर्थयात्रा–भ्रमण के बहाने राष्ट्रीय एकता को बनाने में सर्वाधिक सहयोग दिया है । पुराणों के रचयिताओं ने ज्ञान–विज्ञान की सम्पूर्णसामग्री का चित्रण कर, पुराणों के पठन एवं श्रवण के महत्व को बताकर सभी सम्प्रदायों को एकत्रित रहने की औपचारिक शिक्षा प्रदान की है । इन पुराणों का वस्तुतः ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक महत्व है ।

Downloaded from https:// www.studiestoday.com